इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

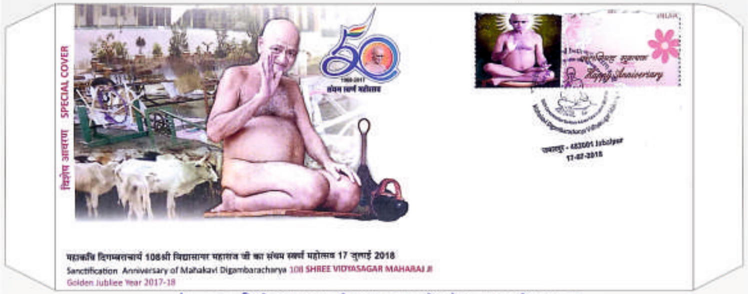

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		फरवरी 2024	
16	शुक्रवार	सप्तमी	भरणी
17	शनिवार	अष्टमी	कृत्तिका
18	रविवार	नवमी	रोहिणी
19	सोमवार	दशमी	मृगशिरा
20	मंगलवार	एकादशी	आर्द्रा
21	बुधवार	द्वादशी	पुनर्वसु
22	गुरुवार	त्रयोदशी	पुष्य
23	शुक्रवार	चतुर्दशी	आश्लेषा
24	शनिवार	पूर्णिमा	मघा
25	रविवार	प्रतिपदा	पूर्वाफाल्गुनी
26	सोमवार	द्वितीया	उत्तराफाल्गुनी
27	मंगलवार	तृतीया	हस्त दिन/रात
28	बुधवार	चतुर्थी	हस्त
29	गुरुवार	पंचमी	चित्रा
		मार्च 2024	
1	शुक्रवार	षष्ठी	स्वाती
2	शनिवार	षष्ठी	विशाखा
3	रविवार	सप्तमी	अनुराधा
4	सोमवार	अष्टमी	ज्येष्ठा
5	मंगलवार	नवमी/दशमी	मूल
6	बुधवार	एकादशी	पूर्वाषाढ
7	गुरुवार	द्वादशी	उत्तराषाढ
8	शुक्रवार	त्रयोदशी	श्रवण
9	शनिवार	चतुर्दशी	धनिष्ठा शतभिषा
10	रविवार	अमावस	पूर्वाभाद्रपद
11	सोमवार	प्रतिपदा/द्वितीय	उत्तराभाद्रपद
12	मंगलवार	तृतीया	रेवती
13	बुधवार	चतुर्थी	अश्विनी
14	गुरुवार	पंचमी	भरणी
15	शुक्रवार	षष्ठी	कृत्तिका

तीर्थंकर कल्याणक

18 फरवरी: भगवान अजितनाथ जी तप कल्याणक
19 फरवरी: भगवान अजितनाथ जी जन्म कल्याणक
21 फरवरी: भगवान अभिनंदननाथ जी जन्म तप कल्याणक
22 फरवरी: भगवान धर्मनाथ जी जन्म तप कल्याणक
28 फरवरी: भगवान पद्मप्रभ जी मोक्ष कल्याणक
01 मार्च: भगवान सुपार्श्वनाथ जी ज्ञान कल्याणक
03 मार्च: भगवान सुपार्श्वनाथ जी मोक्ष कल्याणक
03 मार्च: भगवान चन्द्रप्रभ जी ज्ञान मोक्ष कल्याणक
05 मार्च: भगवान पुष्पदन्त गर्भ कल्याणक
06 मार्च: भगवान आदिनाथ ज्ञान कल्याणक
06 मार्च: भगवान श्रेयांशनाथ जी जन्म तप कल्याणक
07 मार्च: भगवान मुनि सुव्रतनाथ मोक्ष कल्याणक
09 मार्च: भगवान वासुपूज्य जन्म तप कल्याणक
12 मार्च: भगवान अरनाथ जी गर्भ कल्याणक
14 मार्च: भगवान मल्लिनाथ मोक्ष कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

18 फरवरी: पुष्पांजलि व्रत पूर्ण
18 फरवरी: रोहिणी व्रत
22 फरवरी: रत्नत्रय व्रत प्रारंभ
23 फरवरी: दशलक्षण व्रत पूर्ण
24 फरवरी: रत्नत्रय व्रत पूण्र
25 फरवरी: षोडशकारण व्रत पूर्ण

सर्वार्थ सिद्धि

17 फरवरी : 08/46 बजे से 30/57 बजे तक ।
19 फरवरी : 06/56 बजे से 10/33 बजे तक ।
22 फरवरी : 06/54 बजे से 16/43 बजे तक ।
25 फरवरी : 25/24 बजे से 30/51 बजे तक ।
08 मार्च : 06/31 बजे से 10/41 बजे तक ।
10 मार्च : 25/55 बजे से 30/28 बजे तक ।
12 मार्च : 20/29 बजे से 30/26 बजे तक ।

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः फरवरी-19,22,26,29 मार्च-3,7,11
मशीनरी प्रारंभ :फरवरी-21,22,29 मार्च-4
वाहन खरीदनेः फरवरी-19,21,22 मार्च-1
विवाह मुहूर्तः फरवरी-18 मार्च-4,6

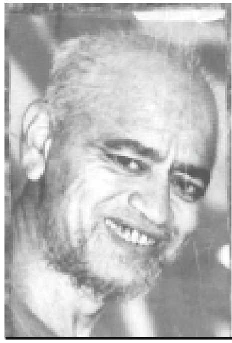

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 298 • फरवरी 2024

• वीर नि.संवत 2550-51 • विक्रम सं. 2080 • शक सं. 1945

लेख

• जैन तीर्थ अयोध्या 08
• भूली बिसरी यादें और नवागढ़ 10
• हमारे संग्रह के कुछ दिगम्बर प्रतिमा-लेख 13
• भारतवर्ष के पतन का मुख्य कारण 18
• जैन वाङ्मय और आधुनिक विज्ञान में परमाणु बंध प्रक्रिया 25
• क्या निमित्त सर्वथा अकिंचित्कर है ? 41
• शांति संदेश 52
• **वरिष्ठ नागरिकः** कुछ समय के लिये बच्चा बन जाये 57
• मुझे नींद न आये, अनिद्रा रोग कारण व नियंत्रण उपाय 59

बाल कहानी

• अंधविश्वास पर अमोल की बली 62

कविता

• खादी का इतिहास पुराना 12
• शिरपुर के श्री पार्श्वनाथ 17
• मुमुक्षु कौन 23
• चाँदनी की ओढ़नी में 24
• जिन शारदे भव तारणी 56
• मुनाफा 58
• बिंदास 60

कहानी

• श्रद्धा का संकल्प 47

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 12
चलो देखें यात्रा : 24 • आगम दर्शन :31 • माथा पच्ची : 32 • पुराण प्रेरणा : 33
• कैरियर गाइड : 34 • दुनिया भर की बातें : 35 • इसे भी जानियेः 39
•दिशा बोध : 40 • हमारे गौरव : 56 • वरिष्ठ नागरिक : 57 • हास्य तरंग-पाककला : 61
• बाल संस्कार डेस्क : 62 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं

: वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–9542505311
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर –9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढ़ूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ,इन्दौर (म.प्र.)

✲ आंतरिक सज्जा ✲
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: **2100/-**	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: **5001/-**	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: **11000/-**	(सदैव)
-परम संरक्षक	: **15001/-**	(सदैव)

अपने शहर के

• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)

• भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)

•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के दिसम्बर अंक में सुजाता की जीत कहानी को पढ़ा और मन कहने लगा कि एक शराबी बाप को सुजाता ही भुगतने को तैयार रही। एक लड़की द्वारा 35 किमी तक रिक्शा चलाकर अपने पिता को अस्पताल तक ले जाना बहुत बड़े साहस की बात है इस सुखान्त कहानी ने अपने मर्म स्पर्शता गुण को सिद्ध करने में सफल हुई। कहानी ने यह भी बताने का प्रयास किया है कि व्यसन से लगे पिता ने अपनी बेटी के साहस की कितनी परीक्षा ली परन्तु सुजाता ने अपनी हिम्मत नहीं हारी उसका तन हार गया। तन से हारने पर कभी थकान नहीं आती है। बस व्यक्ति को मन से नहीं हारना चाहिये। कहानी की भाषा शैली सरल सुबोध और संवेदनशील है।

श्रीमती माधुरी जैन, सिरोंज

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर में प्राचीन लेखों की श्रृंखला को देखकर ऐसा लगता है कि हमारे पूर्वज विद्वानों के शोधपूर्ण लेख आज प्रासंगिक हैं तथा हमारी वर्तमान पीढ़ी को श्रेष्ठ मार्गदर्शन देने में सक्षम हैं। हमारे 19वीं सदी के विद्वानों की विद्वत्ता और दूर दृष्टि पर हम गर्व तो करते ही हैं। साथ ही उनकी सामाजिक चिन्तन की सराहना करने से मन चूकता नहीं है। संस्कार सागर ने जिन स्रोतों से इन लेखों को प्राप्त करके पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया हैं यदि उन स्रोतों का उल्लेख कर दिया जाता है तो बहुत ही अच्छा होता तथा लेखों के संदर्भ की स्पष्टता करना भी आवश्यक है। लोकप्रिय पत्रिका का प्रयास सदैव प्रशंसनीय है।

अनीता जैन, अहमदाबाद

• सम्पादक महोदय, म.प्र. में मुख्यमंत्री हेतु मोहन यादव का नाम आने से सभी राजनीति के पंडित चौंक गये सभी चैनल एंकर आश्चर्य में पड़ गये जिनके नाम आगे चल रहे थे वे सब अदृश्य हो गये एक ही बात चल पड़ी कि भाजपा के कार्यकर्त्ता का उत्थान कभी भी हो सकता है भाजपा में कार्यकत्ताओं को भी बड़ा अवसर मिल सकता है। जबकि परिवारवादी दल में यह अवसर संभव नहीं है। पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह ने चुनाव में अपूर्वश्रम किया परंतु अब उनको विश्राम करने का कहना भाग्य चक्र के सिवाय और कुछ नहीं है राजनैतिक गलियारों में चर्चा है कि उन्हें भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया जा सकता है यह सब और कुछ नहीं कर्मो का खेल है।

संजय जैन, इंदौर

भक्ति तरंग
आत्म रुप

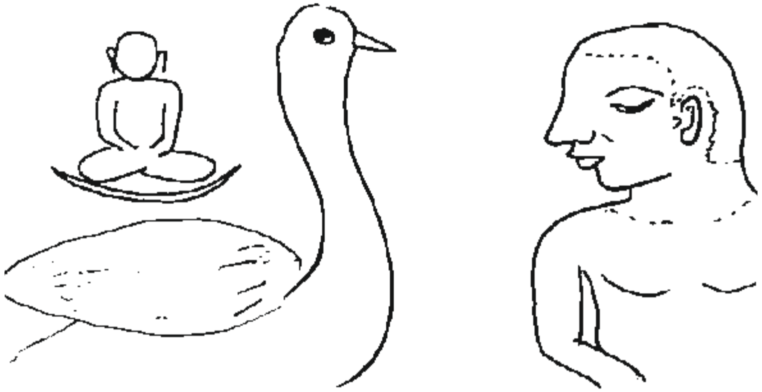

सन्त निरन्तर चिन्तत ऐसे, आतमरुप अबाधित ज्ञानी ।। टेक ।।

रोगादिक तो देहाश्रित है, इनतें होत न मेरी हानी ।
दहन दहत ज्यों दहन न तदगत, गगन दहन ताकी विधि ठानी ।।2।।

वरनादिक विकार पुद्गल के, इनमें नहिं चैतन्य निशानी ।
यद्यपि एकक्षेत्र-अवगाही, तद्यपि लक्षण भिन्न पिछानी ।।3।।

मैं सर्वांगपूर्ण ज्ञायक रस, लवण खिल्लवत लीला ठानी ।
मिलौ निराकुल स्वाद न यावत, तावत परपरनति हिम मानी ।।4।।

भागचन्द्र निरद्वन्द निरामय, मूरति निश्चय सिद्ध समानी ।
नित अकलंक अवंक शंक बिन, निर्मल पंक बिना जिमि पानी ।।5।।

हे साधो ! आत्मा का स्वरुप आवरण रहित, बाधा रहित-अबाधित है, ज्ञानमय है, संतजन सदैव आत्मा के इसी स्वरुप का चिन्तन करते हैं , ध्यान करते हैं, मनन करते हैं।

संतजन चिन्तन करते हैं कि रोग आदि तो इस देह के, शरीर के आश्रित हैं अर्थात् रोग का आधार तो यह शरीर है रोग आदि शरीर के ही होते हैं , इन रोग आदि से मेरे शुद्ध रुप की। जीव स्वरुप की हानि क्षति नहीं होती। जिस प्रकार आग की ऊँची-ऊँची, गगनचुम्बी लपटें उठती हैं, सारे वातावरण को दग्ध व तप्त करने की क्रिया करते हुये भी वे आकाश को नहीं जलाती उसी भाँति आत्मध्यान की अग्नि सभी विजातीय द्रव्य-पाप-पुण्य आदि विकारी भावों को नष्ट कर देती है पर अपने आत्म स्वरुप को नहीं जलाती, उसे नष्ट नहीं करती बल्कि उसे (आत्म स्वरुप को) निखारती है। कहने का तात्पर्य है कि आत्मा अविनाशी है, उसका (आत्म स्वरुप का) चिन्तन का, कर्मों का क्षय करता है, उन्हें जलाता है।

संस्कार प्रवाह

राष्ट्र सर्वोपरि

वर्तमान में भारत देश लोकसभा चुनाव के दौर में गुजरने के लिये तैयार है। लोकसभा का चुनाव हमारे लिये एक पड़ाव है, इस पड़ाव को पार करने के बाद हमारे अंदर राष्ट्रीयता की भावना अवश्य पैदा होगी। चुनाव के समय में दो (एन.डी.ए. और आई.एन.डी. आई. ए.) गठबंधन आमने सामने हैं । अब हमें देखना ये है कि हम जिसके लिये अपना मतदान करेंगे, वह मतदान हमारा किस प्रकार से होना चाहिये क्योंकि मतदान जब हम करते हैं तो मतदान करते समय स्थानीय मुद्दा अवश्य सामने आता है लेकिन स्थानीय मुद्दे से बड़ा राष्ट्रीय मुद्दा होता है। हमें विचार विमर्श ये करना है कि अगर मुफ्तखोरी हमारे लिये अगर कोई बता रहा है, मुफ्तखोरी से हमारा राष्ट्र प्रबल नहीं बनेगा। आतंकवाद, भ्रष्टाचार से मुक्त होने के बाद ही हमारा राष्ट्र उन्नतिशील बनेगा पर यदि राष्ट्र की उन्नति हमें करना है तो हमें सबसे पहले हमें यह सोचना होगा कि हमारी सरहदें सुरक्षित हैं या नहीं। जिस पार्टी में जिस संगठन में, जिस गठबंधन में घुसपैठ रोकने की अंदर से क्षमता हो, चीन और पाकिस्तान की सीमा से घुसपैठ रोकने का जिसके अंदर जज्बा हो उसके लिये हमें मतदान करना चाहिये।

नगर पालिका, स्थानीय चुनाव या विधानसभा का चुनाव एक अलग मुद्दा होता है किन्तु हमारे लिये जाति, पंथ सम्प्रदाय से ऊँचा हमारा राष्ट्र होना चाहिये, जब हम अपने राष्ट्र की ऊंचाईयों को देखना चाहते हैं, राष्ट्र का विकास और समृद्धि को देखना चाहते हैं तो उस समय हमें धर्म, जाति और पंथ की बात को भूल जाना चाहिये । हमें यह बात तय कर लेना चाहिये कि हमारा भारत देश गौरवशाली कैसे बनें। अगर हमारे भारत देश को गौरवशाली बनाना है तो हमें सबसे पहले उस गठबंधन को चुनना होगा जिस गठबंधन में यह बात हो कि हमारे राष्ट्र का विकास सर्वोपरि है। सबको हमें एक साथ अवसर दें, जब हम सबके लिये अवसर देगें तो लोकतंत्र हमारा मजबूत होगा। तुष्टिकरण की नीति अपनाने वालों के लिये हमें दूर से छोड़ देना चाहिये। क्योंकि तुष्टिकरण से हमारा भारत देश मजबूत नहीं बन सकता है। भारतीय सम्मान और गौरव के लिये हमारे लिये आवश्यक है कि हम यह भी देखें कि हमारे देश में सर्वाधिक बातें करने वाले लोग झूठे आश्वासन देने वाले लोगों से सावधान रह करके अपने देश की उन्नति के लिये सदैव तत्पर रहें ।

साधुगण भी छोटी सोच से ऊपर उठें, कुछ जैन साधुओं ने एक दल विशेष के लिये या अपनी छोटी भावना को ले करके आगे बढ़ाया है उनसे मेरा यही अनुरोध है कि संत-साधु राष्ट्र के विचार को सर्वोपरि रखें और राष्ट्र के लिये मजबूत बनाने के लिये कोशिश करें ऐसे दल या गठबंधन के लिये ही हम अपना मतदान करें जो राष्ट्र के लिये मजबूत करें , मजबूत हाथों में दें क्यांकि राजा हमारा कमजोर होगा तो हमारी सरकार के कमजोर होने से देश भी कमजोर हो जायेगा इसलिये कहा गया है देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्यराज्ञा करोतु शान्तिम् भगवान् जिनेन्द्र। क्षेमं सर्व प्रजानां करोतु बलवान धार्मिकोभूमि पालः। राजा धार्मिक होना चाहिये सरकार वही जो मांस निर्यात को रोकने में सक्षम हो, जो विदेशी नीतियों में स्पष्टता रखता हो, हिंसा के स्थान पर अहिंसा को महत्व दें ऐसे राष्ट्र के सर्वोदय विकास लिये हमारा मतदान होना चाहिये।

जैन तीर्थ अयोध्या

❋ पं. सनतकुमार विनोद कुमार रजवांस, सागर ❋

तीर्थ- जिनका आश्रय लेकर भव्यजीव संसार से तिरकर मुक्ति को प्राप्त होते हैं, उसको तीर्थ कहते हैं। तीर्थ दो प्रकार के होते हैं।

1. निश्चय तीर्थ- जिनमार्ग में निर्मल उत्तम क्षमादि धर्म, निर्दोष सम्यक्त्व, निर्मल संयम, बारह प्रकार का निर्मल तप और पदार्थ का निर्मल ज्ञान ये तीर्थ हैं।[1]

धर्म का अर्थ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्‌चारित्र है, चूंकि इनसे संसार सागर को तरते हैं इसलिये तीर्थ कहा है।[2]

कितने भव्य जीव श्रुत से अथवा गणधर की सहायता से संसार से उत्तीर्ण होते हैं। इसलिये श्रुत और गणधर को तीर्थ कहते हैं।[3]

दृष्ट, श्रुत और अनुभूत ऐसे विषय सुख की अभिलाषा रूप जल के प्रवेश से जो रहित हैं, ऐसी परम समाधि रूप नौका के द्वारा जो संसार-समुद्र से पार हो जाने के कारण तथा दूसरों को पार उतारने का उपाय अर्थात् कारण होने से तीर्थंकर परम तीर्थ हैं।[4]

2. व्यवहार तीर्थ- जो निश्चय तीर्थ की प्राप्ति का कारण हैं व्यवहार तीर्थ हैं। वे तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों के स्थान एवं मुक्त जीवों के चरण कमलों से स्पृष्ट सम्मेद शिखर, ऊर्जयन्त, शत्रुन्जय, पावागिर आदि व्यवहार तीर्थ हैं।[5] तीर्थ के दो भेद हैं-1. द्रव्यतीर्थ, 2. भावतीर्थ।

1. द्रव्यतीर्थ- जिससे सन्ताप शान्त होता है, तृष्णा का नाश होता है, मल पंक की शुद्धि होती है वह द्रव्यतीर्थ है।

2. भावतीर्थ- सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्‌चारित्र से युक्त जिनदेव भावतीर्थ हैं।[6]

तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों के स्थान तीर्थ होते हैं अतः इनकी पूजा की जाती है। क्षेत्रपूजा का स्वरूप बताते हुये आचार्य वसुनन्दि जी महाराज ने कहा है कि-

जिणसम्मण-णिक्खमणे णाणुप्पत्तीए तित्थचिण्हेसु।
णिसिहीसु खेत्तपूजा पुव्वविहाणेण कायव्वा ।।452।। वसुनन्दि श्रावकाचार

अर्थात् जिन भगवान की जन्म कल्याणक भूमि, निष्क्रमण कल्याणक भूमि, केवलज्ञानोत्पत्ति स्थान, तीर्थ चिन्ह स्थान और निषीधिका अर्थात् निर्वाण भूमियों में पूजा करना क्षेत्र पूजा है।[7]

प्रत्येक उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी में तीर्थंकरों के जन्म अयोध्या में एवं मोक्ष सम्मेदशिखर में होता है अतः इन्हें शाश्वत तीर्थ कहा गया है। इस अवसर्पिणी काल में हुण्डावसर्पिणी के कारण तीर्थंकरों के जन्म और मोक्ष अन्य स्थानों पर भी हुये हैं। बोध पाहुड़ गाथा 27 की टीका करते हुये आचार्य श्रुतसागर सूरि ने अनेक तीर्थों के साथ अयोध्या को तीर्थ कहा है। अयोध्या में ऋषभनाथ, अजितनाथ, अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ, अनन्तनाथ भगवान का जन्मकल्याण स्थान और केवलज्ञान कल्याणक स्थान है।[8]

अयोध्या में जैन मंदिर- अयोध्या की रचना एक करोड़ अर्थात् एक कोडाकोड़ी सागर चौरासी लाख पूर्व वर्ष पहले भगवान ऋषभदेव के गर्भ में आने के पहले ही इन्द्र की आज्ञा से

उत्साही देवों ने स्वर्गपुरी के समान अयोध्या नगरी की रचना की।[9] इस अयोध्या नगर के बीचों बीच जिन मंदिर की रचना की। इसके बाद पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशा में जिन मंदिर की रचना की।[10]

अयोध्या की रचना एवं विस्तार- **नवयोजन विस्तारा द्वादशायामसंगता।**
द्वयधिकानि तु षड्त्रिंशत्परिक्षेपेण पूरसौ।[11]

अर्थात् अयोध्या नगरी नौ योजन चौड़ी, बारह योजन लम्बी और अड़तीस योजन परिधि से सहित थी। इसे बनाने में चतुर विद्याधर कारीगरों को सोलह दिन का समय लगा था। इस नगरी की रचना करने वाले स्वर्ग के देव और सूत्रधार इन्द्र था। नगर रचना को पूरी पृथ्वी थी अतः इसकी रचना प्रशंसनीय थी।[12]

सरयाः पर्यन्तमावेष्टय स्थिता सा सरयूर्नदी ।।69।।

अयोध्या नगर के समीपवर्ती प्रदेश को घेरकर सरयू नदी स्थित थी। जिसके सुन्दर किनारे थे और शत्रुओं द्वारा दुर्लंघ्य थी।

अयोध्या के अन्य नाम- अयोध्या नगर के अनेक सार्थक नाम हैं ।

अयोध्या- कोई भी शत्रु उससे युद्ध नहीं कर सकता था अतः इसे अयोध्या कहा है।

साकेता-स+आकेता अर्थात् घरों से सहित थी और मकान पताकाओं से सहित थे अतः साकेता कहा है।

सुकोशला- यह नगरी सुकोशल देश में स्थित है अतः इसे सुकोशला कहा है।

विनीता- यह नगरी विनीत, शिक्षित, विनयवान एवं सभ्य पुरुषों से व्याप्त है अतः इसे विनीता कहा है। इस प्रकार अयोध्या के अनेक नाम हैं।

तीर्थंकरों के गर्भ जन्म आदि कल्याणक भूमि होने से जैन धर्म का परम पावन तीर्थ है। जैनागम के अनेक ग्रन्थों में अयोध्या का विस्तृत वर्णन होता है।

सन्दर्भ- 1. बोधपाहुड़ टीका 26,92,21
2. धवला 8,3,42,92
3. भगवती आराधना, विजयोदयी टीका 302, 576, 6
4. प्रवचनसागर (तात्पर्य वृत्ति) 1,3,23
5. बोधपाहुड़ भाषा 43,130,10
6. मूलाचार-558,5600, समाधिशतक टीका 2,222,24
7. वसुनन्दि श्रावकाचार 452
8. हरिवंश पुराण सर्ग 60 श्लोक 182-205
9. आदिपुराण पर्व 12 श्लोक 182-205
10. आदिपुराण पर्व 16 श्लोक 149-150
11. पद्मपुराण भाग 3 पर्व 81 श्लोक 120
12. आदिपुराण भाग 1 पर्व 12 श्लोक 75
13. आदिपुराण भाग 1 पर्व 14 श्लोक 69
14. आदिपुराण भाग 1 पर्व 12 श्लोक 76-78

भूली बिसरी यादें और नवागढ़

❋ डॉ. शीतलचन्द्र जैन, जयपुर ❋

मनुष्य पर्याय में परिणामों की विशुद्धि बनाने में धर्मायतनों का विशेष महत्त्व होता है। इसीलिए आचार्यों ने श्रावकों को नीतिन्याय से उपार्जित धन का सदुपयोग धर्मायतन बनाने, मूर्ति बनाने, पंचकल्याणक कराने, तीर्थ वन्दना, शास्त्र लिखवाने, आदि में करके पुण्यवृद्धि करने को कहा है।

भव्य जिनालय एवं उसमे विराजमान सातिशय, मनोज्ञ एवं सौम्य जिनबिम्बों का दर्शनकर भव्य जीव अपना कल्याण करता है। आचार्य वीरसेन स्वामी ने जिनबिम्बदर्शन को निधत्ति एवं निकाचित कर्मों के क्षय का निमित्त कहा है।

भारत में जैनधर्म एवं संस्कृति की विशिष्ट पहचान है। जिसमें बुन्देलखण्ड के जिनालयों एवं तीर्थक्षेत्रों का सातिशय महत्त्व है। यहाँ सिद्ध क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, कलाक्षेत्र, पुराक्षेत्र हैं, जिनमें भव्य जीव संयम, साधना, त्याग, तपश्चरण करके अपने परिणामों की विशुद्धि बढ़ाकर काषायिक एवं हिंसक परिणामों पर नियंत्रण/शमन करके अशुभ कर्मों की निर्जरा करता है। यही कारण है बुन्देलखण्ड में ऐसा कोई गाँव नहीं हैं जहाँ मंदिर नहीं हो।

बुन्देलखण्ड का ऐसा ही अतिशय क्षेत्र है नवागढ़ जिला ललितपुर उ.प्र. जो मध्यप्रदेश की सीमा पर निर्जन एवं बीहड़ स्थल पर पहाड़ियों के मध्य स्थित है।

जब में दस-ग्यारह वर्ष की उम्र में महावीर दिगम्बर जैन विद्यालय साढ़ूमल जिला ललितपुर में अध्ययन कर रहा था। हमारी दिनचर्या गुरुजनों के निर्देशन में विधिवत् चल रही थी। प्रातः उठना, प्रार्थना करके पूजा करना, कक्षा में पढ़ाई करना, संस्कृत विषय को रटना, गुरुजनों को सुनाना, नहीं सुनाने पर दण्ड मिलना, सभी बच्चों के बीच खड़ा होना बड़ा मुश्किल होता था पर गुरुजनों के आशीर्वाद एवं वात्सल्य से हमें साहस मिलता था। वह दिन आज भी हमारी स्मृति पटल पर आज भी वैसे ही अंकित है।

एक दिन हमारे गुरुजनों ने बताया नावई में भूगर्भ से भगवान् प्रगट हुये हैं, जिनके दर्शन को सभी ग्रामों के जैनबन्धु जा रहे थे। हम सभी विद्यार्थी पैदल चलकर ही नावई दर्शन करने गये, वहाँ काफी भीड़ थी, भगवान् के शरीर से लगातार पवित्र जलनिस्रत हो रहा था। जहाँ भगवान् विराजमान थे वहाँ केवल 2-3 व्यक्ति ही जा सकते थे क्योंकि द्वार बहुत छोटा था।

हम भी उस भौंयरे में भगवान् के दर्शन करने गये और उस पवित्र जल को गन्धोदक मानकर माथे पर लगाया। जब बाहर आये तो कुछ लोग कह रहे थे कि एक व्यक्ति को स्वप्न आया है कि भगवान् अरनाथ के पास अभी भगवान् शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ आदिअनेक भगवान् हैं , जब तक वे प्रकट नहीं होते तब तक भगवान् के शरीर से इस पवित्र जल की धारा बहती रहेगी। इससे ज्ञात हुआ कि वहाँ और भी जिनालय और मूर्तियाँ हैं, खनन के साक्षी महानुभाव चर्चा कर रहे थे, मनोकामनापूर्ण अरनाथ भगवान् के प्रकट होने की खबर चारों ओर फैल गई, जिससे सरकार ने और खनन पर प्रतिबन्ध लगा दिया। प्रशासनिक अवरोध एवं अर्थाभाव में अन्य जिनालयों का खनन सम्भव नहीं हो सका। हमने सोचा और भगवान् के दर्शन करने का अवसर कब मिलेगा ?

कुछ महीनों बाद वहाँ पर कोई महोत्सव आयोजित हुआ। तब वहाँ हमने सुना कि ककरवाहा वाले आदरणीय प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचन्द्र जी 'पुष्प' के प्रयासों से जो भौंयरा

निकला था। उनके सद् प्रयास से ही उस बीहड़ जंगल में भौंयरा जिनालय का जीर्णोद्धार कार्य हो रहा है। इसमें क्षेत्रीय समाज का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। सर्वत्र ककरवाहा वाले पं. जी के नाम से प्रसिद्ध नावई को नवागढ़ बोला करते थे।

पं. जी के आमंत्रण पर पं. शीलचन्द्र जी, गुरु जी, पं. नीरज जी सतना, पं. मानिकचन्द्र जी नवागढ़ आये, वहाँ की परिस्थितियों को देखा और क्षेत्र के संरक्षण का उपाय कैसे हो समाज को एकत्रित किया। वहाँ क्षुल्लक चिदानंदजी का चातुर्मास भी हुआ, जिससे अन्य ग्रामों के लोगों का आवागमन होने लगा। एक विधान का आयोजन भी हुआ, जिससे धीरे-धीरे निर्माण कार्य शुरु हुआ।

अब मैं नावई से नवागढ़ का इतिहास पढ़ता हूँ तो अनुभव में आता है कि वास्तव में 'पुष्प' जी के अथक दुरुह प्रयासों से इस क्षेत्र का विकास संभव हुआ है।

आदरणीय 'पुष्प' जी में क्षेत्रीय आत्मीयता कूट-कूट कर भरी थी। यही कारण था कि कलाकृतियों तथा खण्डित-प्रतिमाओं को देखकर मन में आया कि वास्तव में यह क्षेत्र पुरातन साधना स्थली रहा होगा। नवागढ़ के अजैन व्यक्तियों से चर्चा में आया कि आज भी नवागढ़ में मूर्तियाँ प्राप्त हो रही हैं।

मकान की नींव खोदने में, खेतों में कार्य करने में, कूपादि के खनन करने में कई मूर्तियाँ एवं अवशेष प्राप्त हुए हैं। जिन्हें ग्रामवासियों ने नवागढ़ संग्रहालय में संगृहीत किया है।

इस क्षेत्र को नवीन एवं भव्य स्वरूप प्रदान करने में आदरणीय 'पुष्प' जी के सुयोग्य सुपुत्र स्वाभिमानी, सिद्धान्त पथानुगामी आ. ब्र. जयकुमार 'निशांत' जी को श्रेय जाता है, जो अहर्निश तन-मन-धन से सहयोग कर रहे हैं। आपके मिलनसार स्वभाव के कारण आस-पास की समाज का भरपूर सहयोग एवं स्नेह मिल रहा है और भारत के अन्य नगरों के श्रद्धालु जो भगवान् अरनाथ स्वामी के अतिशयके साक्षी हैं, जिनकी समस्याओं का समाधान हुआ है सभी समर्पित होकर सहयोग कर रहे हैं।

'निशान्त' जी ने सम्यक् पुरुषार्थ करते हुए विभिन्न विधाओं के विद्वानों, इतिहासविदों, प्रशस्तिवाचकों, पुरातत्त्वेत्ताओं, विशेषज्ञों द्वारा गहन अन्वेषण द्वारा इस क्षेत्र को जैनदर्शन की ऐतिहासिकता, धार्मिक, सांस्कृतिक, प्राचीनता का साक्षात् उदाहरण है।

नवागढ़ के जंगल में प्राचीन शैलाश्रयों एवं उत्कीर्ण कायोत्सर्ग मुद्रा एवं चरण चिन्हों से नवागढ़ में जैन संतों की साधनास्थली होने के साक्ष्य सिद्ध हो रहे हैं। नवागढ़ में संगृहीत पुरातात्त्विक धरोहर को व्यवस्थित रूप से संयोजित करने का कार्य अवश्य होना चाहिए, जिससे भविष्य में जैनधर्म की प्राचीनता, सांस्कृतिक, पुरातात्त्विक धरोहर का ज्ञान नवोदित विद्वानों एवं युवाओं को हो सके।

'निशान्त' जी ने श्री नवागढ़ गुरुकुलम् के माध्यम से बालकों में जैन संस्कारारोपण के साथ आधुनिक शिक्षा का जो सम्यक् प्रयास किया है। अत्यंत आवश्यक एवं समय की माँग है, इसके संचालन में समाज को सहयोग करके जैनधर्म के संरक्षण में सहयोग करना चाहिए, मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

वर्तमान स्वरूप को देखकर यहाँ पर पुरातत्त्व के संरक्षण एवं खोज की विशेष आवश्यकता है। इसके लिए सरकारी अनुदान लेने का प्रयास करना चाहिए।

संयम स्वास्थ्य योग

खुजली (ITCH) के सरल उपाय

खाज-खुजली में नमक का सेवन हानिकारक है। इसमें फलाहार और शाकाहार लाभदायक है। फलाहार, शाकाहार से रक्त का क्षारत्व बढ़ जाता है। क्षार तत्त्व बढ़ना अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करता है। खाज-खुजली के रोगी का नमक बंद कर फल, सब्जियाँ बिना स्वाद बढ़ाये अर्थात उनमे कुछ भी नही डालें , कच्ची ही खायें उससे बहुत लाभ होता है।

उपाय- केला-दाद, खाज, तथा गंज हो तो केले के गूदे को नींबू रस में पीस लें और लगायें, इससे लाभ होता हैं।

नींबू- नींबू चूसें तथा नारियल के तेल में नींबू का रस मिलाकर मालिश करें। खुजली में बहुत लाभ होगा।

हरड- पीसी हुई हरड दो चम्मच दो ग्लास पानी में उबालकर छान लें। इसके गरम पानी से जहाँ खुजली चलती हो वहाँ धोएं, रूमाल भिगोकर पोंछें इससे खुजली चलना बंद होगी।

चमेली का तेल- 1. इसमें नींबू का रस समान मात्रा में मिलाकर मालिश करने से सूखी खुजली में बहुत लाभ होता है। 2. चमेली के तेल में कपूर मिलाने से उस तेल की मालिश करने से खाज रूक जाती है।

नीम- इसके सेवन से रक्त साफ होता है। प्रातः 25 ग्राम नीम के पानी का रस लेना लाभदायक है।

कविता

खादी का इतिहास पुराना

संस्कार फीचर्स

खादी का इतिहास पुराना, सिन्धु सभ्यता इंसान से
वेदों ऋचा मैं खादी वस्त्र का मिलता पूर्ण विधान रे
खादी से साकार अहिंसा, प्रेम अमर नित होता है
करूणा वसती खादी में ही, बीज शांति के बोता है
खादी को जो अपनाता है, वो सच्चा इंसान रे
देश भक्त श्रमनिष्ठ मनुज ही, हथकरघा को अपनायें
स्वाबलम्बन की तानें छेडें, गीत स्वदेशी हो गाये
स्वाभिमान भारत का रखना, भारत माँ सन्तान रे
शुद्ध अहिंसक खादी न्यारी, संयम सौरभ योग है
मटन टेलो नहीं खादी में है, काया स्वस्थ से योग है
गाँधी की प्यारी खादी में, सबका ही कल्याण रे
युग दृष्टा विद्यासागर ने, नवजीवन शुभ सूत्र दिया
स्वाभिमान जीवन को सबका, मूल मेत्र का दान दिया
धर्म अर्थ अरु काम मोक्षमय, गुरुवर का अवदान रे

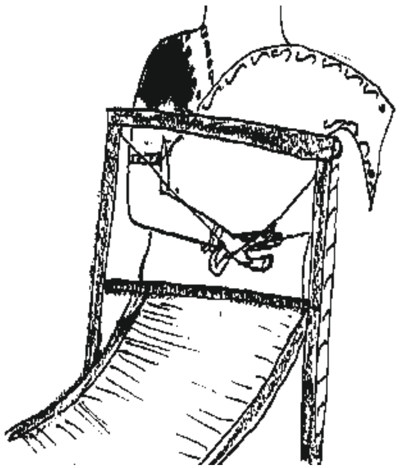

हमारे संग्रह के कुछ दिगम्बर प्रतिमा-लेख

✻ श्रीयुत अगरचन्द नाहटा भंवरलाल नाहटा ✻

इतिहास में शिलालेखों ग्रंथ प्रशस्तियों और पुष्पिका लेखों का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हर्ष का विषय है कि जैनेतरों की अपेक्षा जैन समाज इन प्रमाणों में आज भी विशेष समृद्ध है किन्तु हमारे रत्न जो हमारी ही मिट्टी में कुचले जा रहे है उन्हें प्रकाश में लाने वालों का अभाव सा देखा जाता है। फिर भी श्वेताम्बर समाज में इस ओर अच्छा प्रयत्न हुआ है। जिसके फलस्वरूप हजारों महत्वपूर्ण प्रतिमालेख प्रकाश में आ गये हैं और उनमें इतिहास लेखकों को बड़ी भारी सहायता मिलती है। उसमें केवल जैन समाज के लिये ही नहीं किन्तु भारतवर्ष के इतिहास की भी बहुत प्रामाणिकता पाई जाती है।

श्वेताम्बर समाज के लेख संग्रहों में स्वर्गीय बाबू पूरणचन्द्र जी नाहर के 3 खण्ड, जैनाचार्य श्रीबुद्धिसागर सूरि जी के दो भाग पुरातत्त्वाचार्य श्रीजिनविजय जी के 2भाग, मुनिराज श्री विद्याविजय जी संपादित 1 भाग, मुनिराज श्री जयन्तविजय जी के आबू के शिलालेख इतने स्वतंत्र ग्रंथों में एवं देवकुल पाठक , सूरत नो स्वर्णयुग आदि ग्रंथों में एवं अनेक मासिक पत्रों में श्वेताम्बर प्रतिमालेख प्रकाशित हैं। पर जब हम दिगम्बर समाज की ओर ध्यान देते हैं बड़ा दुःख होता है कि सैकड़ों की संख्या में विद्वान और बड़े-बड़े धनीमानियों के विद्यमान होते हुये भी साहित्य संसार में पिछड़ते हुये प्रतीत होते हैं। दिगम्बर प्रतिमा लेख संग्रहों में प्रो. श्री हीरालाल जी जैन, बाबू कामताप्रसाद जी और एक छोटा सा संग्रह बाबू छोटेलाल जी जैन का ही अद्यावधि प्रकाश में आया है। ब्र. श्री शीतलपसाद जी के प्राचीन जैन स्मारक 4 भागों में कुछ लेख छपे हैं पर अभी तक प्रयत्न नगण्य सा है और इसीलिये दिगम्बर विद्वान् भट्टारकों का इतिहास अधिक तिमिराच्छन्न है। दिगम्बर इतिहास के नाना पहलुओं पर तभी प्रकाश पड़ेगा कि जब साधन संगृहीत होंगे। अतः दिगम्बर समाज और विशेष कर विद्वानों से हमारा अनुरोध है कि वे इस ओर शीघ्र ध्यान देकर अपने-अपने स्थानीय मन्दिरों के प्रतिमालेखों को संग्रह करके 'जैन सिद्धान्त भास्कर' 'अनेकान्त' आदि पत्रों में प्रकाशित करें और अच्छी संख्या हो जाने पर उन्हें स्वतंत्र ग्रंथ के रूप में प्रकाशित कर दें।

हमारे संग्रह के एक हस्तलिखित पत्र में 'वांसखोह' नगर के दिगम्बर जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा के लेखों का मसविदा है। जिसमें सं 1786 वैशाख वदि 8 को जो प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हुई थीं उनके छोटी-बड़ी प्रतिमा के अनुसार एक ही आशय के संक्षिप्त विस्तृत लेख लिखे हैं । पाठकों की जानकारी के लिये इस पत्र की नकल यहां देते हैं :-

वृहत् संवत्- संवत्सरे वह्निवमुमुनींदुमिते 1783 वैशाखमासे कृष्णपक्षे अष्टमीतिथौ बुधवारे श्रवण नक्षत्रे बांसपोह नगरे अंबाबनी सामी कुछाहा गोत्रीय महाराजधिराज श्रीजयसिंधजित्तसामंत कुंमाणी गोत्री राजि श्रीचूहढ़सिंह जी राज्ये प्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघे नंद्याम्नये

बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये न्वये भट्टारक श्री जगत्कीर्तिन्त पट्टे भट्टारकश्रीदेवेन्द्रकीर्ति-स्दाम्नये खंडेलावालान्वये लुहाड़यागोत्रे साह श्रीरामदास जी तद्भार्या रायवदे तत्पुत्रसधभारयोग्यः श्री जिनमनोद्योतकः संगही जी श्रीहृदयराजजी तद्भार्यास्तिन्त्रः प्रथमा केसरिदे द्वितीया ल्होड़ी तृतीया गुर्जेरि तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम चिर्ज श्रीखुश्यालचन्द द्वि. सेवाराम तृ. शंभूराम एतैर्युक्तेन संघही श्रीहृदयरामेण बिंबप्रतिष्ठा कारिता।

मध्य संवत्- संवत् 1783 वैशाख वदि 8 बुधवारे श्रवणनक्षत्रे वांसपोह नगरे कुंभाणी गोत्रीय राजि श्री चूहड़सिंह जी राज्ये प्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघे युद्धारक श्री देवेन्द्रकीर्तिस्तदाम्नाये खंडेवालान्वये लुहाडिया गोत्रीय साह श्रीरामदासजी तत्पुत्र संगहीजी श्रीहृदयरामजी तेन विंबप्रतिष्ठा कारिता।

जघन्य संवत्-संवत् 1783 वैशाखमासे कृष्णपक्षे अष्टमीतिथौ वांसपोह नगरे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्तिस्तदान्वये लुहाड़िया गोत्रीय संगहीजी श्रीहृदयरामजी तेन बिंबप्रतिष्ठा कारिता।

अतिजघन्य- संवत् 1783 वैशाख वदि 8 प्रतिष्ठा कारिता

अति जघन्य जघन्य- संवत् 1783 प्रतिष्ठित करके श्वेताम्बर लेखसंग्रहों में भी कितने ही दिगम्बर लेख प्रकाशित हुये हैं। उन्हें भी संग्रह करके एक साथ प्रकाशित करने से इतिहास के अभ्यासियों को विशेष सुविधा मिलेगी। हमने लगभग 2000 जैन प्रतिमालेखों का संग्रह किया है, इनमें जितनी सामग्री अभी हमारे पास है उनमें से दिगम्बर प्रतिमालेखें को एकत्र करके इस लेख में प्रकाशित करते हैं। सत्यता के नाते हमें एक बात का स्पष्टीकरण करना पड़ता है कि हमारे अवलोकन में जितने दिगम्बर लेख आये हैं, उनमें प्रायः अशुद्धियों का आधिक्य है। कइयों की तो बिना मात्रा की भद्दी लिखावट और भाषा भी अव्यवस्थित है, श्वेताम्बर लेख अपेक्षाकृत उनसे बहुत अच्छे सुवाच्य और सुव्यववस्थित पाये जाते हैं। फिर भी इन लेखों में कितने ही लेख अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण हैं। आशा है कि हमारा यह स्रंगह इतिहासप्रेमियों को उपयोगी होगा।

1. संवत् 1537 वर्षे वैशाख सुदि 14 रवौ खंडेलवाल संतानि रासमढत्रं विमल रासमि (?)

2. संवत् 1493 माघ सुदि 10 नुत दिने भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्ति सा। विसेरो (?) भार्या पेम्हि दे पुत्र त्रिभू केन।

3. भ. श्री 3 कनक। 2 श्री धर्मकीर्ति 3 मदे।

4. सं. 1287 वर्ष फाल्गुण वदि 3 शुक्रे मण्डलाचार्य श्रीललितकीर्तिण पटा नदिमा पा जा। ल्हरा ऋषि पूर्वी धिया पुत्रेण नावृ (?)

5. सं. 1794 मी माह सुद 13 माराठ नगरे मूल भ पा मलव (?) सरस्वती मवे पा श्री मट्टेड का गाघत द्वरं आग, त, स, की, ति, त, दा, म, त, भी, पक....

6. सं. 1357 फागुण सुदि 3 श्री मूलसंघ खंडेलवालान्त्रये

7. सं. 1676 मूलसंघे भ. रत्नचन्द्रोपदेशेन सीरप्प पा माणिक पाचल्लीसुत पदारय भार्या दत्तां सुत नोवा हेमा रत्ना प्रणमति।

8. संवत् 1548 वर्षे वैशाख सुदि 5 श्रीमूलसंघे वादल जोत शिष्य गी, वा, अ... करापित

9. संवत् 1547 वैशाख सु. 7 काष्टासंघे गुणभद्र अभयभद्र

10. संवत् 1637 वर्षे वैशाख व. 18 श्रीमूलसंघे भट्टारक श्रीगुणकीर्त्युपदेशात्व्र अलवा भा. शहा सु. कदूवा नाकरठा.... प्रणमति।

11. संवत् 1529 वर्षे वैशाख सुदि 7 बुधे श्रीमूलसंघे भट्टारक श्रीसिधकीर्तिदेव। गोल।... सागरालकु मार्या लखज...............।

12. मूलसंघे श्रीभुवनकीर्ति आदेशात् 1234 (दो लेख)

13. संवत् 1794 श्रीमूलसंघे ?...........।

14. संवत् 1549 मूलसंघे।

15. श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे।

16. संवत् 1492 वर्षे वैशाख वदि 10 गुरु श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे नंदिसंघे बलात्कारगणे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवान् तत्पट्टे श्रीशुभचन्द्रदेवान् तत्भ्राता श्रीसकलकीर्ति उपदेशात् हुबड़ न्याति ऊवेश्वर गोत्रे ठा. लोंबा भा. कह. श्रीपार्श्वनाथ नित्यं प्रणमति सं. तेजाः टोई आ. ठाकरसौ हीरा देवा मूढलि वास्त प्रतिष्ठिता।

17. संवत् 19 (?4)73 वरषे माघ सुदि 9 म (मू) ल सौंप भटारिप जी श्रीधरमचन्द्र दव साह जी श्री मरवर राम पाटणी जी त परणामंत सहा अमरराजै श्री अमायसिंघ जी।

18. संवत् 1457 वीरप सुदि 7 श्रीमूलसंमीचे भटारीप जी श्रीधरमचंद दव साह वेखतरा पाटणी तीने परणमंते सहर गत्र गंगदुणी रा...

19. संवत् 1547 वर्षे वैशाख सुदि 3 श्रीमलतन टरक... सटकवरजीपाप राक्ल नित्य पणमत (ऐसे कोई लेख हैं)

20. संवत् 1634 श्री मूल संघे........।

21. संवत् 1155 ठ ॥ मटद वि 5 संघे श्रीदेवसेन संभन्द वरु फामसवदा दुसा जागवौन कारितं सघारकट गृहे के वं जिनालयंमि (?)

22. संवत् 1531 वर्षे फागुण सुदि 5 श्रीमूलसंघे भगवान श्री जिणचन्द्र श्री सिंहकीर्तिदेवा प्रतिष्ठितं॥

श्रीआगमसिरि क्षुल्ल की कमी सहित श्रीकलिकुंढयंत्र कारापितं॥ श्री कल्याणं भूयात्॥

23. संवत् 1349 मू संघे यारू पीरौहित देव।

24. संवत् 1542 वर्षे ज्येष्ठ सुदि 8 शनौ भ. श्री जिनचंद्र रा भ. श्रीज्ञानभूषण स. ठहद भा. सु नारायण

25. संवत् 1540 वर्षे वैशाख सुदि 10 बुध श्रीकाष्टासंघे भ. श्रीसोमकीर्ति प्र. भट्टेठ राजा कामिक गोत्रे सा. ठाफुग्मी मा. रूपी पुत्र योधा प्रणमति।

26. संवत् 1683 श्री काष्टा संघे भ. विजयप्रभ... अग्रवाल मीतूभ गोत्रे रावदास प्रणमात।

27. संवत् 1527 वर्षे वैशाख वदि 11 बुधे श्रीमूलसंघे भ. श्री सकलकीर्तिस्तत्य भ. श्री भुवनकीर्ति उपदेशात् ह. बुध गोत्रे व्य. माहब भार्या झबकू सुन आसा भार्या राजृ। भ्रतृ सूरा भार्या गोमति मातृ शिवा भार्या महिगल दे सुत धरमा कारापित श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र नित्य प्रणमति।

28. श्रीमूलसंघे भट्टारक शुभचन्द्रतच्छिष्या याई ढाही नित्यं प्रणमति॥

29. संवत् 1593 श्री मूलसंघे मंढलाचार्य श्रीधर्मनंदि आम्नाये साधारणमल मागाणी भा. रेणा दे नित्यं प्रणमति।

30. संवत् 1593 वर्षे फा. यदि 2 सोमे श्रीकाष्टासंघेन नरसिंघपुरा ज्ञातीय नागर गोत्रे म. रत्न सी भा. लीला दे पुत्र मह। राजपाल म. लेहआ म. राजपाल भार्या राजल दे पुत्र मघा राका नित्य प्रणमति भ. श्री विश्वसेन प्रतिष्ठाः।

31. संवत् 1688 वर्षे फागुण सुदि 8 शनिवासरे श्रीकाष्टासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे तदाम्नाये भ. जसकीर्ति देवाः स्तत्पट्टे भ. क्षेमकीर्ति देवा तत श्री त्रिभुवनकीर्ति भ. सहस्त्रकीर्ति तस्य शिष्यणी अर्जिका श्रीप्रताप श्रीकुह् (रू) जङ्गल देशे सपीदों नगरे गर्गगोत्रे चो. इन्द्र सज्जनस्य भा. 4 प्र. सुखो भार्या तस्य पुत्री दमोदरी च द्वितीय नाम गुरुमुख श्री प्रताप श्री तस्य शिष्यणी बाई धरमावती पं. राईसिंह द्वितीय शिष्य बाई धरमावती गु. भा. पादुका करापितः कर्मक्षयनिमित्तं शुभं भव॥ तु:चौ चूहरमल तस्य भार्या खल्हों तस्य पुत्र 8 सुखू 1मदू 2 दुग्गु 3 परंगह सखण पदमा 6 इन्द्रराम 7 लालचन्द 8।

32. संवत् 1548 वर्षे वैशाख सुदि 3 श्रीमूलसंघे भट्टारक श्रीमानचन्द्र देव प्रणमति।

33. संवत् 1548 वैशाख सु. 5 मूलसंघे सेणगण पंकूरगणे भट्टा सोमसेण शष्य (? शिष्य) राजसेण उपदे खंडेलवालान्वये गगलेल गोत्रे सा. उमाला भार्या ....।

34. अजितनाथ श्रीमूलसंघे खरहथ प्रणमति.......।

35. संवत् 1637 वर्षे फागुण सु. 10 श्रीमूलसंघे भ. गणकीर्त्युपदेशात् सा. प्रणमति ....।

36. संवत् 1548 वर्षे वैशाख सुदि 3 श्रीमूलसंघे भट्टारक जी श्री.....

37. संवत् 1826 वैशाख सुदि 6 मूलसंघे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति सं मंदला लम गोत्र कासवारा मस्थ भाना।

38. संवत् 1457 वर्षे वैशाख सुदि 7 श्रीमूलसंघे भट्टारक जी धरमचंदर

39. संवत् 1513 श्री काष्टासंघे भ. वरइ तियशः खेता सा भा. गांगीपुत्र तिलू नित्य प्रणमति

40. संवत् 1529 वर्षे वैशाख सुदि 7 दिने मूलसंघे भट्टारक श्री सिंघकीर्ति देव.....

41. संवत् 1522 वर्षे माघ सु. 13 बुध श्रीमूलसंघे भट्टारक श्री सिंघकीर्ति देवा सा. कल्हा पु. घाट प्रणमति।

42. संवत् 1513 व. वै सु. 5 शु. श्रीकाष्टासंघे भटेवरी पं. जेसा भा. गविति पुत्र ॥टा॥ टाउड़ीरा प्रणमति।

43. संवत् 1579 माघ वदि 5 गुरौ श्रीमूलसंघे भ.श्री विजयकीर्ति श्रे. जिणदास कान्हा

44.संवत् 1457 वर्षे वैशाख सुदि 7 श्रीमूलसंघे भट्टारकजी श्री धरमचन्दर साह वखत राम पाटणी।

45. संवत् 1155 जेठ वदि 5 सोम श्री देवसेनसंघ देवइमें मअवदात पासनाथ बिंब कारितं

46. संवत् 1557 वर्षे फागुण सुदि द्वितीया शुक्रवारे रेवती नक्षत्रे सा...... श्री चारित्र भूषणवराः स्वर्ग जम्मु॥ तत्पादपादयुगलमिदम्॥ चिरंनंदतात् तन्नाप्तवर भुवि॥

47. संवत् 1547 वर्षे वैशाख सु. 3 सोमे हुंवड़ ज्ञा. श्रे तिला भा. हर्पू पु. श्रे. लाला भीमा नाथादयस्तेपु लालाकेन भा. रूक्मिणि पु. सिंवा बावादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्री संभवनाथविबं कारितं प्रतिष्टितं श्रीमूलसंघे भ. श्री ज्ञानभूषण मूडहिटीवास्तव्य॥श्री॥

नोट- यों तो भवन में भी बहुत से दिगम्बर जैन प्रतिमालेख संगृहीत हो सुरक्षित हैं और उन्हें यथावत शुद्धरूप में प्रकाशित कर देने का विचार भी बहुत दिनों से है। पर अपने समाज का रूचि वैशिष्टय देखकर ऐसी-ऐसी चीजों को प्रकाशित करने में भय मालूम होता है। इसका ताजा उदाहरण भवन में प्रकाशित एक छाटा सा प्रतिमालेख -पत्रक ही पर्याप्त है जो कि भास्कर में धारावाहिक रूप से बहुत दिनों तक प्रकाशित होता रहा। खेद की बात है कि इतनी कम कीमत की इस आवश्यक पुस्तक की आज तक दस-पांच प्रतियां भी नहीं बिकीं। ऐसी अवस्था में कोई संस्था किसी भी ऐतिहासिक प्रकाशन का कार्य किसके भरोसे अपने हाथ में लेगी। खेर, नाहटा बन्धुओं का यह हमारे संग्रह के कुछ दिगम्बर जैन प्रतिमा लेख इसलिये यहां प्रकाशित किय जा रहे हैं कि इन श्वेताम्बर बन्धुओं के प्रकाशन से दिगम्बर समाज भी अपने इतिहास के प्रति जागरूक बने।

कविता

शिरपुर के श्री पार्श्वनाथ

✻ संस्कार फीचर्स ✻

शिरपुर के श्री पार्श्वनाथ के, दर्शन करने जो आते
चरण शरण ले वचनामृत सुन, शिव सुख अनुपम वे पाते
आप्त नाथ प्रभु अंतरीक्ष में , शिव पथ दर्शन स्वामी हो
गणधर इन्द्र करें पद पूजन, तुम त्रिभुजन के स्वामी हो,
अखिल आपदा विपदा हरते, जन गण मन सुखकारी हो
मूल दिगम्बर सत्य स्वरूपी मोह महातम हारी हो

चौपाई

अधहारी जनमन सुखकारी,
शिपुर पार्श्वनाथ दुखहारी
सकल आपदा क्षण में हरते,
सकल यतीश्वर अर्चन करते
अंतरीक्षक प्रभु पारस स्वामी,
संकट मोचक अंतरयामी

भारतवर्ष के पतन का मुख्य कारण

❊ लेखक– श्रीयुत कामता प्रसाद जैन, एम.आर.ए.एस ❊

भारतवर्ष भगवान महावीर के समय में एक स्वाधीन देश था। स्वतंत्र समुदाय वातावरण में पाले-पोसे गये भारतीय लाल उस समय पूर्ण स्वाभिमानी और समृद्धिशाली भारतीय उत्कर्ष का सूर्य तब अपनी परमोत्कृष्ट शीर्ष सीमा पर था। उस समय भारत का सदाचार, भारत का वैभव, भारत का शौर्य, भारत का कला-कौशल और भारत व्यापार सब कुछ दूर दूर देशों तक प्रसिद्ध था। तत्कालीन यूनानी लेखकों ने इन सब के लिये भारत की खूब ही प्रशंसा लिखी है और यह भी लिखा है कि भारत के लोहकपाट तब तक किसी भी विदेशी आक्रमणकारी ने नहीं खोल पाये थे। भारतीय अजेय थे, शक्ति अपार थी। किन्तु किसी के दिन सदा एक से नहीं रहते- भारत का भाग्य के भाग्य को घुन लग गया- उसका पतन हुआ और यहां तक हुआ कि आज भारतीय अपने व्यक्तित्व और अस्तित्व का भी मूल्य नहीं जानते- वह अपनी सभ्यता और अपनी संस्कृति को भी भूल रहे हैं। पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति को आदर्श मानकर अपने जीवन को नये खांचे में ढालने का प्रयत्न करते हुये अपने पूर्वजों और अपने प्राचीन सिद्धान्तों की भर्त्सना कर रहे हैं। यह समय का फेर है। जिन भगवान महावीर के महान उपदेश को पाकर भारत का सांस्कृतिक और एक हद तक राष्ट्रीय एकीकरण हुआ था, उन्हीं भारतोद्धारक ही नहीं लोकोद्धारक महापुरुष के अहिंसा सिद्धांत को भारत के पतन का कारण मानने की गलती भी आज के लोग कर रहे हैं। वह कहते हैं कि जैनियों और बौद्धों की अहिंसा ने भारतीयों को कायर और शक्तिहीन बना दिया जिसके कारण भारत का पतन हुआ। परन्तु यह कथन एक कल्पनामात्र है- वस्तुस्थिति इस कथन के नितान्त विपरीत है। जैनियों की अहिंसा मनुष्य को मनुष्य तो बनाती ही है, परन्तु यदि उसका पूर्णतः पालन किया जाये तो वह मनुष्य को देवता बना देती है। मन-वचन-कायिक वृत्तियों के अनुरूप अहिंसा का सूक्ष्म विवेचन जैन शास्त्रों में श्लाघनीय है, जिसका अध्ययन म.गांधी ने जैन कवि रायचंद्र जी की निकटता में किया था। म. गांधी ने राजनैतिक प्रगति का अजेय अस्त्र अहिंसा सिद्धांत ही स्वीकारा है, जिसका चमत्कार आज किसी से छिपा नहीं है। परंतु जब लोग जैनियों के अहिंसा सिद्धांत पर लाञ्छन लगाते हैं तो संक्षेप में हमें निम्न पंक्तियों में यह देख लेना अभीष्ट है कि आखिर जैन अहिंसा को मानने वाले क्या कायर हुये थे और क्या उनके कारण देश का पतन हुआ था।

अहिंसा का विवेचन जैनशास्त्रों में है- हम उसे यहां पर नहीं दुहरायेंगे। हाँ, इतना लिख देना हम जरूरी समझते हैं कि जैन अहिंसा के मूलतः दो रूप है और इसीलिये उसके उपासकों को भी दो श्रेणियां है। पहली श्रेणी के लोग जो पूर्णरूप में मनसा वाचा कर्मणा

अहिंसा व्रत का पालन करते हैं अहिंसा-महाव्रती कहलाते हैं और वे लोकोद्धारक प्राणिमात्र का हित चाहने वाले साधु महात्मा होते हैं, जिनके पास तिल-तुम-मात्र भी परिग्रह नहीं होता और दूसरी श्रेणी के अहिंसोपासक गृहस्थ लोग होते हैं, जो आंशिक रूप में अहिंसा धर्म को पालते हैं। ऐसे लोग जीवन निर्वाह की सुविधाओं का ध्यान रखकर यथाशक्ति अहिंसा-धर्म का पालन करते हैं- वह जानबूझ कर संकल्प करके किसी जीव को नहीं मारते। वैसे गृहस्थी के धंधे में, उद्योग-व्यापार में, और जीवन रक्षा में जो हिंसा अनिर्वाय है वह उनके लिये क्षम्य है। यद्यपि इस विधान का यह अर्थ नहीं है कि एक गृहस्थ सांसारिक व्यवहार (जीवन-निर्वाह) में मनमानी हिंसा करे, परन्तु साथ ही इसका यह अर्थ भी नहीं है कि हिंसा के डर से गृहस्थ कायर और अपमानित जीवन व्यतीत करने के लिये राजी हो जाये। जैन शास्त्रों और शिलालेखों के उल्लेखों से पता चलता है कि संघ-समुदाय के जीवन की संकट में पड़ा हुआ देखकर स्वयं उन श्रेणी के अहिंसा-महाव्रती पूज्य साधु पुरुषों तक ने हाथों में हथियार लेकर अत्याचारी आततायी का मुकाबला किया था। भगवती आराधनासार नामक प्राचीन जैनग्रंथ में लिखा हैं-

अहिंसा (सा) रयण णियविम्मि मारिदे गहिदु समण लिगेण।
उड्डाहपसणात्थं सत्यग्गहणं अकासि गणी।।6।।

अर्थ- अहिमारक नामक चोर मुनि का लिंग धारण करि राजा कूं मारते-संते संघ का स्वामी गणी जो आचार्य सो समस्त संघ का उपद्रव दूरि करने के अर्थि आप शस्त्रग्रहण करता भया। (पृष्ठ 353)

इसी प्रकार शिलालेखों से भी इस व्याख्या का समर्थन होता है। गंगराजा वटुग के राज्यकाल में बल्लप-नामक नायक ने केल्लनगर-नामक स्थान पर आक्रमण किया था। उस नगर के भव्यजनों पर हुये उस अत्याचार को वह सहन नहीं कर सके- उन्होंने आक्रमण का विरोध किया और वीरगति को प्राप्त हुये। सन् 952 ई. के वस्तिहल्लि से प्राप्त शिलालेख में यह वीर-वार्ता अङ्कित है। इसी तरह सौदन्ति के रट्ट (राठौर) राजा कार्तवीर्य और उनके पुत्र राजा लक्ष्मीदेव के कन्नड़ भाषामय शिलालेख द्रष्टव्य है। उनसे पता चलता है कि इन राजाओं के धर्मगुरु (Spiritual Preceptor) मुनिचंद्र नामक जैनाचार्य थे जिन्होंने रट्टराज्य की खूब वृद्धि की थी और वही रट्टराज्य के दृढ़ संरक्षक थे। (Firm sustainer of the kingdom of the Rattas) मुनिजनों में वह साक्षात् चन्द्र थे, जिसे देखकर भव्य कमल प्रमुदित होते थे। अपने आध्यात्मिक ज्ञान के कारण वह राजा कार्तवीर्य के धर्म-गुरु थे और चूंकि वह शस्त्र शास्त्र के पारङ्गत विद्वान् थे इसलिये वह लक्ष्मीदेव के शिक्षा गुरु थे। अनेक राजाओं के शत्रुओं को परास्त करके श्रीमुनिचन्द्र ने उन राजाओं का अभिषेक किया था। (Through Subduing Many Kingdoms he

Became the anointer of other kings) निस्संदेह मुनिचन्द्र एक धर्म-गुरु और साथ ही धर्म-पथ-प्रदर्शक (Spiritual guide) थे। उन्होंने लक्ष्मीदेव के शासनकाल में समस्त भूमंडल को धर्म-रसिक बना दिया था और अपने भुजविक्रम से राजा के शत्रुओं को खदेड़ कर भगा दिया था। ऐसे वह मुनिचन्द्र जी थे। इन उल्लेखों से स्पष्ट है कि मनसा वाचा कर्मणा अहिंसा-महाव्रत को पालने वाले जैन साधु पुरुष भी वक्त पड़ने पर-अत्याचार का प्रतीकार और संघ का संरक्षण करने एवं धर्मसाम्राज्य स्थापित करने के लिये किसी से पीछे नहीं रहे थे। फिर भला सोचिये कि आंशिक रूप से अहिंसाव्रत को पालने वाले गृहस्थ के कर्तव्यमार्ग में अहिंसा सिद्धांत कैसे बाधक हो सकता है ? हाँ यह अवश्य है कि वह उसे एक पशु न रखकर सात्विक मनुष्य बना देता है। भगवान महावीर के पश्चात् जब तक भारतीय लोक-समाज में अहिंसा धर्म प्रचलित रहा तब तक यहाँ विदेशी लोगों की दाल नहीं गली और देश भी खूब समुन्नत रहा। नन्द-सम्राटों में नन्दवर्द्धन एक महान विजेता थे-उन्होंने भारत की पश्चिमोत्तर सीमा से ईरानियों को भगा दिया था। विद्वानों की मान्यता है कि सम्राट् नन्दवर्द्धन जैनधर्मानुयायी थे। नन्दों के बाद मौर्यों ने भारत के शासन-सूत्र को संभाला था, जिनमें सम्राट चन्द्रगुप्त का नाम भुवन-विख्यात है। इस बांके वीर ने भारत का राष्ट्रीय एकीकरण करके उसे खूब समृद्धिशाली बनाया था। चन्द्रगुप्त के रामराज्य की यूनानियों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है और यह भी लिखा है कि उन्होंने यूनानी बादशाह सेल्यूकस नाइकेटर को परास्त करके पश्चिमोत्तर भारत से यूनानी राज्य का अन्त कर दिया था। प्राचीन शास्त्रों और शिलालेखों से स्पष्ट है कि **चन्दगुप्त मौर्य जैनाचार्य भद्रबाहु स्वामी का शिष्य था** और अन्त में उन्हीं के निकट जैन मुनि हो गया था। तीसरी बार जब फिर भारत पर विदेशियों का आक्रमण हुआ और यूनानी बादशाह दमत्रय (Demeterius) मथुरा तक घुस आया तो उस समय उससे गोरचा लेने के लिये-भारत-दिग्विजय करके उसको स्वाधीन बनाने के लिये **जैनधर्म के अनन्य संरक्षक कलिङ्ग सम्राट् खारवेल कर्मक्षेत्र में अवतीर्ण हुये थे। खारवेल के शौर्य की वार्ता सुनकर ही दमत्रय मथुरा छोड़कर भाग गया था।** सारांश यह कि प्राचीनकाल में जिस समय भारतीय नरेश जैन अहिंसा के उपासक थे, उस समय देश में इतना काफी ओज, स्वाभिमान और शौर्य विद्यमान था कि यूनानियों ने लगातार आक्रमण करते रहने पर भी अपना झंडा भारत में नहीं गाड़ पाया था।

उपरांतकाल में भारतवर्ष के जिन आदर्श नरेशों की गणना भुवन-विख्यात सम्राटों में है उनमें से प्रमुख शासकगण जैन अथवा बौद्ध धर्मो के अनुयायी थे। अरब के लेखकों ने राठौर राजा अमोधवर्ष वल्लराज (बलहरा) को तत्कालीन संसार के लोकप्रसिद्ध राजाओं में गिनकर उनकी एक आदर्श शासक रूप में मुक्तकंठ से प्रशंसा लिखी है। **यह अमोघ वर्ष जैनाचार्य जिनसेन जी के शिष्य थे और अन्त में स्वयं जैन**

मुनि हो गये थे। इसी तरह **सम्राट कुमारपाल** पश्चिम भारत में और मुसलमानों के साथ वीरतापूर्वक लड़ने वाला **वीर सुहद्ध्वज** पूर्वीय भारत में प्रसिद्ध हुये हैं और यह दोनों ही जैनधर्म के उपासक थे।

किन्तु जैन अहिंसा का सबसे अनूठा चमत्कार हमें दक्षिण भारत में देखने को मिलता हैं। यह मानी हुई बात है कि दक्षिण भारत को यवनों ने सबसे पीछे फतह कर पाया था। उन पर भी देश का शासनाधिकार पाकर भी मुसलमान हिन्दुओं के धर्म और संस्कारों को बदलने में उतने सफल नहीं हुये थे जितने कि वह उत्तर भारत में हुये थे। दक्षिण भारत में तो उनके आचार-विचारों और इमारतों पर हिंदुओं का प्रभाव पड़ा था। **इसका एक मुख्य कारण दक्षिण भारत में जैन धर्म का बहु प्रसार था- एक दीर्घकाल तक दक्षिण भारत के राजा और प्रजा, दोनों ही जैनधर्म की छत्रछाया में रहे थे। जैनाचार्य नगरों और धामों में घूम-घूम कर जनता को अपने मत पर दृढ़ रखते थे। यही नहीं, वह निर्भीकतापूर्वक मुसलमान बादशाहों के राजदरबारों में पहुंचते थे और उन्हें धर्मोपदेश देते थे।** यही कारण है कि दक्षिण भारत में जैन धर्म को मानने वाले इतने अधिक वीर योद्धा, सेनापति और नृपगण हुये हैं इस छोटे से लेख में उनके नामों की सूची लिखना भी कठिन है। बालक-सेनापति विष्णु और वीराङ्गना माचिकव्वे जैसे युवक वीर और युवती वीराङ्गनायें भी अनेक हुई हैं। उनके जीवन जैन अहिंसा का महत्त्व स्थापित करने के लिये चमकते हुये तारे हैं उनके चरित्रों को पढ़कर किसकी सामर्थ्य है कि जो जैन अहिंसा पर कायरता सिरजने का लाञ्छन लगा सके ? केवल आवश्यकता है उन जीवन ज्योति और जागृति को सिरजने वाले स्फूर्तिदायक चरित्रों को प्रकाश में लाने की। अहिंसा के उपासक उन वीरवरों को गाथाएँ हमारे जीवन को समुज्वल बनाये बिना रुक नहीं सकेंगी और उनसे उन लोगों की हृदय कालिमा भी धुल जायेगी जो अहिंसा में वीरता का आभाव देखते हैं। **सच्ची वीरता तो जैन अहिंसा में ही गर्भित है।**

अब प्रश्न यह शेष रहता है कि आखिर भारत का पतन किस कारण से हुआ ? इस प्रश्न का उत्तर भारतीय इतिहास के अनुशीलन से ठीक-ठीक मिल सकता है। वस्तुतः महाभारतकाल से भारत में पारस्परिक अहम्मन्यता, अनैक्य और अविश्वास की ऐसी जड़ पड़ी थी कि चन्द्रगुप्त आदि नरपुंगवों के लाख प्रयत्न करने पर भी उसका अन्त न हो सका। पंजाब में सिकन्दर किन्हीं भारतीय नरेशों की अहम्मन्यता और अविश्वास के कारण ही घुसने में सफल हुआ था। यदि अश्वक, मल्लव, अक्षयद्रक और शिबि क्षत्रियों की भांति यूनानियों के बाद भारत पर शकों और हूणों के आक्रमण हुये थे और अभागे भारत को इस मरतबा भी अपने ही विश्वासघाती कपूतों के हाथों पराधीनता के बन्धन में पड़ना पड़ा था। निस्संदेह शकों और हूणों के समय तक व्यवस्थित और प्रामाणिक वर्णन अनुपलब्ध है,

परन्तु यह स्पष्ट है कि शक राजा अन्तिज्ञ (Antiochos) का एक सौभाग्यसेन नामक भारतीय सरदार ही उसका सहायक हुआ था। और जब हूणों ने आक्रमण किया तब उत्तर भारत में भानुगुप्त नामक राजा राज्य कर रहा था। उसके दो प्रांतीय शासक धन्यविष्णु और मातृविष्णु भाई-भाई थे। ज्यों ही उन्होंने हूणों को आया देखा वह झट से हूणों में जा मिले जिन्होंने उनको राजा बना दिया। उनका एक भाई गोपराज अवश्य हूणों से लड़ा, परंतु यह व्यर्थ था। हूण तोरमाण दो भारतीयों के विश्वासघात की बदौलत भारत का शासनाधिकारी हुआ। **यह उस समय की बात है जब भारत में गुप्तवंशीय सम्राटों द्वारा वैदिक धर्म काफी उन्नत हो चुका था और जैनधर्म जहाँ-तहाँ ग्रामीण जनता और वैश्यों में देखने को मिल रहा था। अब जरा सोचिये पाठक कि भारत के पतन का मूल कारण क्या था ?**

उपरान्तकाल में तो राष्ट्रहित का बलिदान अपने निजी स्वार्थ के लिये भारतीयों ने खूब ही किया। महमूद गजनी के आक्रमण के साथ हिंदुओं की दुर्दशा चरमसीमा को पहुंच गई। मुलतान में राजा शंकरपाल को महमूद ने इस्लाममत में दीक्षित करके उसे वहाँ का राजा बनाया। इसी तरह वरन का राजा अपने दो हजार साथियों के साथ मुसलमान हुआ। और मजा यह कि कन्नौज के प्रतिहार राजा राजपाल ने भी चुपचाप महमूद का अनुशासन स्वीकार कर लिया। राष्ट्र के मान-अपमान का ध्यान इनको जरा भी न हुआ- यह सब अपने निजी स्वार्थ में वह गये। उधर लाहोर के राजा आनन्दपाल की कृतज्ञता का क्या कहना। आनन्दपाल के पिता भारत की स्वाधीनता के लिये मर मिटे थे- उन्होंने अपने अमूल्य प्राण भारत पर न्योछावर कर दिये थे। स्वयं आनन्दपाल ने पहले महमूद के छक्के छुड़ा दिये थे। किन्तु थानेश्वर के आक्रमण से उसका दिल बदल गया- उसने भी अपना उल्लू सीधा किया और महमूद को भारत की विजय करने में हर तरह की मदद पहुंचाई।

इस प्रकार विज्ञपाठक समझ सकते हैं कि भारत के पतन का कारण जैन धर्म नहीं है, बल्कि उसके पतन का कारण स्वयं भारत के कुछ कुपूतों की अहम्मन्यता और स्वार्थपरता है। यदि वे लोग विदेशियों का साथ न देते तो कोई कारण नहीं था कि भारत अपना राज्य खो बैठता। आज फिर उसी अनैक्य और अविश्वास को प्रोत्साहन देना अहितकर है। पौरब आदि राजाओं ने देशभक्ति का परिचय दिया होता तो सिकन्दर पंजाब में आ ही नहीं पाता। सिकन्दर की मुठभेड़ सबसे पहले अश्वक क्षत्रियों से हुई थी- उन्होंने एक वीर के समान उस विश्वविजेता से मोरचा लिया था, परन्तु वह थोड़े से वीर कब तक उसके सामने टिक रहते ? पंजाब के लोगों ने उनकी विपत्ति सुनी और झटपट एक हजार चुने हुये योद्धा उनकी सहायता लिये भेजे। परंतु वे सबके सब यूनानी विजेता के हाथ से वीरगति को प्राप्त हुये। यूनानी सेना के संगठित और व्यवस्थित आक्रमण के सामने वह अधिक न टिक सके। उस पर यदि तक्षशिला के राजा ने उनका साथ दिया होता तो शायद

इस संग्राम का यह रूप न होता, परंतु वह अपने स्वार्थ में बह गया और सिकन्दर के पास पहले से ही संधि की सूचना भेज बैठा था। **जब सिकन्दर आगे बढ़ा तो तक्षशिला के राजा ने उसका स्वागत किया। स्वयं एक हिन्दू नरेश हिन्दुस्तान की अजयेता को नष्ट करने पर तुल पड़ा। बताइये इसमें दोष किसका था ? तक्षशिला का नरेश जैन अहिंसा का उपासक नहीं था- वह अपने स्वार्थ में अंधा हो रहा था और उस देशद्रोही बनते विलम्ब न लगा।** सिकन्दर के साथ होकर वह अन्य हिंदू राजाओं के विरूद्ध लड़ा। पुष्कलावती का दुर्ग भी दो भारतीय सरदारों के विश्वासघात के परिणामस्वरूप सिकन्दर के हाथ लगा। ऑरन (Aornos) के अजेय दुर्ग का मार्ग भी एक बुड्ढे हिन्दू ने ही सिकन्दर को बताया था। भारत से निर्वासित किया गया शशिगुप्त नामक एक क्षत्रिय सिकन्दर के साथ था। सिकन्दर को उससे भी पर्याप्त सहायता मिली थी। सिकन्दर ने ऑरन दुर्ग का शासकपद शशिगुप्त को प्रदान किया था। उपरान्त झेलम प्रदेश का शासक पुरुराज (Poros) वीरतापूर्वक यूनानियों से लड़ा था, परंतु स्वयं उसका ही भतीजा और अन्य सम्बन्धी सिकन्दर से जा मिले थे। आखिर उसने भी सिकन्दर के आगे घुटने टेक दिये। इतना ही नहीं बल्कि यूनानियों को अन्य हिंदू राजाओं को जीतने में उसने सहायता दी। अभिसार क्षत्रियों (Abisares) ने भी देश के साथ यही विश्वासघात किया। इस तरह स्वयं हिंदुओं की सहायता से यूनानी पंजाब में अधिकारी बन बैठे थे, परंतु हम पहले लिख चुके हैं कि पूर्व में जैनवीर चन्द्रगुप्त ने उनको भारत से मार भगाया था।

कविता

मुमुक्षु कौन

✲ संस्कार फीचर्स ✲

सिर्फ जो मोक्ष के इच्छुक, मुमुक्ष वो नहीं होते
धार लें जो नियम संयम, मुमुक्षु वो सही होते
जो देखे दोष मुनियो में औरों में वे तो बाहर भटकते हैं।
जिन्हें निंदा में रस आता, मुमुक्ष वे कहाँ होते
जो साधक मोक्ष मारग का तत्त्व नय बोधधारी है
देखता नित्य चेतन को, विषय भोगों का त्यागी है
दिगम्बर भेष में श्रद्धा ललक जिसके है दीक्षा की
वही सच्चा मुमुक्षु है, जो समता भाव धारी है
जहाँ पर न्याय पथ होता, नहीं अभक्ष्य भक्षण है
दया मय भाव वैराग्य, सदा ही जीव रक्षण है
मैत्री सब जीव में रखता, प्रेम करता गुणीजन में
मुमुक्षु वो ही होता है, जिसे आदर्श मुनिगण है।

चलो देखें यात्रा

अतिशय क्षेत्र विराटनगर (बैराट)

नाम एवं पता: श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन नसिया विराटनगर **अध्यक्ष**-मोतीलाल जैन-7737931450

सुविधायें: अटेच 12, सामान्य 2, हॉल-2 है। भोजन अनुरोध पर उपलब्ध है।

मार्गदर्शन: जयपुर से उत्तर की ओर शाहपुरा होते हुये 85 किमी तथा अलवर से 74 किमी है।

महत्त्व एवं दर्शन: मंदिर 2 हैं। पुरातन जो विशाल गुम्बज के मध्य है। मंदिर के 1 कोने पर पार्श्वनाथ की 1 प्रतिमा स्थापित की गई है। मुख्य मंदिर 1 चौकोर ऊंची कुर्सी पर बना हुआ है। शहर में 2 भव्य विशाल मंदिर हैं। पास विशाल श्वेतांबर मंदिर भी है। आ. शुभचंद स्वामी की तपोभूमि एवं जैन मुनि विमल सुरीजी की जन्मस्थली है। यहां बौद्ध एवं हिंदु मंदिर भी प्रसिद्ध हैं। यात्री यहाँ रूककर सरिस्का पार्क का भ्रमण कर सकते हैं।

समीपवर्ती तीर्थ: राजगढ़-अलवर की पुराजी राजधानी में गढ़ के अतिरिक्त हवेलिया दर्शनीय हैं। उनके अवशेष आज भी शेष हैं। तिजारा से महावीर जी के रास्ते में यह स्थान आता है।

कविता

चाँदनी की ओढ़नी में

संस्कार फीचर्स

आओरी, आओ री
गोरी-गोरी दुल्हन का, घूँघटा उठाओ री।
चन्दा से मुखड़े का मधुर हरस पाओ री॥

1.
मैनका ने रूप और रम्भा ने रतियमता,
भावुक भवानी ने सौंपी निज तन्मयता
राधा ने प्रीति-नीति सीख दे पढ़ाया इसे,
सुनकर रह जाओ री, आओरी आओ री

2.
सपनों सी सरल तरल, सुधियों सी कोमल है
ममता सी निर्विकार, शिशुता सी निश्छल है
आँखों में आँख जल आंजता नवीना को
यों ना शरमाओ री आओरी आओ री।

3.
पाँवों में महावर ना, मुख की परछाहीं ही
हाथों में मेंहदी ना, अधरों की भाई ही
कह लो जो कहना हो, मन ही मन लेकिन ना
रह-रह मुस्काओं री, आओ री आओ री

4.
चाँदनही की ओढ़नी में सिमटी हुई बिजली
वर्षा की उषा ज्यों घिरी सेत बहती
भोली है, अल्हड़ है, आलंकारिक वर्णन की
तुम ना नजराओं री, आओरी आओ री

जैन वाङ्मय और आधुनिक विज्ञान में परमाणु बंध प्रक्रिया

✻ ब्र. समता जैन मारौरा, इंदौर ✻

बंध शब्द का अर्थ है बंधना, जुड़ना, मिलना, संयुक्त होना। दो या दो से अधिक परमाणुओं का मिलना, जुड़ना अथवा दो या दो से अधिक स्कंधों का संयुक्त होना ही बंध कहलाता है। पुद्गल परमाणुओं का (कार्मण वर्गणाओं) जीव दव्य के साथ बंध होता है। जैनदर्शनकारों ने स्निग्धत्व और रूक्षत्व को परमाणुओं के परस्पर बंधन का कारण माना है। **स्निग्ध रूक्ष गुण निमित्तों विद्युत।**[1]

परमाणुओं में स्निग्ध और रुक्ष गुणों के होने के कारण परस्पर में जो संश्लेष संबंध होते हैं। उसे बंध कहते हैं जब रुक्ष और स्निग्ध या सजातीय रुक्ष अथवा स्निग्ध अनेक पुद्गल परमाणु आपस में मिलते हैं, तो उनका बंध हो जाता है, वे स्कंध रूप परिणत हो जाते हैं। स्पर्श के 8 भेद कहे गये हैं, इन्हीं में स्निग्ध और रूक्ष भी हैं जिसमें चिकनाई, स्नेह, आर्द्रता हो उसे स्निग्ध और उससे विपरीत रूखे, सूखे को रूक्ष कहते हैं।

जैनाचार्यों ने बंध की प्रक्रिया का अत्यंत सूक्ष्म विश्लेषण किया है। यद्यपि विज्ञान इस विश्लेषण को अपने प्रयोगों द्वारा पूर्णतः सिद्ध नहीं कर सका है, तथापि इसकी वैज्ञानिकता में कोई संदेह नहीं है। बालू सीमेंट और पानी को समानुपात से मिलाने पर जो बंध होता है, वह भी स्थूल पुद्गल बंध है। इसी प्रकार घर बनाने में जो गारा एवं ईंट, पत्थर का संयोग होता है, वह भी पुद्गल है। अणु-अणु, स्कंध-स्कंध एवं अणु-स्कंध में भी बंध होता है। कार्मण वर्गणा का जीव के साथ जो संश्लेष संबंध होता है वह भी बंध है।

प्रायोगिक और वैस्रसिक के भेद से बंध दो प्रकार का है। फिर प्रायोगिक बंध भी, 1. अजीव प्रायोगिक और 2. जीवाजीव प्रायोगिक के भेद से दो प्रकार का है। लाख और लकड़ी आदि को बंध अजीव प्रयोगिक बंध है तथा कर्म और नो कर्म का बंध जीवाजीव प्रयोगिक बंध है। वैस्रसिक बंध के भी दो भेद हैं -1. सादि बंध, 2. अनादि बंध।

धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यों का बंध अनादि है और पुद्गलों का बंध सादि बंध कहलाता है। जो द्वयणुक आदि स्कंध बनते हैं, वह सादि बंध है। बंध मुख्य रूप से दो प्रकार है- भाव बंध, 2. द्रव्य बंध।

बज्झदि कम्म जेण दु चेदण भावेण भाव बंधो सो।
कम्मादपदेसाणं अण्णोणयवेसणं इदरो।।[2]

जिस चेतन भाव से कर्म बंधता है वह तो भाव बंध है जबकि कर्म और आत्मा के प्रदेशों का परस्पर प्रवेशन रूप अर्थात् धर्म और आत्मा के प्रदेशों का परस्पर प्रवेशन रूप अर्थात् कर्म और आत्मा के प्रदेशों का एकाकार होने रूप बंध द्रव्य बंध कहलाता है अथवा मिथ्यात्व राग-आदि में परिणति रूप अशुद्ध चेतन भाव स्वरूप जो परिणाम हैं, उससे जो कर्म बंधता है वह भाव बंध कहलाता है जबकि भाव बंध के निमित्त से कर्म प्रदेशों का और आत्मा के प्रदेशों का दूध और

जल की भांति एक दूसरे में प्रवेश होना या मिल जाना ही द्रव्य बंध कहलाता है।

आचार्य उमास्वामी बंध को चार प्रकार का कहते हैं- **प्रकृतिस्थित्यनुभव प्रदेशास्तद्विधयः।**[3]

अतः बंध के चार भेद हैं - 1. प्रकृति बंध, 2. स्थिति बंध, 3 अनुभव (अनुभाग) बंध और 4. प्रदेश बंध है।

1. प्रकृति बन्ध- प्रकृति का अर्थ है- स्वभाव। **प्रकृतिः स्वभाव इत्यनर्थान्तमरम्।**[4] प्रकृति और स्वभाव एकार्थवाची शब्द हैं। उदाहरण-मैंथी का लड्डू वात-पित्त कफ का नाशक है तो अजवाइन का लड्डू पाचन में सहायक है। यह लड्डू की प्रकृति या स्वभाव है। इसी प्रकार विभिन्न कर्म परमाणुओं का स्वभाव आत्मा के विभिन्न गुणों को आच्छादित करना है, यह प्रकृति बन्ध है।

2. स्थिति बन्ध- बंधे हुये कर्मों परमाणुओं का कुछ समय तक आत्मा के साथ रहना स्थिति बंध है। **तत्स्वभावा प्रच्युतिः स्थितिः।**[5] उस स्वभाव से च्युत न होना स्थिति कहलाती है। जैसे-बकरी, गाय, भैंस आदि के दूध के माधुर्य स्वभाव च्यतु नहीं होता है।

3. रस बन्ध या अनुभाव बन्ध-तद्रस विशेषोऽनुभव।[6] कर्मों के विशेष (फलदान शक्ति विशेष) को अनुभाग बंध कहते हैं। उदाहरण- जिस प्रकार किसी लड्डू में मधुर रस होता है और किसी में कटु रस होता है। या कोई लड्डू कम, कोई अधिक मीठा होता है। उसी प्रकार कर्म का विपाक फल तीव्र, तीव्रतर और तीव्रतम होता है, तो किसी का मंदर, मंद, मंदतम होता है।

4. प्रदेशबन्ध- कर्म परमाणुओं का समूह प्रदेश बन्ध है। **इयत्ताऽद्रवधारणं प्रदेशः।**[7] अर्थात् कर्म रूप से परिणत पुद्गल स्कंधों के परमाणुओं की गणना को प्रदेश, बंध कहते हैं। प्रदेशों की न्यूनाधिक संख्या के आधार पर प्रदेश बन्ध होता है। जैसे कोई लड्डू छोटा है, बड़ा है वैसे ही किसी कर्म में प्रदेश अधिक होते हैं, किसी कर्म में कम होते हैं। सबसे कम प्रदेश आयु कर्म का होता है। और सबसे अधिक प्रदेश वेदनीय का माना गया है।

इस प्रकार कर्मबन्ध की पद्धति या विधि को जान लेने पर मनुष्य अपनी जीवन चर्या को कषाय और योगों से दूर रखकर कर्म बन्ध से मुक्त होने का सतत् प्रयास करते हैं। इन बंधों में से प्रकृति बंध और प्रदेश बंध योग (मन-वचन-काय) के निमित्त से उत्पन्न होते हैं। तथा स्थिति बंध और अनुभाग बंध कषाय (क्रोध-मान-माया-लोभ) के कारण होता है।

जैनाचार्यो ने बंध के 3 तीन प्रकार भी कहे हैं- 1. कर्मबंध, 2. नोकर्मबंध और भाव बंध।

कर्म के भेद से बंध 8 प्रकार का भी कहा है- 1. ज्ञानावरण 2. दर्शनावरण 3. वेदनीय 4. मोहनीय 5. आयु 6. नाम 7. गोत्र 8. अंतराय।

इस प्रकार सामान्य दृष्टि से बंध एक होते हुये भी विशेष दृष्टि से इसके अनेक-भेद-प्रभेद हो जाते हैं।

बंध का कारण-णिद्धावा वे मादा तहुक्खदा बंधो।[8] विसदृश स्निग्धता और विसदृश

रुक्षता बन्ध है।

बंध के प्रकार-बंधणे त्ति चउव्विहा कम विभासा-बंधो बंधगा बंध णिज्जं बंध विहाणे त्ति।।[9] बंध का विशेष व्याख्यान चार प्रकार का होता है- बन्ध, बन्धक, बन्धनीय और बन्ध विधान।

द्रव्य का द्रव्य के साथ तथा द्रव्य और भाव का क्रम से जो संयोग और समवाय होता है। वह बंध कहलाता है। द्रव्य और भाव के भेद से भिन्न दो प्रकार के कर्त्ता, बन्धक कहलाते हैं। बन्ध के योग्य पुद्गल द्रव्य बंधनीय कहा जाता है। प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश के भेद से भेद को प्राप्त हुये बंध के भेदों को बंध-विधान कहते हैं।

बंध प्रक्रिया- बाह्य और आभ्यन्तर कारण से जो स्नेह पर्याय उत्पन्न होती हैं, उससे पुद्गल स्निग्ध कहलाता है तथा रूखेपन के कारण पुद्गल रुक्ष कहा जाता है। पुद्गल के चिकने गुण के कारण स्निग्ध एवं रुक्ष गुण के कारण रुक्षत्व कहलाता है। स्निग्ध और रुक्ष गुण वाले दो परमाणुओं का परस्पर संश्लेष लक्षण बंध होने पर द्वयणुक गुण का स्कंध बनता है। स्निग्ध गुण के एक, दो, तीन, संख्यात्, असंख्यात् और अनंत भेद हैं। इसी प्रकार रुक्ष गुण के भी एक, दो, तीन, संख्यात् असंख्यात् और अनंत भेद हैं। इन स्निग्ध एवं रुक्ष गुण वाले परमाणु होते हैं। उदाहरण-जल, बकरी, गाय, भैंस एवं ऊंटनी के इधर और घी में उत्तरोत्तर अधिक रूप से स्नेह गुण रहता है। पांशु (धूल), कणिका और शर्करा आदि में उत्तरोत्तर न्यूनरूप से रुक्ष गुण रहता है। इसी प्रकार परमाणुओं में न्यूनाधिक रूप से स्निग्ध और रूक्ष गुण की सिद्धि होती है।

परमाणु में स्वाभाविक रूक्षता और स्निग्धता होती है। जिससे वे आपस में बंध जाते हैं और स्कंध का निर्माण करते हैं। दो परमाणु के बंध से द्वि प्रदेशी स्कंध, तीन परमाणु के जुड़ने से त्रि प्रदेशी स्कंध, चार परमाणु के मिलने से चतुः प्रदेशी स्कंध बनते हैं। स्निग्ध परमाणु का स्निग्ध परमाणु के साथ और रूक्ष परमाणु का रूक्ष परमाणु के साथ बंध सादृश्य बंध कहलाता है। स्निग्ध परमाणु का रूक्ष परमाणु के साथ बंध विदृश्य बंध कहलाता है।

बंध विधि की विशेषताएँ - 1. बंध के समय जो दो स्निग्ध शक्त्यंश वाले पुद्गल का एक, दो, तीन शक्त्यंश वाले पुद्गल से बंध नहीं होता है क्योंकि एक जघन्य संख्या वाला है, दो समान संख्या वाला है, तीन में तुल्य शक्त्यंश बनाने वाले के लिये शक्त्यंश की कमी है। अतः दो शक्त्यंश वाले का चार शक्त्यंश वाले के साथ ही बंध होता है। इसी प्रकार तीन स्निग्ध शक्त्यंश वाले का पाँच स्निग्ध शक्त्यंश वाले परमाणु के साथ बंध होता है, किन्तु आगे पीछे के स्निग्ध शक्त्यंश वाले परमाणु के साथ बंध नहीं होता है। अर्थात् जो परमाणु अपने से दो अधिक गुणों से संयुक्त हैं, उन्हीं परमाणुओं के साथ परमाणुओं का बंध होता है।

2. दो रुक्ष शक्त्यंश वाले परमाणुओं का एक, दो, तीन, रूक्ष शक्त्यंश वाले परमाणु के साथ बंध नहीं होता है। तथा 3 रुक्ष शक्त्यंश वाले परमाणु का 5 रुक्ष शक्त्यंश वाले परमाणु के साथ बंध होता है।

3. बंध होने पर जो अधिक गुण वाला परमाणु है वह हीन गुण वाले परमाणु को अपने रूप परिणमा लेता हे। उदाहरण-जैसे अधिक मीठे के रस वाला गुड़, उस पर पड़ी हुई धूलि को अपने गुण रूप से परिणमा लेता है।

4. सादृश्य बंध के लिये दो परमाणुओं की स्निग्धता अथवा रुक्षता में कम दो अंशों से अधिक का अंतर होना चाहिये। जघन्य अर्थात् न्यूनतम एक अंश वाले दो रुक्ष परमाणु अथवा दो स्निग्ध परमाणु में बंध नहीं होता। इसी प्रकार समान अंशों वाले स्निग्ध एवं रूक्ष परमाणु का बंध नहीं होता।

5. स्निग्ध और रुक्ष परमाणु के मिलने से स्कंध निश्चित रूप से बनता है, चाहे वे सम अंश वाले हों , अथवा विषम अंश वाले हो।

6. आचार्य नेमीचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती-के अनुसार-स्निग्ध-स्निग्ध पुद्गल का और रूक्ष-रूक्ष पुद्गल को परस्पर बंध नहीं होता है। किन्तु स्निग्ध-रूक्ष और रूपी-अरूपी पुद्गलों में परस्पर में बंध होता है।

7. विसदृश जाति (असमान गुण वाले) के एक समगुण की रूपी संज्ञा है और शेष की अरूपी संज्ञा है और रूपी और अरूपी का बंध होता है। तब यह सिद्ध होता है कि स्निग्ध-स्निग्ध और रूक्ष-रूक्ष का भी बंध होता है, क्योंकि स्निग्ध की अपेक्षा रुक्ष और रूक्ष की अपेक्षा स्निग्ध विसदृश जाति है।

8. सम-विषम दोनों परमाणुओं का बंध होता है। किन्तु जघन्य गुण वाले का बंध नहीं होता है।

9. आचार्य कुंदकुंद के अनुसार यदि परमाणुओं का अंश बराबर हो तो बंध नहीं होता है।

10. यदि परमाणुओं में एक अंश अधिक हो तो भी बंध नहीं होता है।

परमाणु के बंध के संबंध में जैन दर्शन के श्वेताम्बर एवं दिगम्बर परम्परा में अलग-अलग मत है।

1. श्वेताम्बर परम्परानुसार में दो जघन्य गुण वाले परमाणु में बंध नहीं होता है। यदि एक परमाणु जघन्य गुण वाला हो और दूसरा हुये, बंध नहीं हो सकता है।

2. श्वेताम्बर परम्परा में दो परमाणु की स्निग्धता रूक्षता के दो,तीन, चार, संख्यात्, अंशों का अंतर होने से भी बंध हो सकता है। जबकि दिगम्बर परम्परा में केवल दो अंश का अंतर होने पर भी बंध होता है।

3. श्वेताम्बर परम्परा जो बंध का विधान है, वह सादृश्य परमाणु के लिये है, विदृश्य परमाणुओं के लिये नहीं है। किन्तु दिगम्बर परम्परा यह बंध का विधान सादृश्य एवं विदृश्य दोनों प्रकार के परमाणुओं के लिये हैं।

श्वेताम्बर और दिगम्बर परम्परों बंध संबंधी मतभेद इस प्रकार हैं।

		श्वेताम्बर परम्परा		दिगम्बर परम्परा	
क्र.	गुण अंश	सादृश्य	विसादृश्य	सादृश्य	विसादृश्य
1	जघन्य+जघन्य	नहीं	नहीं	नहीं	नहीं
2	जघन्य+एकाधिक	नहीं	है	नहीं	नहीं
3	जघन्य+त्रैधिक	है	है	नहीं	नहीं
4	जघन्य+पंचाधिक	है	है	नहीं	नहीं
5	जघन्येतर+सम जघन्येतर	नहीं	है	नहीं	नहीं
6	जघन्येतर+एकाधिक जघन्येतर	नहीं	है	नहीं	नहीं
7	जघन्येतर+द्वैधिक जघन्येतर	है	है	है	है
8	जघन्येतर+त्रैधिक जघन्येतर	है	है	नहीं	नहीं

दिगम्बर ग्रन्थ सर्वार्थसिद्धि, षट्खण्डागम, और तत्त्वार्थ सूत्र में भी परमाणु बंध के विषय में मतभेद हैं। श्वेताम्बर ग्रन्थों में उत्तराध्ययन चूर्णि, भगवती सूत्र, प्रज्ञापना पद-45, तत्त्वार्थ भाष्यानुसारिणी टीका में मतभेद हैं। प्रासंगिक होने के कारण हम उन चार्टस् को यहाँ पर संग्रहण कर रहे हैं।

प्रज्ञापना पद, उत्तराध्ययन चूर्णि, भगवती जोड़ के अनुसार स्वीकृत यंत्र[10]

क्र.	गुणांश	सदृश	विसृदश
1	जघन्य+जघन्य	नहीं	नहीं
2	जघन्य+एकाधिक	नहीं	नहीं
3	जघन्य+द्वयधिक	है	नहीं
4	जघन्य+त्र्यादि अधिक	है	नहीं
5	जघन्येतर+सम जघन्येतर	है	है
6	जघन्येतर+एकाधिक जघन्येतर	है	है
7	जघन्येतर+द्वयधिक जघन्येतर	है	है
8	जघन्येतर+त्र्यादि अधिक जघन्येतर	है	है

बंध के संबंध में सभी परम्परायें सदृश नहीं है। दृष्टव्य यंत्र तत्त्वार्थ भाष्यानुसारिणी टीका 5/55 के अनुसार[11]

क्र.	गुणांश	सदृश	विसदृश
1	जघन्य+जघन्य	नहीं	नहीं
2	जघन्य+एकाधिक	नहीं	है
3	जघन्य+द्वयधिक	है	है
4	जघन्य+त्र्यादि अधिक	है	है
5	जघन्येतर+सम जघन्येतर	नहीं	नहीं

6	जघन्येतर+एकाधिक जघन्येतर	नहीं	है
7	जघन्येतर+द्वयधिक जघन्येतर	है	है
8	जघन्येतर+त्र्यादि अधिक जघन्येतर	है	है

दिगम्बर ग्रन्थ सर्वार्थसिद्धि के अनुसार[12]

क्र.	गुणांश	सदृश	विसृदश
1	जघन्य+जघन्य	नहीं	नहीं
2	जघन्य+एकाधिक	नहीं	नहीं
3	जघन्य+द्वयधिक	नहीं	नहीं
4	जघन्य+त्र्यादि अधिक	नहीं	नहीं
5	जघन्यतेर+सम जघन्येतर	नहीं	नहीं
6	जघन्येतर+एकाधिक जघन्येतर	नहीं	नहीं
7	जघन्येतर+द्वयधिकजघन्येतर	है	है
8	जघन्येतर+त्र्यादि अधिक जघन्येतर	नहीं	नहीं

दिगम्बर ग्रन्थ षट्खण्डागम के अनुसार[13]

क्र.	गुणांश	सदृश	विसृदश
1	जघन्य+जघन्य	नहीं	नहीं
2	जघन्य+एकाधिक अधिक	नहीं	नहीं
3	जघन्येतर+सम जघन्येतर	नहीं	है
4	जघन्येतर+एकाधिक जघन्येतर	नहीं	है
5	जघन्येतर+द्वयधिक जघेन्यतर	है	है
6	जघन्येतर+त्र्यादि अधिक जघेन्यतर	नहीं	है

दिगम्बर ग्रन्थ तत्त्वार्थसूत्र के अनुसार[14]

क्र.	गुणांश	सदृश	विसृदश
1	जघन्य+जघन्य	नहीं	नहीं
2	जघन्य+एकाधिक	नहीं	नहीं
3	जघन्येतर+समत जघन्येतर	नहीं	नहीं
4	जघन्येतर+एकाधिक जघेन्यतर	नहीं	नहीं
5	जघन्येतर+द्वयधिक जघेन्यतर	है	है
6	जघन्येतर+त्र्यादि अधिक जघेन्यतर	नहीं	नहीं

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि परमाणु के बंध के संदर्भ में श्वेताम्बर जैन आचार्य एवं दिगम्बर आचार्यों के मतों में भिन्नता हैं। परन्तु दोनों मतों का विवरण तुलनात्मक रूप से यहाँ प्रस्तुत किया गया।

आगम दर्शन

पूर्व गत श्रुत ज्ञान स्वरूप एवं वर्ण्य विषय

क्र.	पूर्व नाम	वस्तु	प्राभृत	पद	विषय वस्तु
1	उत्पाद पूर्व	10	200	10000000	6 द्रव्यों के उत्पाद व्यय ध्रौव्य का वर्णन
2	अग्रणीय पूर्व	14	280	9600000	षट् खंडागम के विषय 600 नयों दुर्नयों का वर्णन
3	वीर्यानुप्रवाद	8	108	7000000	आत्मवीर्य, परवीर्य उभयवीर्य क्षेत्रकाल भव तपवीर्य का वर्णन
4	अस्ति नास्ति प्रवाद	18	380	6000000	स्व चतुष्टय रूप अस्ति पर चतुष्टय रूप नास्ति का वर्णन
5.	ज्ञान प्रवाद	12	240	9999999	आठ ज्ञानों का वर्णन 5 सुज्ञान3 कुतान का वर्णन
6.	सत्य प्रवाद	12	40	1000006	असत्य वचन और 12 प्रकार की सत्यभाषा का वर्णन
7.	आत्म प्रवाद	16	320	260000000	निश्चय व्यवहार नय की अपेक्षा आत्मा का वर्णन
8.	कर्म प्रवाद	20	400	18000000	आठों कर्मो के स्वरुप कारण भेदों का वर्णन
9.	प्रत्यख्यान	30	600	8400000	भावद्य क्रिया के त्याग का नामद्येय वर्णन 5 समिति 3 गुप्ति का वर्णन
10.	विद्यानुवाद	15	300	11000000	600 लघु 500 महा विद्याओं एवं 8 महानिमित्तों का वर्णन
11.	कल्याणनामधेय	10	200	260000000	फलित ज्योतिष का वर्णन एवं गणित का वर्णन
12.	प्राणवाद	10	200	130000000	अष्टांग आयुर्वेद का वर्णन
13.	क्रिया विशाल	10	200	90000000	72 कला 64 गुण शिक्षा शिल्प काव्य छंद का वर्णन
14.	लोकविन्दुसार	10	200	125000000	8 प्रकार के व्यवहार 4 प्रकार के बीज मोक्षप्राप्ति की क्रियाओं एवं मोक्ष सुख का वर्णन

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
जनवरी 2024

गुरु चरणों में

प्रथम-

मिला योग शुभ गुरु दास को
मिली प्रसन्नता मन उदास को
आ गई क्षीणता आवरणों में
पुण्योदय से गुरु चरणों में

श्रीमती अर्चना जैन, बरायठा

द्वितीय-

अंर्तशक्ति बोध मिलता है
गुरु सूरज से कमल खिला है
श्रेष्ठ पर्व है सब पर्वों में
जब बैठा में गुरु चरणों में

श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

तृतीय-

गुरुदेव की कृपा सबसे निराली
ये ही होली यही दिवाली
हर सवाल का उत्तर इनमें
समाधान सब गुरु चरणों में

श्रीमती अंजू जैन घुवारा

वर्ग पहेली क्र. 290
दिसम्बर 2023 के विजेता

प्रथम : श्रीमती पुष्पा जैन, राहतगढ़
द्वितीय : श्रीमती आराधना जैन, गुना
तृतीय : अभिषेक जैन, अहमदाबाद

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ द्द अ द्ढ ण् आ अ ल् अ र् ष् द्द
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :
अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

शान्ति कहाँ

निर्वाप्यते ज्वलन्नाग्निर्जलेन सुमहानपि।
उत्तिष्ठेद् यद्यसौ तस्मात्तस्य शान्तिः कुतोन्यतः ।।

हे राजन्! जलती हुई अग्नि कितनी ही महान क्यों न हो अन्त में जल के द्वारा शान्त कर दी जाती है। फिर यदि जल से ही अग्नि उठने लगे तो अन्य किस पदार्थ से उसकी शान्ति हो सकती है।

साधोः शीतलशीलस्य तापनं न हि शान्तये।
गाढ़तप्तो दहत्येव तयोत्मा विकृति गतः ।।

शीतल स्वभाव के धारक साधु को सन्ताप पहुँचाना शान्ति के लिये नहीं है क्योंकि जिस प्रकार अधिक तपाया हुआ पानी विकृत होकर जला ही देता है उसी प्रकार अधिक दुखी किया हुआ साधु विकृत होकर जला ही देता है- शाप आदि से नष्ट ही कर देता है।

शुद्धं दर्शयता भावं वद किं न कृतं त्वया।
तदेवोपकृतं पुसां यत् सद्भावदर्शनम् ।।

इस प्रकार मधुरवचन बोलने वाले उस विद्याधर से मैंने कहा कि जब आप मेरे प्रति इस प्रकार शुभ भाव दिखला रहे हैं तब मेरा सब काम हो चुका। कहिये शुद्ध अभिप्रायको दिखाते हुये आपने मेरा क्या हित नहीं किया है। मनुष्यों को जो शुभ भाव को दिखाना है वही तो उनका उपकार है।

केरियर

पर्यटन में रोजगार

पर्यटन उद्योग देश में सर्वाधिक विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाला उद्योग है। भारत की समृद्ध विविधता तथा पर्यटक क्षमता के कारण हम पर्यटकों को अनेक अवसर तथा मनमोहक दर्शनीय स्थल उपलब्ध करा सकते हैं।

यह उद्योग दूसरे उद्योग में भी बृद्धी के लिये जिम्मेदार है। जैसे हॉटेल, परिवहन, नागरिक उड्डयन एवं व्यवसाय उद्योग।

कार्य संरचना- सेवा उद्योग में कार्यरत होने का अर्थ है व्यक्ति को लगातार जनता से संपर्क करना। इसके लिये एक आकर्षक एवं विनम्र व्यक्तित्व की अत्यंत आवश्यकता है। पर्यटन उद्योग में बहुत से क्षेत्र सम्मिलित हैं जैसे एयरलाईन, रेल्वे, सड़क परिवहन, समुद्री परिवहन द्वारा यात्रा की विस्तार से जानकारी प्रदान करने की व्यवस्था करना। इसमें अन्य क्षेत्र जैसे पासपोर्ट के लिये बीजा अधिकारियो से संपर्क तथा समन्वयन अपूर्तिकर्त्ताओं , होटलकार्मिको तथा अन्य विभिन्न एजंटों से संपर्क रखना शामिल है।

रोजगार के अवसर- ट्रेवल एजेंसी, टूर ऑपरेटर, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एयरलाईन, होटल, परिवहन तथा कार्गो कंपनियों तथा सरकारी पर्यटन विभाग जिसमें केन्द्र और राज्य पर्यटन शामिल है। इत्यादि जगह रोजगार उपलब्ध है।

आवश्यक योग्यता- देश में बहुत से संस्थान पर्यटन उद्योग के विभिन्न पहलूओं से संबधित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का संचालन कर रहे हैं। जैसे भारतीय पर्यटन प्रबंधन संस्थान दिल्ली, पाठ्यक्रम के मानकीकरण के लिये निर्देश उपलब्ध करता है। इस प्रकार की शिक्षा पत्राचार के माध्यम से भी प्राप्त कर सकते हैं।

■ **1 दिसम्बर**

- 57 दिन के युद्ध विराम के उपरान्त इजरायल ने पुनः युद्ध का विगुल गाजा में बजाया।
- ब्रिटेन के महाराजा चार्ल्स नस्लीय विवाद में उलझे।
- मुठभेड में लश्कर का आतंकी ढेर हुआ।

■ **2 दिसम्बर**

- तिहाड़ जेल के प्रशासन ने 50 कर्मियों को बर्खास्त किया।
- तरनतारन (पंजाब) : सीमा सुरक्षा बल ने दो पाकिस्तानी पिस्तौलें ड्रोन के साथ बरामद की।
- पाकिस्तान तहरीफ ए इंसाफ पार्टी के अध्यक्ष बैरिस्टर गोहरखान चुने गये।

■ **3 दिसम्बर**

- 4 राज्यों की विधानसभा के परिणाम आये भाजपा ने म.प्र में 163, राजस्थान में 115 और छत्तीसगढ़ में 54 सीटें जीती।
- इजरायली सेना दक्षिण गाजा की ओर बढ़ी इलाकों की खाली करने का आदेश दिया।
- मनीलाः फिलीपींस में बम फटा 4 की मौत हुई।

■ **4 दिसम्बर**

- आईजोलः सोराम पीपुल्स यूपमेन्ट ने 27 सीटें जीत कर इतिहास रचा।
- हैदराबादः भारतीय वायुसेना का प्रशिक्षण विमान दुर्घटना ग्रस्त हुआ 2 पायलेट की मौत हुई।
- चैन्नई : बाढ में स्कूल बंद हुये एयरपोर्ट की उड़ाने रद्द हुई 5 लोगों की मौत हुई।

■ **5 दिसम्बर**

- खालिस्तानी आतंकी लखवीर सिंह रोडे का निधन हुआ।
- जयपुरः करणी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुखदेवसिंह की हत्या घर में घुसकर गोली मारकर की हत्यारे फरार हुये।
- इंडिया गठबंधन की दिल्ली में होने वाली बैठक स्थिगित हुई।

■ **6 दिसम्बर**

- पाकिस्तान में भारत के दुश्मन आतंकी हंजाला अदनान को मार गिराया।
- नई दिल्लीः केन्द्रीय मंत्रियों सहित 11 सांसदों ने इस्तीफा दिया।
- गुजरात का गरबा विश्वविरासत की सूची में शामिल किया गया।

■ **7 दिसम्बर**

- पाकिस्तानी युवती जावरिया खान अपने प्रेमी समीर खान से मिलने कोलकाता पहुँची।
- यूक्रेन के पूर्व सांसद इलिया कीव की हत्या रूस में हुई यूक्रेनी सेना की खुफिया ऐजेन्सी ने कहा गद्दारों का यही हाल होगा।
- हैदराबादः तेलांगना के मुख्यमंत्री पद की शपथ रेवंत रेड्डी ने ली।

■ **8 दिसम्बर**

- तृणमूल काँग्रेस सांसद महुआ मोइत्रा को लोकसभा से पैसा लेकर सवाल पूँछने के आरोप में निष्कासित किया गया।
- राज्यसभा सांसद धीरज साहू के

ऑफिस से 200 करोड़ नगदी रूपये इनकम टैक्स विभाग ने बरामद किये।

- जो राम पीपुल्स मूवमेंट के नेता लाल दुहोमा ने मिजोरम के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली।

■ 9 दिसम्बर

- एन.आई.ए. ने महाराष्ट्र और कर्नाटक के 4 ठिकानों पर छापे मारे 15 संदिग्ध गिरफ्तार हुये। यह कार्रवाई आई.एस. के खिलाफ हुई।

- बसपा ने सांसद दानिश अली को पार्टी से निलम्बित किया।

- सुकामा (छग.) जिले में 5 महिला सहित 20 नक्सलियों ने आत्म समर्पण किया इन्होंने हिंसा का रास्ता छोड़ा।

■ 10 दिसम्बर

- करनी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुखदेव सिंह की हत्या आरोपी सहित राठौड़ नितिन फौजी उधम सिंह पुलिस की गिरफ्त में आये।

- छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री पद हेतु विष्णुदेव साय का नाम तय हुआ।

- मायावती ने बसपा का उत्तराधिकारी आकाश आनंद को बनाया वह उनके भतीजे हैं।

■ 11 दिसम्बर

- म.प्र. के मुख्यमंत्री पद पर मोहन यादव का नाम घोषित हुआ उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा और राजेन्द्र शुक्ला का नाम तय हुआ।

- सुप्रीम कोर्ट ने 370 को हटाने का फैसला सही माना फैसला 476 पेज का आया।

- अपनी सांसदी बचाने के लिये टी.एम.सी नेता महुआ मोइत्रा सुप्रीम कोर्ट पहुंची।

■ 12 दिसम्बर

- राजस्थान मुख्यमंत्री पद हेतु भजनलाल शर्मा का नाम तय हुआ तथा उपमुख्यमंत्री हेतु दिया कुमारी और डॉ. प्रेमचंद वैरवा का नाम तय हुआ।

- गुजरात हाईकोर्ट ने कहा कि जनता के आराम के लिये मासूम पशुओं की बलि नहीं दी जा सकती।

- पेशावरः पाक के आर्मी बेस पर आत्मघाती हमला हुआ 25 सैनिकों की मौत हुई 34 घायल हुए।

■ 13 दिसम्बर

- संसद आतंकी हमले की 22वीं बरसी पर संसद में घुसपैठ हुई कुल घुसपैठिया 6 थे 5 पकड़े गये एक फरार हुआ।

- महादेव बेटिंग एप के मालिक रवि उप्पाल को दुबई पुलिस ने हिरासत में लिया इसी मामले में साहिल खान को अग्रिम जमानत नहीं मिली।

- मोहन यादव ने म.प्र. मुख्यमंत्री पद की शपथ ली तथा छत्तीसगढ़ में विष्णुदेव साय ने भी मुख्यमंत्री पद की शपथ ली।

■ 14 दिसम्बर

- इलाहाबाद हाईकोर्ट ने श्री कृष्ण जन्म भूमि के बगल में बनी ईदगाह मस्जिद के सर्वे का आदेश दिया।

- विख्यात व्यंगकार मधु पांडे का निधन हुआ वे 82 वर्ष के थे।

- 2024 बुकर अवार्ड के जज पैनल में संगीतकार नितिन साहनी शामिल हुये।

■ 15 दिसम्बर

- नाबालिग के साथ दुष्कर्म के मामले में पूर्व विधायक रामदुलार गौड़ को कोर्ट से 25 साल की सजा सुनाई।

- सुप्रीम कोर्ट ने शिवसेना के बागी विधायकों की अयोग्यता पर फैसला करने के लिये अध्यक्ष राहुल नार्वेकर को 10 जनवरी तक का समय दिया।

- संसद सुरक्षा में सेंध लगाने वाले समूह के मास्टरमाइंड ललित झा ने समर्पण किया।

■ 16 दिसम्बर

- भारत की महिला क्रिकेट टीम ने टेस्ट मैच में इग्लैंड को 347 रन से हराया।

- म.प्र. काँग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष जीतू पटवारी बने।

- जापान ने गाय के गोवर से रॉकेट लांच किया गोबर से बायोमैथन गैस बनाकर उससे लांच।

■ 17 दिसम्बर

- नागपुरः महानगर से 40 कि.मी बाजार गांव में बारूद कारखाने में भीषण धमाका हुआ 6 महिला सहित 9 लोगों की मौत हुई।

- म.प्र. विधानसभा के प्रोटेम अध्यक्ष गोपाल भार्गव बने।

- सूरत : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दुनिया के सबसे बड़े ऑफिस डायमण्ड बोर्स का उद्घाटन किया।

■ 18 दिसम्बर

- संसद के दोनों सदनों में भारी हंगामा हुआ स्पीकर सभापति सख्त हुये 78 सांसदों को निलंबित किया।

-ए.एस.आई ने ज्ञानवापी परिसर की सर्वे रिर्पोट जिला अदालत में सौंपी।

- वाराणसीः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वर्वेद महामंदिर का उद्घाटन किया यह 180 फुट ऊंचा है।

■ 19 दिसम्बर

- महाराष्ट्र विधान मंडल ने प्रायवेट यूनिवर्सिटी बिल पारित किया।

- पूर्व उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी और मुरली मनोहर जोशी को विश्व हिन्दु परिषद ने अयोध्या में होने वाली प्राण प्रतिष्ठा का न्योता दिया।

- इंडिया बैठक में प्रधानमंत्री चेहरे के रूप में खरगे का नाम चला।

■ 20 दिसम्बर

- राज्य सभा में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के सम्मान में सत्तापक्ष 10 मिनट तक खड़ा रहा।

- लोक सभा में औपिनवेशिक काल से चले आ रहे 3 कानूनों को रद्द करने वाले 3 विधेयक पारित हुये।

- जयपुरः जुबेर खान एवं युनिस खान ने विधायक पद की शपथ संस्कृत में ली।

■ 21 दिसम्बर

- राजौरी (झारखंड) घात लगाकर आतंकवादियों ने सैन्य वाहन पर हमला किया 4 सैनिक शहीद हुये 3 जवान घायल हुये।

-भारतीय कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष पद पर संजय सिंह का निर्वाचन हुआ।

- तमिलनाडु के पूर्व मंत्री उच्च न्यायालय ने पोनपुडी को अधिक सम्पत्ति रखने के मामले में 3 साल की सजा ने सुनाई।

■ 22 दिसम्बर

- काँग्रेस नेता पूर्व मंत्री सुनील केदार सहित 6 आरोपियों को सहकारी बैंक घोटाले मामले में 5 वर्ष की सश्रम कैद की सजा सुनाई।

- कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष संजय सिंह को चुने जाने के विरोध में बजरंग पूनिया ने पद्मश्री सम्मान लौटाया।

- पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को दस्तावेज लीक मामले में सुप्रीम कोर्ट ने राहत दी जमानत दे दी।

■ 23 दिसम्बर

- पुंछः तीन ग्रामीणों के शव मिले जहाँ सेना पर हमला हुआ उसी के करीब मिले।

- भारतीय कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष संजयसिंह के विरोध में गंगू पहलचान उर्फ धीरेन्द्र सिंह ने पद्मश्री सम्मान लौटाने की घोषणा की।

- इजरायली सेना ने हमास के आतंक का मुख्य ठिकाना ध्वस्त करने का दावा किया।

■ 24 दिसम्बर

- श्रीनगरः मस्जिद में अजान देते समय पूर्व एस.एस.पी. मोहम्मद शफी मोर की आतंकियों ने हत्या कर दी।

- तमिलनाडु के सांसद दया निधिमारन ने कहा हिन्दी वाले तमिलनाडु में टॉयलेट साफ करते हैं।

- तेल अवीव- हमास ने 14 इजरायली सैनिकों को मौत दी।

■ 25 दिसम्बर

- राजौरी (जे.के.) देश की गली में आम नागरिकों के 3 शव मिलने बाद पहली बार ब्रिगेडियर सहित अधिकारी स्थानांतरित किये।

- भोपालः 5 महिला सहित 28 विधायकों ने मंत्री मंडल की शपथ ली।

- मध्य गाजा में इजरायली हमले में 88 लोगों की मौत हुई।

■ 26 दिसम्बर

- भारत ने अरबसागर में मालवाहक जहाजों के बीच सुरक्षा चक्र बनाया।

- गोंदिया (महा.) बरातियों का वाहन ईंट के ढेर से टकराने से 3 लोगों की मौत हुई।

- यूक्रेन के हमले में रूस का 369 फीट लंबा ड्रोन वाहक पोत नष्ट हुआ।

■ 27 दिसम्बर

- पाकपूर्व विदेशमंत्री शाह महसूद कुरैशी को जमानत पर रिहा होने के बाद भी पुलिस ने धकियाते हुये जेल में डाला।

- जम्मू-कश्मीर की मुस्लिम लीग पर प्रतिबंध लगा।

- पश्चिमबंगाल के नये डीजीपी राजीव कुमार नियुक्त हुये।

■ 28 दिसम्बर

- नागपुरः कांग्रेस के 139 वें स्थापना दिवस पर रैली का आयोजन हुआ।

- फिल्म अभिनेता एवं राजनेता वियजकांत का निधन हुआ वे 71 वर्ष के थे।

- कतर में 16 महिने से बंद 8 पूर्व नौ सैनिकों की मौत की सजा रद्द हुई।

■ 29 दिसम्बर

- जनता दल यू. के अध्यक्ष नीतिश कुमार बने लल्लन सिंह ने इस्तीफा दिया।

- उल्फा के साथ केन्द्र और असम सरकार ने समझौता किया।

- विश्व जनसंख्या 800 करोड़ पहुँची।

- रूस ने यूक्रेन पर 122 मिसाइलें दागी और 36 ड्रोन से बमबारी की।

■ 30 दिसम्बर

- पहला यात्री विमान दिल्ली से अयोध्या आया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन का उद्घाटन किया।

- राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को शपथ राज्यपाल कलराज मिश्र ने दिलाई।

- सीहोरः कुछ उपद्रवी तत्त्व ने आर.एस.एस कार्यालय पर पथराव किया।

■ 30 दिसम्बर

- वित्त अयोग के 16वें चैयरमैन अरविंद पनगढ़िया बने।

- अलगाववादी संगठन तहीक ए हुर्रियत पर प्रतिबंध केन्द्र सरकार ने लगाया।

- ब्लैक होल का रहस्य खोजने इसरो ने उपग्रह का प्रक्षेपण किया।

इसे भी जानिये

विश्व के प्रमुख संगठन और उनके मुख्यालय

क्र.	संगठन	मुख्यालय
01	गैट (Gatt)	जेनेवा
02	एमनेस्टी इंटरनेशनल	लंदन
03	ऐशियाई विकास बैंक (ADB)	मनीला
04	दक्षिण पूर्वी एशियाई राष्ट्रों का संघ (Asean)	जकार्ता
05	नाटो (Nato)	ब्रुसेल्स
06	अफ्रीकी एकता संगठन (OAU)	आदिस-अबाबा
07	रेडक्रॉस (Red Cross)	जेनेवा
08	सार्क (SAARC)	काठमाण्डू
09	संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP)	नैरोबी
10	इन्टरपोल (Interpol)	पेरीस (लेओंस)
11	विश्व व्यापार संगठन (WTO)	जेनेवा
12	अमेरीकी राज्यों का संगठन	वाशिंगटन डी.सी.
13	विश्व वन्य जीव संरक्षण कोष (OAS)	ग्लांड (स्विजरलैंड)
14	अंतराष्ट्रीय ओलंपिक संघ (WWF)	लुसाने
15	पेट्रोलिएम उत्पादक देशों का संगठन (OPEC)	वियाना

दिशा बोध

मेघ-महिमा

1. समय पर न चूकनेवाली मेघवर्षा से ही धरती अपने को धारण किये हुए है, और इसीलिए लोग उस वर्षा जल को 'अमृत' कहते हैं।
2. जितने भी स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ हैं, वे सब वर्षा के द्वारा ही मनुष्य को प्राप्त होते हैं; और जल स्वयं ही भोजन का एक मुख्य अंग है।
3. यदि पानी न बरसे तो सारी पृथ्वी पर अकाल का प्रकोप छा जाये, भले ही वह चारों ओर समुद्र से घिरी हुई है।
4. यदि वर्षा के झरने (मेघवर्षा) सूख जावें, तो किसान लोग हल जोतना ही छोड़ देंगे।
5. वर्षा ही नष्ट करती है और फिर वह वर्षा ही है, जो नष्ट हुई वस्तुओं को फिर से हरा-भरा कर देती है।
6. यदि आकाश से पानी की बौछारें आना बन्द हो जाएँ, तो घास तक का उगना बन्द हो जाएगा।
7. स्वयं शक्तिशाली समुद्र में ही कुत्सित वीभत्सता का दारुण प्रकोप हो उठे, यदि आकाश उसके जल को पान करना और फिर उसे वापिस देना अस्वीकार कर दे।
8. यदि मेघों का जल सूख जायें, तो पृथ्वी पर न यज्ञ-याग होंगे और न भोज ही दिये जाएँगे।
9. यदि ऊपर से जलधारायें आना बन्द हो जाएँ; तो फिर इस पृथ्वी पर न कहीं दान रहे, न कहीं तप।
10. पानी के बिना संसार में कोई काम नहीं चल सकता, इसलिए सदाचार भी अन्ततः वर्षा पर ही आश्रित है।

क्या निमित्त सर्वथा अकिंचित्कर है ?

✻ डॉ. अनिल कुमार जैन, जयपुर ✻

जो कारण स्वयं कार्यरूप में परिणत हो जाय वह उपादान कारण है और जो स्वयं कार्यरुप परिणत न हो, पर उस परिणमन में सहायता दे वह निमित्त या सहकारी कारण कहा जाता है। घट में मिट्टी उपादान कारण है, क्योंकि वह स्वयं घड़ा बनती है और कुंभकार निमित्त है क्योंकि वह स्वयं घड़ा तो नहीं बनता पर घड़ा बनने में सहायता देता है। प्रत्येक सत् या द्रव्य प्रतिक्षण अपनी पूर्व पर्याय को छोड़कर उत्तर पर्याय को धारण करते हैं, यह एक निरपवाद नियम है। सभी प्रतिक्षण अपनी धारा में परिवर्तित होकर सदृश या विसदृश अवस्थाओं को प्राप्त होते हैं। उस परिवर्तन-धारा में जो सामग्री उपस्थित होती है या कराई जाती है उसके बलाबल से परिवर्तन में होने वाला प्रभाव तरतमभाव प्राप्त करता है। जल में यदि कोई व्यक्ति लाल रंग घोल देता है तो उस लालरंग की शक्ति के अनुसार वह जल लाल हो जाता है और यदि नीला रंग घोलता है तो जल नीला हो जाता है। यह निश्चित है कि लाल या नीला परिणमन, जो भी जल में हो रहा है उसमें जलपुंज उपादान है क्योंकि वही जल अपना पुराना रूप बदलकर लाल या नीला हुआ है। उसमें निमित्त या सहकारी होता है वह घोला हुआ लाल रंग या नीला रंग। धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य, कालद्रव्य और शुद्ध जीवद्रव्य के परिणमन सदा एक से होते हैं, उनमें बाहरी प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि इनमें वैभाविक शक्ति नहीं है। शुद्ध जीव में वैभाविक शक्ति का सदा स्वाभाविक परिणमन होता है। इनकी उपादान परम्परा सुनिश्चित है और इन पर निमित्त का कोई प्रभाव नहीं होता है। ये सभी द्रव्य निष्क्रिय हैं। शुद्ध जीव में भी एक देश से दूसरे देश को प्राप्त होने रूप क्रिया नहीं होती। शुद्ध जीव में उत्पाद-व्यव-ध्रौव्यात्मक निज स्वभाव के कारण अपने अगुरुलघुगुण के सद्भाव से हमेशा समान परिणमन होता रहता है। संसारी जीव और पुद्गल द्रव्य में वैभाविकी शक्ति है। अतः जिस प्रकार की सामग्री जिस समय उपस्थित होती है उसकी शक्ति की तरतमता से वैसा-वैसा उपादान बदलता जाता है। यद्यपि निमित्तभूत सामग्री किसी सर्वथा असद्भूत परिणमन को उस द्रव्य में नहीं लाती, किन्तु उस द्रव्य के जो शक्य-संभाव्य परिणमन हैं, उन्हीं में से उस पर्याय से होने वाला अमुक परिणमन उत्पन्न हो जाता है। जैसे प्रत्येक पुद्गल अणु में समानरूप से पुद्गलजन्य यावत् परिणमनों की योग्यता है। प्रत्येक अणु अपनी स्कन्ध अवस्था में कपड़ा बन सकता है, सोना बन सकता है, घड़ा बन सकता है और पत्थर बन सकता है तथा तैल के आकार हो सकता है, परन्तु लाख प्रयत्न करने पर भी पत्थररूप पुद्गल से तैल नहीं निकल सकता, यद्यपि तैल पुद्गल की ही पर्याय है। मिट्टी से कपड़ा नहीं बन सकता, यद्यपि कपड़ा भी पुद्गल का ही एक विशेष परिणमन है। हाँ, जब पत्थर-स्कन्ध के पुद्गलाणु खिरकर मिट्टी में मिल जायें और खाद बनकर तैल के पौधो में पहुंचकर तिल बीज बन जायें तो

उसमें तैल निकल सकता है। इसी प्रकार मिट्टी कपास बनकर कपड़ा बन सकती है पर साक्षात् नहीं, तात्पर्य यह है कि पुद्‌गलाणुओं में समान शक्ति होने पर भी अमुक स्कन्धों से साक्षात् उन्हीं कार्यों का विकास हो सकता है जो उस पर्याय से शक्य हों और जिनकी निमित्त सामग्री उपस्थित हो। अतः संसारी जीव और पुद्‌गलों की स्थिति उस मोम जैसी है जिसे संभव साँचों में ढाला जा सकता है और जो विभिन्न साँचों में ढलते जाते हैं।

निमित्तभूत पुद्‌गल या जीव परस्पर भी प्रभावित होकर विभिन्न परिणमनों के आधार बन जाते हैं। एक कच्चा घड़ा अग्नि में जब पकाया जाता है तब उसमें अनेक जगह के पुद्‌गल स्कन्धों में अनेक प्रकार से रूपादि का परिपाक होता है। इसी प्रकार अग्नि में भी सन्निधान से विचित्र परिणमन होते हैं। एक ही आमफल में परिपाक के अनुसार कहीं खट्टा और कहीं मीठा रस तथा कहीं मृदु और कहीं कठोर स्पर्श एवं कहीं पीतरूप और हरा रूप हमारे रोज के अनुभव की बात है। इससे उस आम्र स्कन्धगत परमाणुओं का स्थूल आम्र पर्याय में शामिल रहने पर भी स्वतन्त्र अस्तित्व भी बराबर बना रहता है, यह निर्विवाद सिद्ध है। उस स्कन्ध में समाहित परमाणुओं का अपना-अपना स्वतन्त्र परिणमन प्रायः एक प्रकार का होता है। जिस प्रकार अनेक पुद्‌गलाणु द्रव्य सम्मिलित होकर एक साधारण स्कन्ध पर्याय का निर्माण कर लेते हैं फिर भी स्वतन्त्र हैं उसी प्रकार संसारी जीवों में भी अविकसित दशा में अर्थात् निगोद की अवस्था में अनंत जीवों के साधारण सदृश परिणमन की स्थिति हो जाती है और उनका उस समय साधारण आहार, साधारण श्वासोच्छवास, साधारण जीवन और साधारण मरण होता है।[1] ऐसी प्रवाहपतित साधारण अवस्था होने पर उनका अपना व्यक्तित्व नष्ट नहीं होता, प्रत्येक अपना विकास करने में स्वतन्त्र रहते हैं। उन्हीं की चेतना विकसित होकर कीड़ा-मकोड़ा, पशु-पक्षी, मनुष्य-देव आदि विविध विकास की श्रेणियों पर पहुँच जाती है। वही कर्मबन्ध काटकर सिद्ध भी हो जाती है। इस प्रकार प्रत्येक द्रव्य अपने परिणामी स्वभाव के कारण उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यात्मक परिणमन करता है। किसी क्षण परिणामशून्य नहीं हो सकते। **तद्भावः परिणामः**[2] उस सत् का उसी रूप में होना, अपनी सीमा को नहीं लाँघकर होते रहना, प्रतिक्षण पर्यायरूप से प्रवाहमान होना ही परिणाम है।

निमित्तभाव स्वभावगत- अमृतचन्द्राचार्य ने समयसार की आत्मख्याति टीका में कहा है कि द्रव्य के स्वभाव का अथवा उसके कार्य के स्वभाव का अन्य द्रव्य की कार्योत्पत्ति संभव हो सकने के अनुकूल होना ही निमित्त भाव है, जैसे कुम्भकार के घटोत्पत्ति के अनुकूल होने वाले शारीरिक और मानसिक व्यापार में घट में प्रति निमत्तभाव है। अतः निमित्त भाव द्रव्य के स्वभाव में अथवा उसके कार्य के स्वभाव में विद्यमान होता है। धर्मद्रव्य के स्वभाव में जीव और पुद्‌गल की गति के प्रति निमित्तभाव विद्यमान है, अधर्मद्रव्य के स्वभाव में उनकी स्थिति के प्रति निमित्तभाव है, आकाशद्रव्य के स्वभाव में समस्त द्रव्यों का अवगाहनहेतुत्व मौजूद है। ज्ञानावरण कर्म के उदय में जीव का ज्ञान आवृत होने का निमित्तभाव है आदि।

आचार्य कुन्दकुन्द ने कहा है-जीव के परिणामों का निमित्त मिलने पर पुद्‌गल द्रव्य स्वयमेव कर्म रूप से परिणमित हो जाता है और पुद्‌गलकर्मों का निमित्त प्राप्त होने पर जीव भी स्वतः शुभाशुभ भाव रूप से परिणमन करने लगता है।

जीवपरिणामहेदुं कम्मत्तं पुग्गला परिणमंति।

पुग्गलकम्मणिमित्तं तहेव जीवो वि परिणमइ॥[3]

यदि निमित्तभूत पदार्थ का स्वभाव ऐसा न हो कि उससे उपादान की कार्यसाथ्र्य का अवरोध दूर हो सके, तो उसे निमित्त ही नहीं कहा जा सकता। अष्टसहस्री में कहा गया है-

तदसामर्थ्यमखण्डयदकिञ्चित्करं किं सहकारिकारणं स्यात्।[4]

अर्थात् कार्योत्पादक क्षमता होते हुये भी, यदि अनुकूल परिस्थिति का अभाव हो तो उपादान कार्योत्पत्ति में असमर्थ रहता है। उस असामर्थ्य को दूर न करते हुये यदि सहकारी कारण (निमित्त) अकिञ्चित्कर बना रहता है, तो सहकारी कारण से क्या प्रयोजन।

इस कथन से यही बात पुष्ट होती है कि निमित्तभूत पदार्थ के स्वभाव में ही वह धर्म होता, जिससे उपादान की कार्य परिणति में बाधक तत्त्व समाप्त हो जाता है और अनुकूल परिस्थिति निर्मित हो जाती है।

निमित्त के बिना कार्य असम्भव- भट्ट अकलंक देव ने कहा है- कि इस लोक में कोई भी कार्य अनेक कारणों से सिद्ध होने योग्य देखा जाता है। जैसे मिट्टी का पिण्ड घटकार्यरूप परिणमन करने से आभ्यन्तर सामर्थ्य रखते हुये भी कुम्हार, दण्ड, चक्र, सूत्र जल आदि अनेक बाह्य उपकरणों की अपेक्षा रखता है और उनके होने पर ही घटपर्याय के रूप में आविर्भूत होता है। कुम्हार आदि बाह्य साधनों के बिना अकेला मृत्पिण्ड घटरूप से उत्पन्न होने में समर्थ नहीं है।[5]

धर्मद्रव्य के बिना जीव और पुद्‌गल की गति-परिणति असम्भव है, अधर्म द्रव्य के बिना स्थिति परिणाम असम्भव है, आकाश के बिना अवगाहन सम्भव नही है। कर्मोदय के अभाव में जीव के मोहरागादि परिणाम असम्भव हैं। वास्तव में विचार किये जाये तो आत्मा स्वयं तो रागादि भावों का अकर्त्ता ही है। परद्रव्य ही रागादिभावों की उत्पत्ति का निमित्त है।

अन्वयव्यतिरेक की अपेक्षा निमित्त संज्ञा-निमित्त के बिना कार्य की उत्पत्ति असम्भव है, इसलिये निमित्त उसे कहते हैं, जिसके सद्भाव में कार्य का सद्भाव होता है और अभाव में कार्य का अभाव। श्री वीरसेनाचार्य ने कहा है-

जस्सण्णय-वदिरेगेहि जस्सण्णयवदिरेगा होंति तं तस्य कज्जमियरं च कारणं।[6]

अर्थात् जिसके अन्वय और व्यतिरेक के साथ जिसका अन्वय और व्यतिरेक होता है, वह उसका कार्य होता है और दूसरा कारण।

जैसे प्रत्याख्यानावरण कषाय का बन्ध स्वयं के उदय में ही होता है और स्वयं के उदयाभाव में बन्ध का अभाव देखा जाता है।इयलिसे प्रत्याख्यानावरण कषाय का उदय ही अपने बन्ध का कारण सिद्ध होता है।[7] कर्मोदय के सद्भाव में ही रागादिभावों का सद्भाव होता है और अभाव

में रागादि का अभाव है। अतः सिद्ध होता है कि कर्मोदय ही रागादिभावों की उत्पत्ति का निमित्त है।

अन्य वस्तु में कोई धर्म उत्पन्न करना निमित्त का लक्षण नहीं- दूसरे द्रव्य में अपने से कोई धर्म उत्पन्न करना निमित्त का लक्षण नहीं, अपितु दूसरे द्रव्य से स्वयमेव उत्पन्न होने वाले धर्म-कार्य की उत्पत्ति में बाह्य सहायक मात्र बनना निमित्त का लक्षण है। आचार्य कुन्दकुन्द ने स्पष्ट कहा है कि न तो जीव अपने में से पुद्गल के धर्म को उत्पन्न करता है और न पुद्गल अपने में से जीव के धर्म को, तथापि एक-दूसरे के निमित्त से ही अपना-अपना धर्म उत्पन्न करते हैं।[8] कारण यह है कि द्रव्य में स्वकार्योत्पत्ति की शक्ति रहते हुये भी, यदि बाह्य स्थिति उसकी उत्पत्ति के अनुकूल होती है, तभी वह उत्पन्न हो पाता है। बाह्य स्थिति के प्रतिकूल होने पर उत्पत्ति असंभव हो जाती है। वह अनुकूल और प्रतिकूल स्थिति अन्य द्रव्य में जिस परिणाम से उत्पन्न होती है। उसे ही निमित्त नाम दिया जाता है। जैसे-सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति में अंतरंग प्रतिकूल निमित्त दर्शन मोहनीय कर्म है एवं बाह्य में भी अनुकूल निमित्तों का अभाव है।

निश्चिय से निषेध का अर्थ सर्वथा निषेध नहीं- आचार्य अमृतचन्द ने कहा है कि निमित्त-नैमित्तिक भाव का निषेध नहीं इसलिये जीव और पुद्गल के परस्पर निमित्त बनने पर ही दोनों के परिणामों में उत्पत्ति होती है[9] तथा उन्होंने यह भी कहा है कि आत्मा के रागादिरूप परिणमन में परद्रव्य का संयोग ही निमित्त है क्योंकि जैसे सूर्यकांत मणि स्वयं अग्निरूप परिणमित नहीं होती वैसे ही आत्मा स्वयं रागादि रूप परिणमन नहीं होती। यह वस्तु का स्वभाव है।[10]

द्विक्रियाकारिता का प्रसंग नहीं- यदि कोई कार्योत्पत्ति में निमित्त का प्रभाव मानने से द्विक्रियाकारिता (एक द्रव्य द्वारा दो द्रव्यों की क्रियायें किये जाने) का प्रसंग माने तो यह भ्रान्ति है आचार्य अमृतचंद के अनुसार एक द्रव्य द्वारा उपादान रूप से दो द्रव्यों की क्रियायें किये जाने को द्विक्रियाकारिता कहते हैं।[11] स्वयं की क्रिया को उपादान रूप से करने तथा अन्य द्रव्य की क्रिया को निमित्तमात्र बनने को उन्होंने द्विक्रियाकारिता नहीं कहा। दूसरे के प्रति निमित्त बन सकने वाले का अपने स्वभाव में परिणत होना अपनी ही क्रिया है, परद्रव्य की नहीं। धर्मद्रव्य अपने ही स्वभाव में परिणमित होता है, किन्तु उसका परिणमन जीव और पुद्गल की गति का निमित्त बन जाता है, तो क्या धर्मद्रव्य दो द्रव्यों की क्रियायें करता है ? उक्त कथन से स्पष्ट है कि परद्रव्य में कार्य में निमित्त बनने वाले अपने स्वभाव में परिणत होना दो द्रव्यों की क्रियायें करना नहीं है।

निमित्त से स्वतंत्रता बाधित नहीं होती - भट्ट अकलंकदेव ने कहा है कि यदि बाह्यद्रव्यादि के निमित्त से परिणमित होकर वस्तुयें अपना परिणाम उत्पन्न करती हैं, तो इससे उनके स्वातन्त्रता का विरोध आता है, तो ऐसा नहीं, क्योंकि बाह्य पदार्थ निमित्तमात्र है।[12]

इस युक्ति से विचार किया जाय कि धर्मादि द्रव्यों के निमित्त से ही जीव और पुद्गल की गति स्थिति परिणाम सम्भव होते हैं, तो क्या इससे उनका स्वातन्त्र्य बाधित होता है ? क्या जीव अपने मोक्ष पुरुषार्थ में असमर्थ हो जाता है ? यदि नहीं तो निश्चित है कि कार्योत्पत्ति में परद्रव्य

के निमित्तमात्र होने से वस्तु स्वातन्त्र्य पर आँच नहीं आती। आचार्य कुन्दकुन्द ने कहा है कि-

जीवो ण करेदि घडं णेय सेसगे दव्वे।

जागुवओगा उप्पादगा य सो तेसिं हवदि कत्ता।।[13]

अर्थात् जीव न घट का कर्त्ता है, न पट का, न शेष द्रव्यों का। उसके योग-आत्मप्रदेशों का परिस्पन्द तथा उपयोग मानसिक व्यापार उनके कर्ता है, जीव मात्र अपने योगापाग का कर्त्ता है।

निमित्त उपादान में भ्रम[14] -

1. प्रत्येक कार्य उपादान प्रेरित ही होता है, निमित्तप्रेरित नहीं अर्थात् प्रत्येक कार्य का नियामक उपादान ही है, निमित्त नहीं तथा कोई भी निमित्त प्रेरक नहीं होता सभी उदासीन होते हैं। कार्य को निमित्त प्रेरित मानने पर प्रत्येक कार्य के प्रति उपादान की कोई नियामकता नहीं रहती।

2. उपादान से वही कार्य उत्पन्न होता है, जिसे उत्पन्न करने की उस समय उसमें योग्यता होती है। कोई भी निमित्त उससे अन्य कार्य की उत्पत्ति नहीं करा सकता।

3. द्रव्य की पूर्वपर्याय उपादान कारण होती है और उत्तरपर्याय कार्य अतः अनन्तर पूर्व समय में जैसा उपादान होगा, अनन्तर उत्तरक्षण में उसी प्रकार का कार्य उत्पन्न होगा। निमित्त उसे अन्यथा नहीं परिणमा सकता उदाहरण-खेत में बोये हुये बीज से पहले अंकुर ही उत्पन्न होगा, पत्र या पुष्प नहीं। जीव की अयोगकेवली अवस्था के अन्तिमक्षण से मुक्त अवस्था ही उत्पन्न होगी, अन्य नहीं। इससे सिद्ध है कि द्रव्य की पूर्वपर्याय जैसी होती है वैसा ही कार्य उत्पन्न होता है कि न कि जैसा निमित्त मिलता है वैसा। वस्तुतः निमित्त भी पूर्वपर्याय सदृश कार्योत्पत्ति के अनुरूप ही मिलता है और वह स्वयमेव उपस्थित होता है।

निमित्त-उपादान में भ्रम निराकरण- कार्य के स्वरूप का नियामक उपादान ही होता है, निमित्त नहीं, किन्तु यह शुद्ध उपादान के विषय में तो सर्वथा सत्य है, पर अशुद्ध उपादान के विषय में सर्वथा सत्य नहीं है, क्योंकि अशुद्ध उपादान का निर्माण स्वयं निमित्ताधीन है। उदारणार्थ आत्मा जो अनादिकाल से अशुद्ध बना हुआ है वह पुद्गल कर्मों के निमित्त से ही बना हुआ है। आचार्य जयसेन ने स्पष्ट कहा है कि कर्मोपाधि युक्त जीव ही अशुद्ध उपादान है।[15] **औपाधिकमुपादानशुद्धं तप्तायः पिण्डवत्। निरूपाधिरूपादानं शुद्धं पीतत्वादिगुणानां सुवर्णवत्।[16] ब्रह्मदेव सूरि का भी यही कथन है।** अतः जब उपादान की अशुद्धता ही निमित्तप्रेरित है तो उससे उत्पन्न होने वाला अशुद्धकार्य निमित्त प्रेरित कैसे नहीं होगी ? उपादान का अशुद्ध होना स्वयं एक कार्य है जो पूर्णतः निमित्त पर निर्भर है। कोई भी वस्तु स्वयं अशुद्ध नहीं हो सकती। अतः स्पष्ट है कि अशुद्ध कार्य निमित्त प्रेरित होता है और वही कार्य उत्तरक्षण में उत्पन्न होने वाले कार्य का उपादान बन जाता है। आचार्य कुन्दकुन्द ने भी कहा है कि[17] - मोह संयुक्त उपयोग के अनादि से तीन अशुद्ध परिणाम होते हैं - मिथ्यात्व, अज्ञान और अविरति। इन

तीन अशुद्ध परिणामों के निमित्त से यह उपयोग स्वभाव से शुद्ध और एकरूप होते हुये भी तीन प्रकार का होकर जिस भाव को करता है उस भाव का कर्ता होता है।

आगे इसी को और भी स्पष्ट करते हुये कहा गया है[18] - जैसे स्फटिक मणि स्वभाव से शुद्ध होने के कारण स्वयं रक्तपीतादि रूप से परिणमित नहीं होता, अपितु रक्त-पीत वर्ण वाले अन्य द्रव्यों के संयोग से परिणमित होता है, वैसे ही आत्मा स्वभाव से शुद्ध होने के कारण स्वयं रागादिरूप से परिणत नहीं होता, अपितु रागादि स्वभाव वाले पुद्‌गलकर्म रूप परद्रव्य के संयोग से परिणत होता है।

कर्म के विषय में भ्रम एवं निराकरण- पुद्‌गलकर्म जीव को रागादिरूप से परिणत होने के लिये प्रभावित नहीं करते, अपितु जब वह स्वयं रागादिरूप से परिणत होने की चेष्टा करता है, तब वे उसमें सहायता कर देते हैं। यह कहना भी ठीक नहीं। आत्मा के साथ संयुक्त पुद्‌गलकर्म धर्म, अधर्म, आकाश, काल आदि निमित्तों से भिन्न हैं। इनके समान वे पुद्‌गलकर्म जीव के स्वतः परिणमन में उदासीन रूप से सहायता मात्र नहीं करते, किन्तु उसे इस प्रकार प्रभावित करते हैं कि वह स्वाभाविक क्रिया छोड़कर स्वभाव से विपरीत क्रिया करने लगता है। यद्यपि परिणमन शक्ति जीव में ही है, तो भी कर्मजनित प्रभाव के बिना जीव के परिणमन में रागादि विकार नहीं आ सकता। वह कर्मोदय के प्रभाव से ही सम्भव है।

आगम में जो यह कहा गया है कि जीव कर्मोदय के निमित्त से स्वयं रागादिरूप से परिणत होता है, कर्म उसे बलपूर्वक नहीं परिणमाते, यह जीव की कथंचित् परिणामित्व शक्ति को दर्शाने के लिये कहा गया है।

कर्म प्रेरक ही नहीं, आक्रामक और घातक हैं। प्रेरक शब्द मात्र बलपूर्वक दिशाविशेष में ले जाने का वाचक है। कर्म बलपूर्वक आत्मा पर आक्रमण कर उसकी शक्तियों का घात कर देते हैं। अनादिकाल से घाती कर्मो ने जीव की अनन्तचतुष्टय शक्तियों को दबाकर उसे अज्ञानी, अशक्त, दीन और दुःखी बना रखा है।[19] वे आत्मा को परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ते हैं। इसलिये विद्यानन्द स्वामी ने कर्मों का लक्षण बतलाते हुये कहा है- जो जीव को परतंत्र करते हैं, अथवा जीव जिनके द्वारा परतंत्र किया जाता है, उन्हें कर्म कहते हैं।[20] पं. टोडरमल जी कहते हैं- जब कर्मों का तीव्र उदय होता है तब पुरुषार्थ नहीं हो सकता, साधक ऊपर गुणस्थानों से भी नीचे गिर जाता है।[21]

निष्कर्ष यह है कि किसी द्रव्य को उपचार से निमित्त नहीं किया जाता, अपितु वह वास्तव मे निमित्त होता है। इसलिये निमित्त कहा जाता है। निमित्त के बिना उपादान अपने कार्य की उत्पत्ति में असमर्थ होता है। अतः कार्योत्पत्ति में निमित्त का उतना ही स्थान है। जितना उपादान का तथा पुद्‌गलकर्म धर्मादि द्रव्यों के समान उदासीन निमित्त नहीं है, अपितु प्रेरक, आक्रामक और घातक निमित्त है।

कहानी

श्रद्धा का संकल्प

लेखकः 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

समय सुबह के 7 बजे थे। सभी लोग मुनि श्री के प्रवचन में बैठे थे। मुनि श्री बोल रहे थे यह तीर्थ वही है जिसके माध्यम से सब जीव संसार समुद्र से पार हो सके, जिसके माध्यम से हर व्यक्ति को सुख शांति प्राप्त हो वही तीर्थ कहलाता है। हमें तीर्थ रक्षा के लिये सदैव तैयार रहना चाहिये क्योंकि तीर्थ जो होता है वह हमारे सम्मान का, संस्कृति का प्रतीक होता है। यदि हम सम्मान और संस्कृति की रक्षा करने के लिये जागरूक होना चाहते हैं तो तीर्थ रक्षा इसका सबसे पहला आधार है। तीर्थ रक्षा यदि हम नहीं कर पाये तो हम निश्चित तौर पर अपने मोक्ष मार्ग की रक्षा को समाप्त कर देंगे, मोक्ष मार्ग का स्वरूप ही विकृत हो जायेगा इसलिये हर व्यक्ति को तीर्थ रक्षा के प्रति जागरूक होना चाहिये।

यह प्रवचन श्रद्धा ने बहुत गौर से सुना और श्रद्धा ने जब यह प्रवचन सुना उस समय श्रद्धा की आठ वर्ष की उम्र थी, उस समय श्रद्धा के मन में एक बात आई कि तीर्थ की रक्षा की बात क्यों की जाती है। तीर्थ रक्षा क्या चीज है। श्रद्धा घर गई और अपनी माँ सुनीता से कहा मम्मी आज मैंने प्रवचन मुनि श्री निर्वेगसागर जी का प्रवचन सुना उन्होंने तीर्थ रक्षा की बात की है, मम्मी ये तीर्थ रक्षा क्या चीज है और ये तीर्थ क्या है। तब सुनीता ने कहा बेटा सम्मेदशिखर, गिरनारजी, शिरपुर जैसे ये सब तीर्थ हैं इन तीर्थों के माध्यम से व्यक्ति को सुख शांति का उपाय मिलता है, तीर्थ हमारी धरोहर है, ये स्मारक, कला संस्कृति का दिव्यदर्शन कराते हैं। मैंने इतिहास के पन्नों को पलटा है क्योंकि बेटा तुम्हें पता होगा की मैंने इतिहास से एम.ए. किया है। और आज मैं इतिहास को पढ़ा लिखा रही हूँ कि इतिहास से एक दर्पण होता है। जिसके माध्यम से हमें अपने गौरव का बोध होता है। जिसके द्वारा हम अपने समाज अपने परिवार, अपनी जाति और अपने कुल के गौरव को समझते हैं। हमारे पूर्वज कितने विद्वान हुये इतने वैभवशाली हुये, कितने स्वाभिमानी हुये, कितने स्वावलम्बी

हुये, इस बात को अगर कोई समझा सकता है तो वह इतिहास होता है।

श्रद्धा अपनी उम्र की देहलीज को पार करती गई और जब श्रद्धा 17 वर्ष की हुई तो वह अपनी माँ के साथ शिरपुर तीर्थ के लिये गई। श्रद्धा ने सबसे पहले जो देखा वह बहुत ही सुन्दर था, श्रद्धा पहले पाउली के मंदिर गई और पाउली के मंदिर में श्रद्धा ने देखा दरवाजे के पास ही दो दिगंबर मूर्ति बनी हुयी है। श्रद्धा को बड़ा प्यारा लगा और उसे लगा की इन दिगंबर मूर्तियों को देख करके उसे अच्छा लगा की इस तीर्थ में भगवान पार्श्वनाथ भी हैं और एक कुंआ भी एक कर्मचारी ने दिखाया तो श्रद्धा सत्रह वर्ष की होने के कारण से वह अपनी वैवाहिक जीवन के सपनों को देखने लगी थी, सपना वह था कि मैं कभी एक अच्छे युवा के साथ जो धार्मिक होगा, व्यसन मुक्त होगा, भले ही वो कैसा भी हो, हम उसके साथ ही विवाह अपना रचायेंगे। और जिस कर्मचारी को उसने देखा वह तेजश्व था, तेजश्व पढ़ लिख रहा था साथ में वह तेजश्व नौकरी इसलिये कर रहा था तो उसने अपने जीवन को बहुत अच्छा बनाने की कोशिश की थी। तेजश्व के पास जा करके कुएं की महिमा को पूछा तो तेजश्व ने बताया कि यह कुआं वह है जिसमें कभी एक समय अंतरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति इसी में थी। राजा एल ने जिसका नाम पहले राजसिंहासन पर बैठने से पहले गोपाल था लेकिन वह भटकता-भटकता जब अंतरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन के लिये यहाँ आया तब कुएं की पानी से उसने स्नान किया तो उसके शरीर का कोढ़ ठीक हो गया, तब श्रद्धा ने कहा भाई साहब ये बताइये की कुएं की पानी से कोढ़ मिटा ये कैसे आपको पता चला तब तेजश्व ने कहा मेरे दादाजी, नाना जी कहा करते थे वे यह सब कहानियां सुनाया करते थे, मेरे नाना जी का नाम संतोषपुरी था, उन्होंने मुझे ये सब बताया, तब मैंने इन सब बातों को सुन करके, देख करके यह बात आपको बताई।

तब एक ऊँगली से इशारा करते हुये कहा कि वो श्रीपाल ने जब भगवान की मूर्ति को देखा, कुएं से निकाला फिर उसने यह तय किया कि एक अच्छे मंदिर में इनको विराजमान करना चाहिये। वह अंतरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान के नाम से प्रसिद्ध मूर्ति को ले गया। जब एक बैलगाड़ी में विराजमान करके ले जा रहा था कि तभी पीछे मुड़ करके देखा और उसे ये लगा की भगवान बैठें है या नहीं बस पीछे मुड़ करके देखते ही मूर्ति वहीं रूक गई जहाँ आज अंतरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान का भव्य मंदिर है। तेजश्व की बात को श्रद्धा बहुत ध्यान से सुन रही थी, श्रद्धा ने यह बातें तय कर ली की सचमुच में शिरपुर एक महान तीर्थ स्थल है। पाउजी के दोनों मंदिर और नूतन मंदिर के दर्शन करने के बाद वह श्रद्धा तेजश्वर से बोली कि मुझे अंतरिक्ष पार्श्वनाथ मंदिर के दर्शन हो जायेगी की नहीं। तेजश्व ने कहा अभी तो यह एक खिड़की है उसी से आप को दर्शन हो पायें तो श्रद्धा ने पूछा ऐसा क्यों।

तब उसने बताया कि सन् 1981 में जब मूर्ति का लेप निकल रहा था तो वह मूर्ति एक कमिश्नर झवर नाम के थे, उन झवर नाम के कमिश्नर ने यह मूर्ति का लेप निकलते हुये देखा

मूर्ति धीरे-धीरे दिगंबर रूप में प्रकट हो रही थी तो छाबड़े ने उस मूर्ति के साथ दिगम्बर स्वरूप प्रकट होने की बात सोची कि ये दिगंबर स्वरूप प्रकट हो रहा है कि एक अच्छा सत्य सामने आ रहा है लेकिन श्वेताम्बरों को यह प्रकट होने वाला सत्य समझ में नहीं आया और उन्होंने यह कह दिया की हम लोगों ने लेप करने का अधिकार प्राप्त कर लिया है। लेप जब तक हम करेंगे, करना है कि नहीं करना है ये हमारे अधिकार का विषय है। और उसी समय झवर जी ने अपने अधिकार का प्रयोग करते हुये दिगंबर-श्वेताम्बर विवाद को देखते हुये उन्होंने लेप के उतारने की प्रक्रिया को बंद करने का कहा जब यह विचार सुना तो उन्होंने सोचा की हम विवाद में न पड़ जाये इसलिये झवर ने एक काम किया कि मैं अपने किसी काम से जा रहा हूँ और जब तक मैं आऊंगा तब तक के लिये मंदिर बंद रहेगा और पुलिस इसकी सुरक्षा करेगी।

यह स्थिति देख करके 23 अप्रैल 1981 से यह मंदिर बंद है, अगर आपको यह दर्शन करना है तो आपको खिड़की से दर्शन करने होंगे। तब श्रद्धा के मन में एक बात आयी आखिरकार ये श्वेताम्बरों ने मंदिर बंद क्यों करवाया तेजश्व जी क्या आप जानते हैं तो तेजश्व जी ने कहा नहीं, मैं ऐसे नहीं जानता हूँ आप चलो मेरे साथ मैं ऐसे व्यक्ति से मिलवाता हूँ जो आपको बताएंगी की ये मंदिर दिगम्बरी होते हुये भी श्वेताम्बरी कैसे हुआ वो आपके लिये बताएँगे। श्रद्धा और तेजश्व दोनों चलते गये और उसके पीछे श्रद्धा की माँ सुनीता भी आ रही थी और आ करके मंदिर के ऑफिस में बैठे हुये रमेश काले के पास उन्होंने खड़ा कर दिया। रमेश काले जी से श्रद्धा ने पूछा ये मंदिर अपना था तो ये श्वेताम्बरी कैसे ऐसा हो गया, श्रद्धा की बात सुन करके रमेश काले ने कहा बिटिया हमारे कारंजा के भट्टारक पहले थे और उनके समय में जो यहाँ पर सुरक्षा करते थें वे पोलकर थें तब श्वेताम्बर आये खामगांव में व्यापार करने के लिये आये तब वो धीरे-धीरे अपने इस मंदिर में अंतरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान की पूजा करने के लिये आने लगे, उन्होंने पूजा करने की आज्ञा ली। भट्टारक जी ने पूजा करने की आज्ञा दे दी। धीरे-धीरे वो चक्षु लगाने का प्रयास करने लगे तो पोलकरों ने उन्हें रोका। श्वेताम्बरों ने पोलकरों के विरोध मे दिगम्बरों को भड़का दिया की ये पोलकर यदि ऐसी स्थिति में रहे तो हमारे इस मंदिर पर कब्जा कर लेंगे तो 1896 में दिगंबर और श्वेताम्बरों ने एक समझौता किया और समझौता करके इस मंदिर को पोलकरों से बचाने के लिये एक अदालती लड़ाई का संकल्प लिया और इस अदालती लड़ाई को लड़ने के लिये उन्होंने सोचा और जब वह इस अदालती लड़ाई के लिये आगे बढ़े तो मेहकर कोर्ट से 1901 में उन्होंने केस दाखिल किया और 1903 में पोलकरों से जीत गये। अब इसके बाद धीरे-धीरे दिगंबरों से उनकी दस्ताबेज श्वेतांबरों ने हथियाने के लिये एक और बात की कि पोलकर कभी भी हमारे दस्तावेजों को नष्ट कर सकते हैं इसलिये ये सब दस्तावेज सुरक्षा की दृष्टि से हम अपने बालपुर में रखेंगे और जब भी आपको जरूरत पड़ेगी तब हम यह दस्तावेज दे देंगे। उनकी इस बात पर दिगंबर लोग सहमत

हो गये और श्वेताम्बर लोग उन दस्तावेजों को बालपुर ले गये। इसके बाद वार्ता यह क्रम आगे बढ़ा फिर 1905 में दिगंबर और श्वेताम्बर के बीच समझौता हुआ और एक टाईमटेबल बन गया जिसके अनुसार दोनों पंथ के लिये तीन-तीन घंटों का समय बना और इसके बाद एक घटना और घटती है 1909 में आनंद सागर नाम श्वेताम्बर साधु यहाँ आये और जिन्होंने कुछ मूर्ति यंत्र स्थापित करने के लिये प्रयास किया और उनके साथ में 100 लोग थे और उनके साथ बंदूकधारी, तलवारधारी थे तो शिरपुर के वीर श्रावकों ने उनका डटकर विरोध किया और विरोध करने के बाद वो लोग मूर्ति स्थापित कर पाये या नहीं कर पाये ये बात अलग है लेकिन एक और फिर दिगंबर श्वेताम्बर के बीच में समझौता हुआ, बात यह हुई की अपन मूर्ति की लेप करके मूर्ति को सुन्दर बनाये। लेप करने के लिये कहा गया तो 1909 दिसंबर में लेप की प्रक्रिया शुरु हुयी और एक भूधर नाम का एक गुजरात से लेप करने वाला आया। कारीगर ने लेप करते वक्त लेप में मूर्ति का श्वेतांबरीकरण करने के लिये कचोटा और कंदौरा बनाया। कंदौरा और कचौटा देख करके दिगम्बरों को अच्छा नहीं लगा और दिगम्बरों ने कंदौरा कचोटा हटाने के लिये कहा और कारीगर से झगड़ा किया और कारीगर के झगड़े के बाद कारीगर ने वह कंदौरा कचोटा हटा दिया बस उसी के बाद से इस मंदिर में मूर्ति के लिये ले करके 10 जनवरी 1910 में चार दस नाम से एक डैमेज केस डाला, जो केस आगे बढ़ता गया, हाईकोर्ट तक चला जिसमें मैनेजमेंट करने का अधिकार भी श्वेताम्बरों को मिला और लेप करने का अधिकार श्वेताम्बरों को मिला लेकिन यह बात कही गई यह मंदिर किसी भी प्रकार से श्वेताम्बर और दिगंबर घोषित नहीं किया जा सकता है। मूर्ति न अकेले श्वेताम्बर की है न दिगंबर की है। श्रद्धा ने फिर प्रश्न किया की मंदिर का हम दर्शन करने चल सकते हैं तो रमेश जी ने कहा चलो बेटा मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ और रमेश जी ने ये ऊपर चुने की बनी जो मूर्ति है अभी भी वो दिगम्बर है, ये झंडा आप जो देख रहे हो ध्वज चढ़ाने साल में 5 बार अर्थात् गुड़ीपड़वा, गुरुपूर्णिमा, भाद्रपद की पंचमी और भाद्रपद की पूर्णिमा पहली प्रतिपदा इसके उपरांत कार्तिक की पूर्णिमा ऐसे पांच बार ध्वजारोहण केवल दिगंबर ही कर सकते हैं। इस मंदिर में बहुत सारी मूर्तियां हैं, ताला लगा है, अभी हम आपको नहीं दिखा सकते है 15 वेदियां है जो कि दिगंबर की है, क्षेत्रपाल भी दिगंबर की है और पद्मावती भी दिगंबर की है। उन्होंने एक बोर्ड बताया जो मंडप पर लगा था बोर्ड, उस बोर्ड पे लिखा श्रद्धा ने पढ़ा कि इस मंदिर में पद्मावती क्षेत्रपाल की पूजन दिगंबर ही कर सकते हैं, श्वेताम्बर नहीं कर सकते हैं। उसके बाद श्रद्धा चली गई। श्रद्धा जब बड़ी हो गई तो उसने अपने केरियर को आगे बढ़ाने की कोशिश की तो उसने एक संकल्प बनाया की मैं अगर सादी करूँगी तो शिरपुर के किसी एक लड़के से ही करूँगी। श्रद्धा पढ़ी लिखी और स्नातक की शिक्षा प्राप्त कर चुकी थी। कम्प्यूटर साइंस में उसको अच्छी महारत हासिल थी और सॉफ्टवेयर का भी अच्छा ज्ञान रखती थी। लेकिन श्रद्धा ने एक बात सोची कि

मैं किसी शहर के लड़के से नहीं अगर करूँगी शादी तो शिरपुर के ही लड़के से करूँगी। अब वह चार साल बाद सन् 2021 में आयी तो उस समय मुनि श्री योगसागर जी के दर्शन किये और दर्शन करके श्रद्धा ने अपने मुनि श्री से उपदेश सुना और उपदेश सुनने के बाद फिर वह अपने घर चली गयी। लेकिन श्रद्धा हर साल यहाँ आने लगी। श्रद्धा को जब ये पता लगा की 14 मार्च 2023 में मंदिर खुल चुका है तो श्रद्धा ने अपने इस मंदिर के खुल जाने के बाद पूरी वेदियों और क्षेत्रपाल के दर्शन किये और वह 20 अप्रैल 2023 के दिन मुनिश्री योगसार जी के चरणों में बैठी और मन ही मन में संकल्प कर लिया कि यदि मैं शादी करूंगी तो शिरपुर के ही किसी एक लड़के से करूँगी। जब वह शिरपुर के कौन सा लड़का हो सकता है।

तो उसे एक संकल्प नाम का लड़का उसकी नजर आया, उसने अपनी माँ के तरफ इसारा किया सुनीता ने संकल्प को देखा और बोली यह छोटा सा गांव है इस गांव में तुम शादी करके मत फसों क्योंकि इस गांव में रोज श्वेताम्बर और दिगंबर की लड़ाई होगी। श्रद्धा ने कहा लड़ाई होगी, लड़ने के बाद ही तो तीर्थ की रक्षा होगी। मैं अपनी माँ सुनीता से ये आशा रखती हूँ की माँ तुम तो इतिहास की पढ़ी हुई हो, पुरातत्व का भी अध्ययन करो और निकालो कि ये मंदिर सचमुच में दिगंबर का है कि नहीं। सुनीता ने एक बात श्रद्धा से बहुत गंभीर रूप में कही कि ये मंदिर पूर्ण रूपेण दिगंबर का ही है और सब कुछ ही यहाँ दिगंबर का है क्योंकि शुरु से श्वेताम्बरों का कोई भी अस्तित्व नहीं रहा है। यहाँ पर पुरे मंदिर में ही नहीं समाज की संरचना में भी चाहे शेतबाल समाज हो, चाहे कासार समाज हो, चाहे धाकड़ समाज हो सब समाजों में कोई भी श्वेताम्बरी परिवार नहीं है। एक परिवार बाहर से आकर के रहने लगा है इसलिये भी हम यह कह सकते है यह पूरा गांव ही दिगम्बरों का था, श्वेताम्बरों का कोई अस्तित्व नहीं है। श्रद्धा ने अपने मन की बात अपनी माँ सुनीता के सामने रख दी। माँ मैं यहाँ पर एक लड़के को पसंद कर चुकी हूँ वह है संकल्प, मैं संकल्प के साथ शादी करने का विचार कर रही हूँ आपसे आशीर्वाद चाहती हूँ। सुनीता ने जब श्रद्धा की स्पष्ट विचारधारा सुनी तो उसने भी कहा कि इस गांव की अपेक्षा तुम और कहीं भी तो कर सकती हो। श्रद्धा की बात को टटोलना चाहती थी की श्रद्धा कितना विचारों में प्रबल है लेकिन श्रद्धा ने अपने विचारों को और प्रबल करके प्रस्तुत किया और कहा की मैं तीर्थ रक्षा के लिये संकल्पबद्ध हूँ और एक दिन इस तीर्थ को दिगंबर तीर्थ घोषित करने के लिये ही शिरपुर में शादी करूँगी। शिरपुर में जब मेरी शादी होगी तो मैं निश्चित तौर पर इस तीर्थ की रक्षा के लिये हर कुछ कर सकूंगी। संकल्प से उसने मुलाकात की संकल्प के पिता और माता भी इस बात पर खुश हुये क्योंकि शिरपुर में कोई भी लड़की अपनी शादी करना पसंद नहीं करती है और किसी लड़के की शादी बड़े शहर की लड़की कोई करे यह संभव नहीं था छोटा गांव होने से लेकिन श्रद्धा और संकल्प अपने वैवाहिक बंधन में बंध गये और श्रद्धा ने संकल्प लिया की मैं शिरपुर तीर्थ की रक्षा अवश्य करूँगी।

शांति संदेश

❋ प्रस्तुतिः पं. सुरेश जैन मारौरा, इंदौर ❋

मंगलाचरण- **शांतिसागराचार्य गुरु, मोक्ष मार्ग के रूप।**
मन वचन तन से नित नमूं, पाऊँ स्वात्म स्वरूप॥

अहिंसा प्रधान जैन धर्म में मुख्य रूप से 3 रत्न माने गये हैं। पं. द्यानतरय जी की देव-शास्त्र-गुरु पूजा में पढ़ते हैं-

देव शास्त्र गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार इस तीन रत्नों की उपासना करने से तीन अन्य रत्नों की प्राप्ति होती है, जैसे- **देव** अर्थात् जिनेन्द्र भगवान की पूजा आराधना करने से सम्यग्दर्शन रूपी अमूल्य रत्न प्राप्त होता है। जो कि मोक्ष को प्राप्त करने में प्रधान निमित्त हैं। ऐसे ही **शास्त्र** अर्थात जिनवाणी माता सरस्वती की उपासना-अर्चना आदि करने से सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति होती है तथा **गुरु** की भक्ति श्रद्धा करने से सम्यक चारित्र रूपी बहुमूल्य रत्न प्राप्त होता है, इन तीनों रत्नों में गुरु को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। क्योंकि गुरु के बिना व्यक्ति का जीवन अंधकारमय रहता है। गुरु ही अपने ज्ञान रूपी प्रकाश से जिनेन्द्र भगवान की वाणी को बताकर प्राणीमात्र के अंदर दिव्य ज्ञान ज्योति को प्रज्जवलित कर देते हैं। इसलिये हमेशा अपना जीवन गुरु के सान्निध्य में ही व्यतीत करने का प्रयास करना चाहिये।

20वीं शताब्दी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती शान्तिसागर जी महाराज का प्रतिभाशाली व्यक्तित्व आज किसी परिचय का मोहताज नहीं है, उन्होंने अपने निःस्वार्थ त्याग, करुणा, वात्सल्य, धर्म प्रभावना, संस्कृति सुरक्षा आदि सत्कृत्यों के द्वारा अपने नाम को अमरत्व प्रदान कर दिया है, लुप्त हो रही मुनि परम्परा को पुनः जीवंत करने वाले उन गुरुणां गुरु आचार्य श्री शांतिसागर जी के उपकारों को कभी भुलाया नहीं जा सकता है।

संसार के रंगमंच पर अनन्त प्राणी अपना-अपना जीवन व्यतीत करके चले जाते हैं । और पुनः पुनः चारों गति में परिभ्रमण करते हुये चौरासी लाख यौनियों में दुःख भोगते रहते हैं।पर कभी-कभी कोई विरले जीव होते हैं, जो मानव जीवन में जैनेश्वरी दीक्षा धारण करके अपने जन्म को सार्थक कर लेते हैं, ऐसे पुण्यात्मा जीवों में से एक थे 20वीं सदी के प्रथमाचार्य श्री चारित्र चक्रवर्ती शान्तिसागर जी महाराज, जिन्होंने निर्दोष चर्या का पालन करके 26 मुनि, 4 आर्यिका, 16 ऐलक, 28 क्षुल्लक, 14 क्षुल्लिकायें कुल 88 दीक्षायें देकर चर्तुविध संघ सहित दक्षिण से उत्तर और पूर्व से पश्चिम तक सारे भारत में पग-विहार करके दिगंबर जैन मुनि परंपरा को पुनर्जीवित किया अनेक तीर्थों पर जिन प्रतिमाएं प्रतिष्ठित कराई, षट्खण्डागम ग्रंथ को ताम्रपट्ट पर उत्कीर्ण कराया। आचार्य शान्तिसागर जी महाराज की कथा पद्य रूप में प्रस्तुत है-

सुनो हम कथा सुनाते हैं-2
प्रथमाचार्य शान्तिसागर की, गाथा गाते हैं॥ सुनो॥
दक्षिण भारत के भोजग्राम, में भीमगौंड पाटिल थे।
वे सत्यवती पत्नी के संग, सुख दुख में शामिल थे॥ उन्हीं का पुण्य बताते हैं,
इस पुत्र को दे जनम बड़ा वे, हर्ष मनाते हैं॥ सुनों॥1॥

सन् अट्ठारह सौ बहत्तर, आषाढ़ कृष्ण षष्ठी थी।
तेजस्वी बाल को पा, माँ सत्यवती हर्षी थीं। दान तब पिता लुटाते हैं,
नाम सातगौंडा रख पुत्र का, उत्सव मनाते हैं॥ सुनो॥2॥
शैशव से बाल्य अवस्था, पाई बालक ने जैसे।
इक कन्या के संग उसका, रच दिया ब्याह बस सबने॥ दुखद इक बात बताते हैं ,
पत्नी की मृत्यु छह मास के ही, बाद दिखाते हैं ॥ सुनो॥3॥
इस बाल विवाह से उनका, संबंध न कोई रहा था।
ब्रह्मचारी रहकर उसने, दूजा न विवाह किया था॥ सातगौंडा बतलाते हैं,
जिनधर्म की रक्षा के लिये वे, आगे आते हैं ॥ सुनों॥4॥
पितुमात के मोह के कारण, घर त्याग नहीं कर पाए।
लेकिन स्वाध्यायादिक कर, नित मन वैराग्य बढ़ाए।
वे माता-पिता का मन न दुखाते हैं॥ सुनो॥5॥

आचार्य शान्तिसागर जी के संदेश

- जो बात केवली के ज्ञान में झलकती है, वह साइन्स में नहीं आती। साइन्स में इन्द्रियगोचार स्थूल पदार्थों का वर्णन पाया जाता है।
- असाता का उदय होने पर साधु को शांतिभाव का त्याग नहीं करना चाहिये।
- रोग त्यागी को वैराग्य के लिये होता है और भोगी को रोने के लिये होता है।
- जब तक जीव संयम और त्याग की शरण नहीं लेगा, तब तक उसका भविष्य आनन्दमय नहीं हो सकता।
- हमारे मन में उन लोगों के प्रति बड़ी दया आती है, वो हमारी खूब सेवा-भक्ति करते हैं, हमारे पास बार-बार आते हैं किन्तु संयम धारण करने से डरते हैं।
- सुखी बनने का उपाय धन की छीना-झपटी कलह, अनीति और अत्याचार नहीं है, उसका प्रशस्त मार्ग है इन्द्रियों का निग्रह और संयम की साधना।
- पवित्र पुरुषार्थ के द्वारा सुख पाना हमारे हाथ में है। मोक्ष प्राप्ति के निश्चित समय के बीच-बीच में यदि संयम और व्रत पालन किये जाये तो जीव वह सुख प्राप्त करता है जिसकी सब कामना करते हैं, और उस विपत्ति से बचता है जिससे सब डरते हैं संयम-पालन करने के लिये भाग्य का अवलम्बन छोड़ पुरुषार्थ का आश्रय लेना चाहिये।
- गरीब लोग शास्त्र नहीं खरीदी सकते। उनको शास्त्रों का दान करें। शास्त्रदान में महान् पुण्य है। भगवान की वाणी के द्वारा सम्यग्दर्शन का लाभ होता है।
- सब स्त्री पुरुष यदि प्रतिदिन कम से कम पांच मिनिट पर्यन्त आत्मा का चिंतन करने की प्रतिज्ञा करते हैं तो हम तुम्हारे नगर में चातुर्मास करेंगे, अन्यथा नहीं।
- बड़प्पन अपने आप नहीं आता। छोटों की सेवा द्वारा बड़प्पन मिलता है विनयवान सुखी रहता है, उद्योगी विनयवान मोक्ष प्राप्त करता है।
- हिंसा और विलासिता के द्वारा प्राप्त भौतिक उन्नति भी बहुत समय तक नहीं टिकेगी ।
- स्वाध्याय का प्रचार करो।
- जैनधर्म का प्रचार करो।

- मौन रखने से संसार का आधा सम्बन्ध छूट जाता है। सैकड़ों लोगों के मध्य घिरे रहने पर भी ऐसा लगता है मानों अपनी कुटी में बैठे हों। मौन से मन की शान्ति बहुत बढ़ती है। मन आत्मा के ध्यान की ओर जाता है वचनालाप में सत्य का कुछ न कुछ अतिक्रमण भी होता है।मौन द्वारा सत्य का संरक्षण हो जाता है। चित्तवृत्ति बाह्य पदार्थों की ओर नहीं दौड़ती है।
- जैसे अग्नि के आते ही नवनीत द्रवीभूत हो जाता है, उसी प्रकार वीतराग देव के प्रभाव से संकटों का समुदाय दूर हो जाता है।
- हीनाचरण और हीन संस्कार वाले वर्ग के हाथ का जल यदि भोजनालय में आता है तो उस भोजनालय में बना हुआ आहार महाव्रती साधु की श्रेष्ठ अहिंसा के अनुकूल कैसे होगा ? यह बात बहुत दूर तक सोचकर आचार्य श्री ने यह प्रतिज्ञा की थी जो शूद्रजल का त्यागी होगा, हम उसी जैन के हाथ से आहार लेंगे।
- मन्दिर की सम्पत्ति को जो भी श्रावक खायेगा, उसका अहित होगा। मन्दिरों के जीर्णोद्धार के कार्य में यदि द्रव्य का व्यय करो, तो धर्मरक्षण होगा। हमें सम्पन्न और सुखी लोगों को देखकर बड़ी दया आती है। ये लोग पुण्योदय से आज सुखी है, सम्पन्न है, किन्तु विषय भोग में उन्मत्त बनकर आगामी कल्याण की बात जरा भी नहीं सोचते, जिससे आगामी जीवन भी सुखी हो।
- जो लोग शरीर को रोगी देख संयम से डरते हैं, उन्हें रोग से न डरकर यथाशक्ति संयम का पालन करना चाहिये।
- एक बार आचार्य श्री ने कहा था-दिगम्बर जैन साधुओं की संख्या कम है क्योंकि दिगम्बर जैन साधु प्राण जाने पर भी अपनी मार्यादा का उल्लंघन नहीं करते। धूप में बिना जल ग्रहण किये यदि मरण भी हो गया तो परवाह नहीं, किन्तु साधु मर्यादा का उल्लंघन करके जल नहीं पियेगा, यह संयम की पूर्णरूप से रक्षा करेगा।
- वासनाओं को दास बनाना हित कारी है, उनका दास बनना अकल्याणप्रद है।
- जीव ने कर्मों का बंध करके कर्जा लिया है तक उसे ऋण चुकाना ही पड़ेगा, चाहे समताभाव से कर्मों का भोगो, चाहे संकलेशपूर्वक भोगो। भोगना तो अवश्य पड़ेगा।
- साधु का नेत्र आगम है।
- आहार के लिये दीक्षा मत लो, दीक्षा लेने के बाद आहार अपने आप मिलेगा।
- माँगने वाले जैन साधु और जैन साधु माँगने वाले नहीं।
- तिल में तैलवत् इस शरीर में आत्मा व्याप्त है। क्या अपनी आत्मा ही अपने को नहीं मिलेगी ? समुद्र में मछली की खोज कठिन है, किन्तु लोटे के पानी में वह पड़ी होतो उसे पाना सरल है। इसी प्रकार अपने शरीर में विद्यमान आत्मा की खोज भी सरल है। प्रतिदिन आत्मा का चिन्तन करो। कम से कम दो घड़ी प्रमाण मन-वचन-काय कृत-कारित-अनुमोदना इन नौ कोटि से सावद्य योग का याग कर आत्म चिन्तन करो।
- नेत्र सदृश्य सज्जन नहीं और कान सरीखा दुश्मन नहीं। बैर बढ़ाने वाला कान कच्चा है। कान का कच्चा नहीं होना। शरीर का दोगला उतना बुरा नहीं, जितना कान का कच्चा है।
- पूजा के हेतु अपनी शक्ति के अनुसार द्रव्य अपने घर से लेकर पूजा करनी चाहिये। करोड़पति तथा लखपति भी गरीब के समान अल्प द्रव्य से पूजा करते हैं , यह ठीक नहीं है। अपने वैभव

के अनुसार भगवान की पूजा करो।
- देखो ! कर्मों के बन्धन से छूटकर मोक्ष पाने के लिये आप सबको हमारे समान दिगम्बरत्व को धारण करना होगा, क्योंकि इस पद को अंगीकार किये बिना मोक्ष को प्राप्त करने का अन्य मार्ग नहीं है।

आचार्य शान्तिसागर जी के अंतिम अमर संदेश-

-परम पूज्य आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज ने कुंथलगिरि पर 36 दिवसीय सल्लेखना के मध्य 26वें दिन 8 सितम्बर 1955 को शाम के 5 बजे मराठी में मानव कल्याण के लिये जो उपदेश दिया गया वह रिकार्ड किया गया था।

- अनन्त आगमों में एक अक्षर ॐ है, जो ॐ को धारण करता है उस जीव का कल्याण होता है। णमोकार मंत्र के प्रभाव से दो बन्दर लड़ते-लड़ते सम्मेदशिखर से स्वर्ग गये, सेठ सुदर्शन ने बैल को उपदेश दिया वह स्वर्ग गया, सप्तव्यसनी अन्जन चोर णमोकार मंत्र के प्रभाव से तिर गया, कुत्ते को जीवंधर कुमार ने णमोकार मंत्र का उपदेश दिया वह देवगति में गया। ऐसी उत्कृष्ट महिमा जैन धर्म की है।

- **जीव और पुद्गल पृथक-पृथक है-** सुख प्राप्ति की इच्छा है तो दर्शन मोहनीय कर्म का नाश कर सम्यक्तव धारण करो।

- चारित्र मोहनीय कर्म का नाश करके संयम धारण करो, दोनों मोहनीय कर्मों का नाश करके अपना आत्म कल्याण करो यह उपदेश है।

- कर्मनिर्जरा का साधन आत्म चिंतन- आत्मचिंतन से कर्मों की निर्जरा होती ही, केवल ज्ञान प्राप्त होता है। केवलज्ञान से मोक्ष प्राप्त होता है। आत्म चिंतन के बिना सम्यक्तव प्राप्त नहीं प्राप्त कर संयम के पीछे लगना चाहिये अर्थात् संयम पालन करना चाहिये।

- **सम्यक्त्व और संयम धारण के बिना समाधि संभव नहीं** - समाधि 2 प्रकार की होती है- गृहस्थ सविकल्प समाधि धारण करता है, निर्विकल्प समाधि मुनि पद धारण होने पर होती है। सातवें गुणस्थान से बारहवें गुणस्थाल तक निर्विकल्प समाधि होती है। तेरहवें गुणस्थान में केवल ज्ञान होता है ऐसा शास्त्रों में कहा है।

- **जिनवाणी का अपूर्व महात्म्य-** भगवान की वाणी पर पूर्ण विश्वास करो। इसके एक-एक शब्द से मोक्ष मिलता है। मोक्ष का कारण आत्मचिंतन है, इसके बिना सद्गति नहीं होती है अर्थात् जिनवाणी पर श्रद्धा करने से मोक्ष मिलता है।

- गृहस्थों को महान निर्जरा करना चाहिये 24 घंटे में 15 मिनट आत्मा का ध्यान करने से असंख्यात गुणी निर्जरा होती है। भगवान ने इसके सिवाय मोक्ष का कोई दूसरा उपाय नहीं बताया।

- कर्मों के बंधन से छूटकर आप सबको हमारे समान दिगम्बरत्व धारण करना होगा, क्योंकि इस पद के बिना मोक्ष प्राप्त करने का अन्य मार्ग नहीं है।

- त्याग से मन शांत होता ही है त्याग में सुख है, भोग में दुख है। भोगों में अरुचि तथा आत्मतत्त्व में रूचि होने पर परिणामों में शान्ति उत्पन्न होती है।

- सत्य अहिंसा पालो, सत्य से सम्यक्त्व है। अहिंसा से दया है, किसी को कष्ट नहीं दो यह व्यवहार की बात है। सम्यक्त्व धारण करे, संयम धारण करो, इसके बिना कल्याण नहीं हो सकता है।

इस प्रकार मैं आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज रूपी विशाल वृक्ष की वन्दना करता हूँ जिसका मूल सम्यग्दर्शन है, स्कंध सम्यग्ज्ञान है, जिसकी शाखा सम्यक चारित्र तथा जो मुनि वृन्द रूपी पक्षी समूह से व्याप्त है।

हमारे गौरव

महारानी माललदेवी

कुन्तल देश में बनवासी के नरेश कदम्ब-कुल-मार्तण्ड कीर्तिदेव थे, जो मयुरवर्मन कदम्ब की सन्तती में उत्पन्न हुये थे । कीर्तिदेव की अग्रमहिषी माललदेवी थी जो रूप और गुणों में गिरिजा, सीता, रवि, और रूक्मणि थी। वह परम जिनभक्त और धर्मपारायण महिला रत्न थी। पुरुजिनपति ऋषभदेव उसके कुलदेवता थे। और कुंदकुंदान्वय मूलसंघ कणुरगण तिन्त्रिणिगच्छ के पद्मनन्दिसिद्धांत उसके गुरु थे।

वनवासि देश में अनेक आकर्षणों से युक्त कुप्पटूर नाम का नागर था, जिसके निवासी एक सहस्त्र ब्राम्हण अपणी विद्या और भक्ती के लिये विख्यात थे। सुप्रसिद्ध वन्दनिके तीर्थ से सम्बद्ध जिनालयों में कुपटूर का जिनालय ब्रम्हजिनालय अग्रणी था। महाराणी ने इस अतिभव्य पार्श्वदेव चैत्यालय का निर्माण कराकर उपर्युक्त मण्डलाचार्य पद्मनन्दि-सिद्धांत से उसकी प्रतिष्ठा करायी। तदनंतर स्थानीय ब्राम्हणों को बुलाकर जिनालय का नाम ब्रम्हजिनालय घोषित कराया।

महाराणी अत्यंत धार्मिक तथा दानशूर थी उन्होंने जिनालय बनवाये, मुनियों को आतिथ्य आदर सम्मान किया। बनवासि प्रदेश के एक भाग पर प्राचीन कदम्बों का वंशजो का छोटा-मोटा राज्य अभी तक चला आ रहा था।

कविता

जिन शारदे भव तारणी

एलक श्रीसिद्धांतसागर जी

जिन शारदे भव तारणी
कर्म हरणी सत्य धरणी
मुक्ति पंथ संबोधनी
जिन शारदे भव तारणी
नय प्रमाण मय सत् शिव सुन्दर
तत्त्व सरगम वादनी
जिन शारदे भव तारणी
शरणा आये संत श्रावक
वरदे ज्ञान प्रवाहनी
जिन शारदे भव तारणी
समता रस पूति जग जगत जननी
जिन शारदे भव तारणी

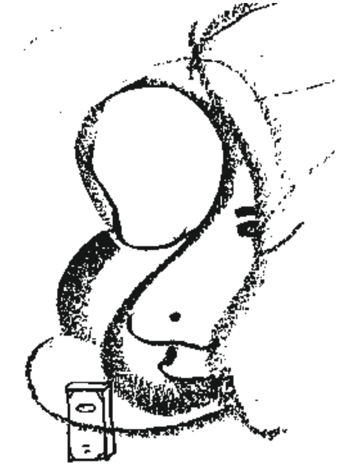

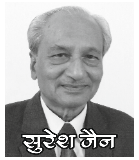

सुरेश जैन

क्रमांक-36 वरिष्ठ नागरिक

कुछ समय के लिये बच्चा बन जाये

बुढ़ापे को स्वर्णिम बनाने के लिये कुछ समय के लिये बच्चा बन जायें। क्या आप आपने बच्चे के साथ कभी खुले दिल के साथ खेले हैं ? कभी खेले भी हो तो आपका बुढ़ापा आपके साथ रहता होगा। यदि आपका बुढ़ापा आपके साथ रहता है, तो आप खेल ही कहां पाते हैं । खेल में भी आप अपना आदेश चलाते रहते होगे। बच्चों के साथ केवल बच्चा बनकर खेलें । यह बात आपको थोड़ी अजीब लगेगी। लेकिन एक बार आप करके तो देखिये। कि आपको कितना उत्साह मिलता है। आप जिसके साथ रहते हो वैसी ही आपकी ऊर्जा बन जाती है। बच्चे का मतलब है, एक खिलता हुआ जीवन बच्चे के भीतर प्राण-ऊर्जा सर्वाधिक होती है। हम कहते हैं कि बच्चे के भीतर बड़ी स्फूर्ति है। कभी विचार किया है कि उसमें स्फूर्ति क्यो हैं ? वह खाना आपसे कम खाता है, पर उसके भीतर जो ऊर्जा है, प्राण-ऊर्जा है, प्राणशक्ति है, वह उसके भीतर बहुत अधिक है। क्योंकि उसके भीतर एक उत्साह है। उसे आप कहें, चले तो वह चलता है। उसे आप कहो, दौड़ो, तो वह दौड़ता है। उसे कहो कूदो तो वह कूदता है। वह सब कुछ करने को राजी है सब कुछ करने को तैयार है।

भूल जायें अपने बुढ़ापे, बच्चो के लिये प्रतिदिन आधा घंटा निकाले और खेलें उनके साथ कैसे खेले ? बड़ा बनकर नहीं बच्चा बनकर खेलें। उस समय सब कुछ भूल जायें छोड़ दें लोगों की परवाह कि वे देखेंगे तो क्या कहेंगे। कहेंगे तो कहने दीजिये। बच्चों के साथ बच्चे बनकर खेलिये आप देखना आपके भीतर कितना उत्साह बढ़ेगा।

एक छोटा सा अनुभव कीजिये आधा घंटा आप किसी अस्पताल के भीतर घूमकर आइये देखिये आप को कैसे अनुभव होता है। फिर आधा घंटा छोटे बच्चों के स्कूल में घूमकर आइये। फिर देखिये आपको कैसा अनुभव होता है। आप स्वयं देख लेंगे। जब आप अस्पताल में आधा घंटा घूम कर आयेंगे, आपको थोड़ी थकान अनुभव होगी। यह आप की दिमागी थकान है। क्यों, क्योंकि वहां सब बीमार हैं। बीमार व्यक्तियों में प्राणशक्ति कमजोर पड़ गई है। जब आप वहां जाते हैं तो आपके आभामंडल से वे भी प्राणशक्ति को खींच लेते हैं। तो आपको थोड़ी दिमागी थकान हो जाती है। लेकिन जब आप छोटे बच्चों के स्कूल में घूमकर आते हैं तो स्वयं को तरो ताजा अनुभव करते हैं। क्योंकि बच्चों के भीतर प्राणशक्ति अधिक है। उनके पास जाने से आपको प्राणशक्ति प्राप्त होती है और आप स्वयं को रिलेक्स अनुभव करते हैं , अपने आपको ताजा अनुभव करते हो। रह-रहकर बच्चों की किलकारियाँ उनकी हंसी के बारे में आपका दिमाग सोचेगा तो अपने आप-आप के होठों पर एक अजब मुस्कान आ जायेगी, आप तरोताजा हो जायेंगे जबकि अस्पताल में बीमारी-परेशानियों से भरे चेहरों को देखकर आप का दिमाग घबराहट महसूस करेगा, और थकान महसूस करेगा। अस्पताल में आपके दिमाग में नेगेटिव महसूस किया तथा छोटे बच्चों के स्कूल में आप के दिमाग ने पॉजीटिव महससू किया।

आप बच्चों के साथ बच्चे बनकर खेलेंगे तो आपमें प्राण-ऊर्जा का विकास होगा। अगर बच्चों के सामने बुजुर्ग बने रहे, उनकी गलतियां निकालते रहे, यह मत करो, वह मत करो, ऐसा मत करो,

वैसा मत करो, तो कुछ नहीं होगा। आपको प्राणशक्ति नहीं मिलेगी। इसके विपरीत उन्हें डांटने में ही आपकी प्राणशक्ति का क्षरण हो जायेगा। बच्चों के साथ बच्चा बनकर खेलें। उतने समय के लिये अपनी उम्र को भूल जाओ। केवल खेलो।

जब आप बच्चों के साथ कुछ देर के लिये खेलें, तो बच्चों में ऐसे घुल मिल जाएं कि बच्चों को यह न लगे कि आप उनके लिये बाधा हैं। कई बार देखा जाता है कि वृद्धों को देखकर बच्चे सहम जाते हैं। वृद्धों ने अपने आपको इतना जटिल और कठोर बना लिया है कि उन्हें देखते ही बच्चे सहम जाते हैं। अपने को कठोर मत बनाइये। सरल बनाइये, सहज बनाइये, बच्चों के साथ ऐसे घुलिये कि आपको देखते ही बच्चे मानें कि उनके सबसे अच्छे मित्र आ गये हैं। बच्चे हंस रहे हैं तो आप भी हंसें। वह खेल रहे हैं तो आप भी खेलें जब आप ऐसा करेंगे तो आप उनसे कुछ ग्रहण की करेंगे अपने आप को तरोताजा महसूस करेंगे। बच्चे भी आप से कुछ ग्रहण करेंगे, वे भी आप के अंतःकरण में झांकने की कोशिश करेंगे।

देखना यह आपको कितना मधुर लगेगा। आप प्रतिदिन उनके साथ खेलते हो। फिर एक दिन जब आप बीमार पड़ते हो, तो आप का पौत्र आपके पास आयेगा और आपके लिये सिर पर हाथ रखकर कहेगा, दादाजी ! सिरदर्द हो रहा है क्या ? मैं थोड़ा दबा हूँ। देखना आपका दर्द बच्चे की बात सुनते ही चला जायेगा। देखना आपका बच्चा जब आपके सिर पर हाथ रखता है तो कैसा लगता है। लेकिन यह तभी हो पायेगा जब आप पहले उनके निकट जाओगे। यदि आप कहो कि मैं तुम्हारा दादा हूँ तुम को मेरे पास आना ही चाहिये, सेवा करनी चाहिये। हो सकता वह आपकी सेवा कर देगा, पर इसलिये कर देगा, क्योंकि सेवा करनी ही चाहिये। चाहे वह आपकी सेवा इच्छा से करे या बिना इच्छा के करे। लेकिन संबंध तभी बनेगा जब आप उनके साथ पहले घुल-मिल के खेलें होंगे। इसलिये नियमित तौर पर प्रतिदिन बच्चों के साथ कुछ देर के लिये अवश्य खेलें।

कविता

मुनाफा

❊ संस्कार फीचर्स ❊

एक दिवस की रुई मुनाफा, बन गया तीरथ धाम
अतिशय क्षेत्र पटेरिया मनहर, प्रभु पारस शुभ धाम
श्रेष्ठी राधा किसन का सपना, तीरथ है अपना
सुनार नदी की निर्मल धारा करो भक्ति निष्काम
श्वास श्वास में तीरथ सुमरन, होती मनो भावना पूरन
वीतराग प्रभू तारन हारे, जपलो पारसनाथ
नगर गढ़कोटा का कोना, सूरज बरसाये नित सोना
दोष अठारह रहित प्रभुवर, पूजो आठों याम

मुझे नींद न आये, अनिद्रा रोग- कारण व नियंत्रण उपाय

❊ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ❊

जीवन में शारीरिक परिश्रम के बाद जब शरीर व मन थक जाता है, तब नींद उस थकावट को दूर कर पुनः शरीर को कार्य करने योग्य बनाती है। परिश्रम के फलस्वरूप शरीर में अनेकों कोशिकायें क्षय हो जाती हैं, आहार उस क्षय की कमी को पूरा करता है, उस कार्य को करते समय स्नायुमंडल में अचेतन भाव आता है व इस समय नींद आ जाती है। नींद की हालत में मस्तिष्क में रक्त संचालन क्रिया घट जाती है व रक्त कम हो जाता है, पाकस्थली आदि पाचन तंत्र में रक्त की अधिकता होती है व थकावट दूर करने से अन्य शारीरिक गतिविधियाँ भी धीमी पड़ जाती है। उस समय क्रमशः ज्ञान शक्ति लुप्त हो जाती है यही स्वाभाविक नींद है।

यदि किसी कारणों से इस स्वाभाविक नींद में गड़बड़ी होने पर अर्थात् नींद न होने को अनिद्रा रोग (Insomnia) या नींद न आना (Sleeplessness) कहते हैं। वर्तमान में बच्चे युवा पीढ़ी से बुजुर्ग इस रोग से पीड़ित हैं।

कारण- अनिद्रा रोग के कई कारणों में से प्रमुख कारण 1. मानसिक उत्तेजना व स्वप्न देखना व व्यस्त मस्तिष्क के कारण नींद न आना। 2. बहुत दिनों तक कोई रोग होने से रक्त हीनता होना, हिस्टिरिया रोग होना, कब्ज व अपच होना। 3. अचानक नींद टूट जाना व थोडी सी आवाज से नींद टूटना, सोने की जगह बदलना। 4. अत्यंत खुशी, दुख, भय, आतंक व बुरे समाचार सुनने से नींद न आना, रात्रि जागरण के कारण। 5. आधुनिक सुख सुविधाओं के कार ण शारीरिक गतिविधियाँ कम होना। 6. गठिया, डायबिटिज, हृदय रोग, बी.पी. बढ़ना, महिलाओं मे मेनोपास के समय हार्मोन बदलाव व पुरुषों में प्रोस्टेड ग्रंथि का बढ़ना, डिप्रेशन, ब्रेन स्टोक, दमा, श्वांस रोग, कैंसर, एलर्जी होना आदि।

लक्षण- नींद न पूरी होने पर पूरे दिन थकावट और सुस्ती महसूस होती है जिसका प्रभाव सीधा आपकी कार्यक्षमता और एकाग्रता पर पड़ता है व सोचने की क्षमता प्रभावित होती है। 2. भूख जयादा लगती है और ज्यादा कैलोरी से मोटापा व बजन बढ़ता है। 3. हृदय संबधित रोग, सुगत तनाव, घबराहट, दमा रोग व एलर्जी एसीडिटी संबंधी परेशानियाँ होने लगती है।

सावधानियाँ- 1. दिन में लम्बी नींद नहीं लेना चाहिये व रात्रि की 6-8 घंटी की नींद लेवें जो इम्यूनिटी और सर्दी जुकाम से लड़ने में मदद करती है। 2. सोने की सही गद्दे, तकिये और कवर का उपयोग मौसम के अनुसार करना व सोने का स्थान बार-बार नहीं बदलना चाहिये व सोने जागने का समय निश्चित होवे। 3. शाम को हल्का भोजन व सोने के दो घंटा पहिले भोजन करे व सोने के पहिले चाय काफी नहीं पीये। सोने के कमरे में हल्की रोशनी रखें। 4. नियमित व्यायाम व योग करना चाहिये। दिन भर बैठकर काम करने से शरीर का निचला हिस्सा सुस्त अवस्था में पड़ जाता है जिससे सोते समय पीठ व कमर दर्द की शिकायत रहती है। जिससे व्यायाम लाभदायक होता है। 5. शराब, कैफीन व अन्य नशीले पदार्थों का सेवन न करें। 6. स्वयं को तनाव मुक्त रखें व आवश्यक कार्य व जिम्मेदारी निभाने हेतु दूरी बनाये रखें व किताब पढ़ने की आदत बनायें। 7. कई ऐलोपैथिक दवाईयों के दुष्परिणाम भी होते है जैसे कई दर्द

निवारक दवा सर्दी जुकाम की दवाईयों में कैफीन होता है जो गहरी नींद व बेहोशी व पूरे शरीर में बैचेनी लाती है एवं अन्य नया रोग उत्पन्न होकर या कमजोरी उत्पन्न कर नुकसान करता है। अतः डॉक्टर की सलाह से दवाईयां लेना चाहिये। 8. नींद लेने हेतु नशा व अल्कोहल आदि का उपयोग के बाद गहरी नींद आती है किन्तु यह वास्तविक नींद नही है ये मानसिक शक्ति की बड़ी उत्तेजना व सुस्तीपन लाती हैं। 9. किसी रोग में निश्चित समय के अंतर से दवा का सेवन करना हो यदि उस समय रोगी सोया हो तो उसे नींद से उठाकर दवा देना उचित नहीं होता क्योंकि नींदही उसकी औषधि है।

उपचार- 1. सोने से पहिले पैरों को हल्के गर्म पानी से धोना, पैरों के तलवों में सरसों तेल की मालिश से गहरी नींद आती है। 2. रात में हल्दी वाला दूध, केला खाना, केसर जायफल का उपयोग भी लाभदायक है। 3. विचारों को दिमाग से आने से रोकने हेतु सांस पर ध्यान केन्द्रित करना, उल्टी गिनती, ज्ञान मुद्रा बनाना आदि। 4. सभी चिकित्सापद्धति समय व रोग की तीव्रता अनुसार लाभदायक है किन्तु होम्योपैथी पद्धति में सिर्फ नींद लाने के साथ औषधि मुख्य रोग को ठीक करती है व स्वाभाविक नींद लाती है।

शोध में पाया गया हैं कि केवल एक रात की अनिद्रा स्वस्थ कोशिकाओं को जल्दी निष्क्रिय कर देती हैं व 25 से 42 वर्ष की महिलाओं को उच्च रक्त चाप ज्यादा होने से इसकी समस्या बढ़ रही है। अच्छी नींद नहीं आना अपने आप में बड़ा रोग है जिसे बस में करना केवल स्वयं के हाथों में है। पुरानी कहावत है नींद न देखे टूटी खाट अतः शरीर को गतिशील रखे, मन शांत रखें जो शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को संतुलित रखकर अनिद्रा से बचाये रखता है।

कविता

बिंदास

दिल में दम है, कर में दम है
कर में दम है, काम में दम है
हुनर जहाँ पर रहता है
नया नया कुछ करता है
जीवन अच्छा गढ़ता है
नाम कमाता दाम कमाता
कुछ करने की चाहत में ही
खुशी खुशी सब सहता है
नहीं काम में डरता है
बिंदास सदा ही रहता है
सदा सफलता चूम पग
उन्नति का मिलता है मग
हग मग कभी नहीं करता
आये संकट सब हरता
बिंदास सदा ही वह रहता

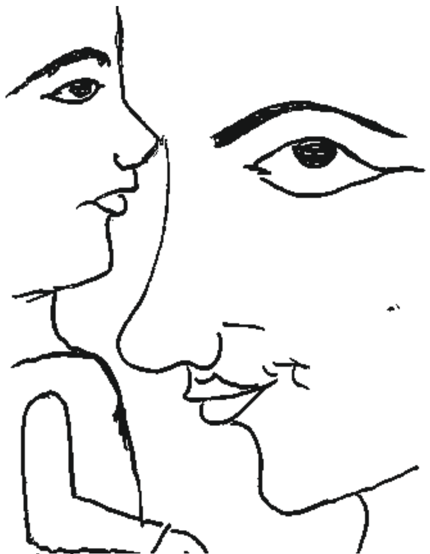

हास्य तरंग

1 महिला- अपनी नई सहेली से शादी के बाद से तुम्हारे पति का रंग धीरे-धीरे निखर रहा है। सहेली यह बात है कि पहले वे कोयले की दुकान चलाते थे अब आटा पीसे की चक्की।

2. पत्नी पति से- झूठ बोलना कब बंद करोगे ? पति लेकिन मैं ने कब झूठ बोला, पत्नी अच्छा क्यों झूठ बोल रहे हो ? कल रात्रि टीवी पर देख रहे सीरियल के समय अचानक लाईट चले जाने पर बच्चों से कह रहे थे कि तुम किसी नहीं डरते।

3. वकील (गवाह से)- आप मेरे प्रश्नों के उत्तर लम्बा बढ़ाकर नही दो मात्र हाँ या ना मैं जबाब दो । गवाह- मेरे लिये मुश्किल है, मैं सेल्समेन हूँ, अच्छा वकील साहब आप मेरे प्रश्न का उत्तर हाँ या ना में दे सकते हो ? वकील हाँ क्यों नहीं। गवा- आपकी पत्नी पहले पीटती थी पर अब नहीं ? वकील- असमंजस में पड़ गये।

4. दोस्त- अपने दोस्त से तुम्हारे पत्नी का कम दर्द ठीक हुआ कि नहीं दोस्त- हाँ डॉक्टर को एक बार दिखाने में ठीक हो गया था। दोस्त- कौन सी दवाईयाँ दी थी, दूसरा दोस्त- कोई दवा नहीं दी बस डॉक्टर ने यह बताया कि यह बुढ़ापे की निशानी है तब से दद की शिकायत नहीं की।

5. पुलिस वाले को कुत्ते ने काट लिया वह डॉक्टर पास ईलाज कराने गया । डॉक्टर ने घाव साफ करते पट्टी बांध दी। दवाईयां लिखते हुये डॉक्टर ने पूंछा क्या कुत्ते ने आपको पहिचाना नहीं ।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, इंदौर

पाक कला

चीला

सामग्री- चावल 1कप, हरी मिर्च 2-3, सौंठ 1/2कप, शिमला मिर्च 1/2 कप टमाटर 1/2 कप, पालक 1/4 कप, हरा धनिया 2-3 बड़ी चम्मच नमक, 1 छोटी चम्मच, लाल मिर्च पाउडर 1/2 चम्मच, जीरा 1/2 छोटी चम्मच, बेकिंग सोड़ा 1/4 चम्मच, तेल 3-4 बड़ी चम्मच।

मूंगफली की चटनी के लिये- मूंगफली भुनी 1/2 कप, नारियल ग्रेटेड 1/2 कप, नमक 1/2 छोटी चम्मच, हरी मिर्च 2 नींबू का रस 1 छोटी चम्मच, तेल 1 छोटी चम्मच, सरसों के दाने 1/3 छोटी चम्मच, लाल मिर्च 2, करी पत्ता 10 से 12।

विधि- भीगे चावल, 2 से 3 हरी मिर्च और 1 इंच सौंठ के टुकड़े को मिक्सर में डालकर बारीक पीस लें शिमला मिर्च, टमाटर, पालक, हरा धनिया, नमक, लाल मिर्च पाउडर जीरा और बेकिंग सोड़ा मिला ले पैन में सेंककर सारे पैनकेक बना लें मिक्सर जार में मूंगफली के दाने (छीलकर) ग्रेटेड नारियल, नींबू का रस और पानी डालकर बारीक पीस लें, पैन गरम कर तेल में सरसों, लाल मिर्च, करी पत्ता डालकर चटनी में तड़का लगा दें।

बाल कहानी

अंधविश्वास पर अमोल की बली

महाराष्ट्र के शहरों में पुसद का नाम एक दिन अखबारों में बहुत ही प्रमुखता से छपा। सब लोगों ने पढ़ा के पुसद के शिवाजी वार्ड में एक अमोल धुले नाम का युवक रहता था। यह युवक मात्र 35 वर्ष का था, इसने अपनी योग्यता के आधार पर खुब नाम कमाया था। अमोल अपनी मेहनत और व्यवहार से सबका चहेता बना हुआ था। उसके बोलचाल में अलग ही प्रकार का आकर्षण था। वह अपने पड़ोसियों से भी विनम्र और मधुरता के साथ पेश आता था। उसके पड़ोस में रमेश पवार नाम का व्यक्ति भी रहता था, लेकिन रमेश पवार शक्की और सनकी टाईप का व्यक्ति था। वह अपनी पत्नी रश्मि पर हमेशा शक करता रहता था। उसमें ऐसा लगता था कि अमोल हमारी पत्नि पर ड़ोरा डाले हुये हैं और वह घूर घूर कर मेरी पत्नि को देखा करता है। रमेश पवार की एक छोटी सी बालिका भी थी जिसे आये दिन बुखार आता रहता था। अमोल ने पीला चेहरा देखकर उसकी बेटी को गुरवेल की माला बनाकर पहनाई, कुछ दिन बाद रमेश की पत्नी संगीता को भी पीलिया हो गया, उसकी हालत देखकर अमोल को बहुत दुःख हुआ उसने संगीता को भी गुरवेल की माला पहनने दे दी।

रमेश ने संगीता को माला पहने हुये देखकर पूछा यह माला तुम्हें किसने दी तो संगीता ने अमोल का नाम बता दिया, अमोल का नाम सुनकर रमेश ने संगीता को कुछ नहीं कहा उसने एक ही बात सोची के यह अमोल मेरी पत्नी को अपने जाल में कही फँसा रहा है और यह माला में उसने कोई जादू टोना अवश्य किया होगा और उसने मेरी पत्नी को वशीकरण करने के लिये कोई योग-प्रयोग किया है।

रमेश ने अपनी योजना बनाई कि मेरे परिवार को बिगाड़ने वाला अमोल इस दुनिया में नहीं रहेगा जब 25 जून को अमोल दुकान से घर आ रहा था तो रमेश पवार ने अमोल का रास्ता रोकते हुये कहा कि तू बहुत सयाना बन रहा है मेरे परिवार को बिगाड़ रहा है मेरी औरत को तू माला पहनायेगा अपना बनायेगा बहुत हंस-हंस के बात करता है मेरी औरत से आज तु जिंदा बचने के लिये भगवान से प्रार्थना कर, अमोल ने कहा भैय्या मैने तो तुम्हारी पत्नी के लिये अपनी बहन माना और मैने उसका आयुवेर्दिक ईलाज करने के लिये उसे गुरवेल कि माला दी थी और तुम्हारी बेटी को भी पहनाई थी बताओं तुम्हारी बेटी ठीक हो गई थी की नहीं। रमेश पवार भड़क गया ओर उसने छुरा निकाल कर अमोल पर ताबड़तोड़ आक्रमण कर दिया अमोल जब तक समझ पाता तब तक वह ढेर हो गया। गांव को लोगों को जब यह पता लगा तब लोगों ने कहा जादू टोना के शक में अंधविश्वास की बली बेदी पर अमोल को चढ़ा दिया गया है। रमेश पंवार पर कानूनी न्याय प्रक्रिया चली और वह सलाखों के पीछे चला गया।

संस्कार गीत

मोक्ष शास्त्र

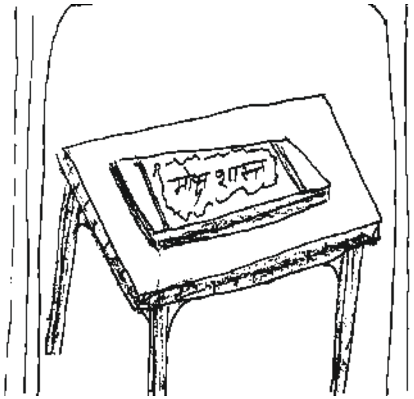

मोक्ष शास्त्र की बोध जगायें
आगम का अनुबंध है।
सात तत्त्व का वर्णन इसमें
रत्नत्रय संबंध है।

1.

जीव अजीव तत्त्व अरु आस्रव
संवर निर्जर मोक्ष हैं
तीन सौ सत्तावन सूत्रों में
आत्म अनात्म बोध है
उमास्वामी की देन अनूठी मुक्ति का प्रबंध है।

2.

इसकी टीकों में देखो दर्शन का विस्तार है
लघु दीर्घ सूत्रों से जानो जिनवाणी का सार है
पठन और पाठन से इसके टूटे कर्म के बंध हैं

3.

पाप विनाशक पुण्य प्रसारक
वैज्ञानिक यह ग्रंथ है
रोज पाठ जो इसका करता
मिले उसे शिवपंथ है
शाश्वत सुख को तत्क्षण पावे
रहे न कोई द्वन्द है।

बाल कविता

ककड़ी

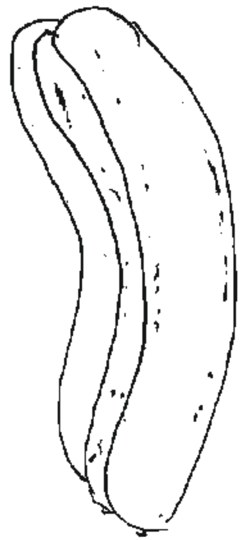

हरी भरी है सुंदर ककड़ी
पानी पूरा करती ककड़ी
क्लोरीन से भरी है ककड़ी
पित्त शमन नित करती ककड़ी
गोल गोल लम्बी सी ककड़ी
सब बीमारी हरती ककड़ी
रेशों से पूरित यह ककड़ी
कब्ज दूर करती यह ककड़ी
स्वाद भरी सस्ती सी ककड़ी
बच्चों हर दिन खाओ ककड़ी

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

कुंजवन उदगांव महाराष्ट्र- आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महाराज के करकमलों से 28 दिसम्बर 2023 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुंजवन उदगांव महाराष्ट्र में क्षुल्लक वर्णी सहजसागर जी महाराज एवं पंडित श्री दीपचंद जी छाबडा की मुनि दीक्षा सम्पन्न हुई। जिनका नाम क्रमशः मुनि श्री सहजसागर जी महाराज, मुनि श्री नवपद्म सागर जी महाराज रखा गया।

सम्मेदशिखर जी- क्षुल्लक सुदेयसागर महाराज जी की मुनि दीक्षा श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर जी मधुवन में 25 जनवरी 2024 को हुई। जिनका नाम मुनि श्री सुदेयसागर महाराज रखा गया।

समाधिमरण

फिरोजाबाद (उ.प्र.)- मुनि श्री अमितसागर महाराज के शिष्य मुनि श्री धैर्यसागर महाराज जी का समाधिमरण फिरोजाबाद (उ.प्र.) में 27 दिसम्बर 2023 दोप1 बजे हुआ।

जबलपुर- आचार्य विद्यासागर महाराज जी के शिष्य क्षुल्लक श्री वरदानसागर महाराज जी का समाधिमरण श्री दिगम्बर जैन गुरुकुल पिसनहारी मढ़िया जबलपुर में 18 जनवरी 2024 को प्रातः 11 बजे हुआ।

बोलखेडा (राजस्थान)- आचार्य श्री वसुनंदी महाराज के शिष्य मुनि श्री विजयानंद जी महाराज का समाधिमरण जम्बूद्वीप तपोस्थली बोलखेडा कांमा राजस्थान में 20 जनवरी 2024 को हुआ।

जयपुर- आचार्य चैत्यसागर महाराज जी की शिष्या आर्यिका अनुप्रेक्षामति माताजी का समाधिमरण जयपुर राजस्थान में 21 जनवरी 2024 को प्रातः 5.11 बजे हुआ।

कटनी- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी की शिष्या आर्यिका श्री संगतमति माताजी का समाधिमरण श्री दिगम्बर जैन मंदिर कटनी (म.प्र.) में 22 जनवरी 2024 हुआ।

जुरहरा (राजस्थान)- आचार्य श्री वसुनंदी महाराज जी की शिष्या आर्यिका श्री पद्मनंदिनी माताजी का समाधिमरण श्री दिगम्बर जैन मंदिर जुरहरा राजस्थान में 23 जनवरी 2024 को हुआ।

सम्मेदशिखर जी- आचार्य श्री सुनीलसागर महाराज जी के शिष्य मुनि श्री सुदेयसागर जी महाराज का समाधिमरण श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र निहारिका मधुवन सम्मेद शिखर में 25 जनवरी 2024 को हुआ।

लोक सेवा आयोग 2019 में जैन समाज के 25 विद्यार्थियों का चयन

इंदौर - मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग 2019 में जैन समाज के कल्पेश सिंघई, अनामिका जैन, रूचि जैन, प्रतिमा जैन, धनश्री जैन, अमित जैन, श्रृष्टि जैन, सम्यक जैन, पियुष जैन, प्रांची जैन, सौरभ जैन, रिया जैन, अनिषा जैन, सुचि जैन, विक्रांत जैन, यश जैन, वर्धमान जैन, बाहुबलि जैन, निधि जैन, पुलकित जैन, अंकित जैन, श्रृद्धा जैन, रूपाली जैन, पंकज जैन, शशांक जैन इन 25 बच्चों का चयन हुआ। संस्कार सागर परिवार एवं पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, श्री दिगम्बर जैन युवक संघ की और से सभी को बहुत-बहुत शुभकामनायें।

प्रतिष्ठाचार्य पंडित श्री गुलाबचंद पुष्प का जन्म शताब्दी वर्ष तथा आठवीं समाधिदिवस एवं विनयांजलि कार्यक्रम सम्पन्न

इंदौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर में 5 जनवरी 2024 को प्रतिष्ठा पितामह पंडित श्री गुलाबचंद जी पुष्प का आठवां समाधिदिवस पर नवागढ़ के अरनाथ भगवान का विधान एवं श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई तथा देश के कई स्थानों पर श्रृद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ। ऑनलाईन जन्म शताब्दी वर्ष पर डॉ. श्रेयांस कुमार जी बड़ौत, अध्यक्ष भारत वर्षीय शास्त्री परिषद की अध्यक्षा में तथा ब्र. जयकुमार जी निशांत टीकमगढ महामंत्री भारत वर्षीय शास्त्री परिषद् के निर्देशन में जीवन संस्मरण एवं विनयांजलि कार्यक्रम हुआ जिसमें विशेष विद्वान की उपस्थिति डॉ. शीतलचंद जी जयपुर, डॉ. फूलचंद प्रेमी वाराणसी, डॉ. जयकुमार मुजफ्फरनगर, डॉ. अनुपम जैन इंदौर, डॉ. सुरेन्द्र भारती बुरहानपुर, डॉ. नरेन्द्र जैन टीकमगढ, ब्र. जिनेश मलैया इंदौर, पं. विनोद कुमार रजवांस, डॉ. हरिशचंद्र शास्त्री मुरैना सागर, पं. पवन दीवान मुरैना सागर, डॉ. नीलम जैन पुणे, डॉ. ज्योति जैन खतौली, श्रीमती अर्चना पम्मी, राजेन्द्र महावीर सनावद, प्राचार्य डॉ. अमित आकाश वाराणसी, डॉ. सुनील संचय ललितपुर, डॉ. पंकज शास्त्री भोपाल, डॉ. आशीष आचार्य सागर, डॉ. सोनम शास्त्री दिल्ली, पं. प्रद्युमन शास्त्री जयपुर, डॉ. मुकेश विमल इंदौर, डॉ. आशीष शास्त्री बम्होरी दमोह, डॉ. आशीष जैन दमोह, मुख्य विशेष अतिथि -मा. प्रदीप जैन आदित्य, पूर्व केन्द्रीय मंत्री भारत सरकार- डॉ. मणीन्द्र जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष दिगंबर जैन महासमिति - श्री जमनालाल हपावत, राष्ट्रीय अध्यक्ष ग्लोबल महासभा- विनीता जैन, डिप्टी कलेक्टर ग्वालियर- श्री चंद्रेश जैन, संभागीय डाक अधिकारी ग्वालियर- एड. कमलेन्द्र जैन सागर, राष्ट्रीय मंत्री जैन मिलन- श्री अरुण चंदेरिया, क्षेत्रीय अध्यक्ष जैन मिलन- श्री वीरचंद्र जैन नैकोरा, महामंत्री तीर्थक्षेत्र नवागढ़- डॉ. भरत जैन गुढ़ा, समन्वयक- डॉ. प्रदीप जैन छतरपुर, संयोजन- डॉ. सुनील संचय ललितपुर ने किया। इसमें डॉ. उत्तमचंद जी छिंदवाडा, इंजि अभिषेक जैन इंदौर आदि ने अपने विचार रखते हुये श्रृद्धांजलि समर्पित थे।

निःशुल्क चिकित्सा शिविर

नवागढ़- आगामी 11 फरवरी को पुष्प परिवार द्वारा निःशुल्क चिकित्सा निदान शिविर प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ में आयोजित किया जा रहा है। जिसमें हृदय, त्वचा, नेत्र एवं सामान्य रोगों के निदान हेतु विशेषज्ञ चिकित्सकों की उपस्थिति होगी नेत्र रोगियों की आंखों के ऑपरेशन भी निःशुल्क किये जायेंगे।

वर्ग पहेली 292

1		2	3	■	4		5	6
	■	7				■	8	
	■	9		■	10	11		■
12	13		■	14			■	15
16		■	17		■	18	19	
■		■	20		■	■	21	
22		■	23		24	■	■	■
	■	25	■	■	26	27		28
29			■	30			■	

बाये से दाये

1. ऋतुओं का राजा, बसंत ऋतु -4
4. भगवान ऋषभदेव की माता का नाम -4
7. आंदोलन -4
8. सिर, बाण -2
9. सांख्य धर्म प्रसिद्ध ग्रंथ जिसको केन्द्र में श्रीकृष्ण और अर्जुन है -2
10. विलोरना मथानी घुमाने की क्रिया -3
12. पति का छोटा भाई -3
14. नयन पुट -3
16. वरदान, दूल्हा -2
17. कमल, नीरज -2
19. भौजना नापतौल करना -2
20. ब्राह्मण -2
21. इदं, अयं -2
22. घमंड, अहंकार -2
23. तीन भुजा वाला आकार -3
26. फहराना, फरकाना -4
29. कृत्रिम नदी, पानी बहने वाला स्थान -3
30. दृष्टि -3

ऊपर से नीचे

1. प्रथम तीर्थंकर जैन धर्म के -4
2. पथिक, -4
3. चेतना रहित, जड़ तत्व -3
4. महीन कपड़ा -4
5. उपदेश, वाणी -3
6. भगवान महावी का एक नाम, बाड्डुर -2
11. थकावट का भाव -3
13. वट वृक्ष का नाम -4
14. जैन धर्म के 6वें तीर्थंकर का नाम -4
15. शरण -3
17. शुद्ध, पाक साफ -3
24. कमल, पंकज, नीरज -3
25. मकान, हाउस -2
27. प्रत्येक -2
28. रिस्ता, संबंध -2

वर्ग पहेली 291 का हल

1 उ	त्त	र	2 पु	3 रा	4 ण	■	5 दा	6 ग
त्त	■	■	7 रा	ह	त	■	8 ग	त
9 रा	10 मा	य	ण	■	■	11 ज	न	■
12 य	म	■	■	3 क	म	ल	■	14 र
15 न	ला	■	■	ह	■	■	16 प	ग
■	■	■	17 न	र	18 क	■	त	■
19 सु	20 भ	ग	■	■	21 र	त	न	■
22 ग	ज	■	23 प	24 र	त	■	■	25 आ
26 त	न	■	27 द	बा	व	■	28 पा	श

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

कोई रंग जन्मे

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याण विधि-विधान सामग्री एवं हाथी स्वर्ण रथ आदि एक ही स्थान पर उपलब्ध

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर में गिफ्ट आयटम उपलब्ध हैं जिनमें घड़ी, शील्ड, पेन, बैग, बेंच, आदि सामग्री तथा पंचकल्याणक, पूजन, विधान, शिलान्यास, गृह प्रवेश, गृह शुद्धि, शिविर आदि की सम्पूर्ण सामग्री एक साथ उपलब्ध रहती है। जैसे स्वर्ण शिला, रजत, ताम्रशिला, कील, कलश, पंचरत्न, स्वस्तिक, हार, मुकुट, कंठी, स्वागत पट्टे, पचरंगी झंडे, अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य, पंचमेरू, पांडुक शिला, कलश, मंगल कलश, शिखर कलश, ध्वज दंड, दीपक बाक्स, दीपक चंदोवा, पलासना, छत्र, चमर, भामंडल, सिंहासन, वंदनवार, धोती-दुपट्टा, सभी विधानों के मांडने धातु में एवं फ्लेक्स में उपलब्ध है।

विभिन्न आकर्षक डिजाइनों में स्वर्ण कलश, रजत कलश (ओरिजनल चाँदी), रत्न कलश आदि जो एक्रेलिक बॉक्स स्टैण्ड के साथ उपलब्ध हैं। जो काले नहीं पड़ेंगे एवं तीन का सेट होने के बावजूद बिखरेंगे नहीं। चातुर्मास कलश का समय पर आर्डर करने पर बॉक्स के नीचे साधु के नाम, कौन सा चातुर्मास, स्थान, आयोजक आदि का नाम भी लिखवाया जा सकता है। तथा इन्दौर से सभी जगह के लिए बस सुविधा उपलब्ध हैं। जिसके द्वारा आप अपना आर्डर मंगवा सकते हैं।

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 28/01/24, पोस्टिंग दिनांक : 03/02/2024